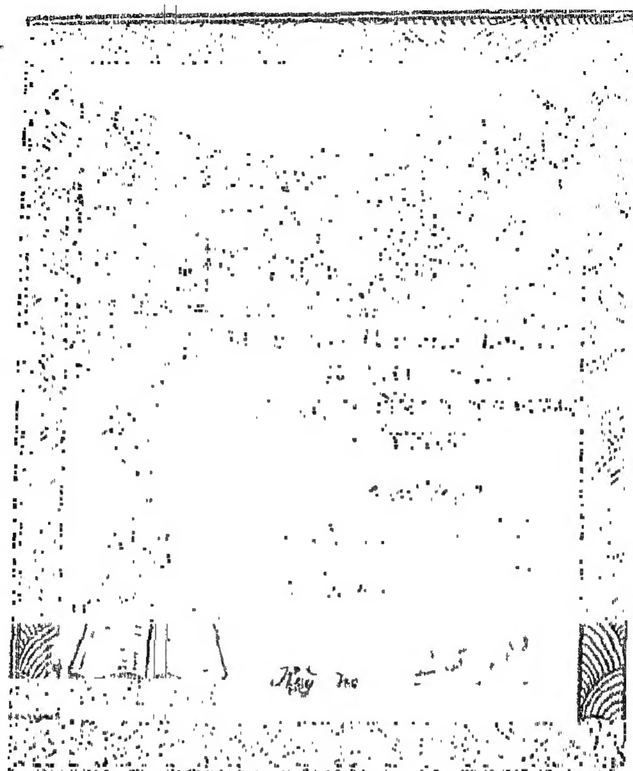


उलूक-तन्त्र

(हास्यरसकी कहानियोंका संग्रह)

लेखक

बलदेवप्रसाद मिश्र

प्रकाशक



१९३७ [मूल्य १॥=)

मुद्रक—महताबराय, ज्ञानमण्डल यंत्रालय, कबीर चौरा, काशी ।

दो शब्द

इस पुस्तकका अन्तिम कथा मेरी 'भूमिका'के लिए छपनेसे वंचित कर दिया गया, यह निश्चय जान मुझे जब बताया गया तब 'दो शब्द' लिखना मैंने उचित ही समझा।

इस संग्रहमें सात कहानियाँ हैं जिनमेंसे प्रथम तीन और पाँचवीं सन् १९४५ के दिसम्बरके अन्तिम सप्ताहमें, छठी सन् १९४६ के जुलाई महीनेमें, चौथी गत होलीके कुछ पहले और अन्तिम दो महीने पहले लिखी गयी थीं। प्रथम, चतुर्थ और षष्ठ कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रथम दो 'संसार' में और तीसरी 'आज' में।

ये कहानियाँ सम्भवतः हास्य-प्रधान कही जायँगी। कुछ सज्जनोंने—जिनमें कभी कोशमें न दिखनेवाले तथा अनधिकारावतार भी हैं—हास्यरस-के विषयमें संस्कृतके आचार्योंका विवेचन, अपनी हिन्दीमें सजा कर तथा अपने 'मौलिक' विचारोंके पैबन्द लगाकर, बहुत बार छपवा लिया है और इस प्रकार जन-साधारणके अज्ञानको और अपनेको कृतकृत्य किया है। यह काम कर देनेके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

कुछ दिनों पहले कहीं कुछ कहानी-लेखकों का सम्मेलन हुआ था। सुना है कि वहाँ लेखकोंने कहानीकी कलाके विषयमें अपने निजी विचार व्यक्त किये, 'सुझाव' पेश किये और उनकी पुष्टिमें अपनी पूरी कहानियाँ बाँच डालीं और उनकी विशेषताएँ श्रोताओंके मस्तिष्कोंमें,

कर्ण-कुहरोंके मार्गसे, ठेल दीं।......मेरी ये कहानियाँ कैसी हैं, इस-पर विचारके व्याजसे मैं अपने पाठकोंके मस्तिष्कके साथ वैसा व्यवहार न कर सकूँगा। कारण, ये कहानियाँ ठीक-ठीक कहानियाँ भी हैं कि नहीं, मैं इसी विषयमें सन्दिग्ध हूँ। मैंने जो कुछ लिखा है, वह क्या है, इसके निर्णयके लिए ही मैं पाठकोंका मुखापेक्षी हूँ। वे जो कुछ कहें, वही मान लेनेके लिए मैं विवश हूँ। पर मेरी विवशतासे आर्द्र होकर कोई पाठक अपने हृदयके साथ अन्याय न करे। वह न्यायपर आरूढ़ रहे, तभी मुझे सुख प्राप्त होगा।

प्रूफकी त्रुटियोंके लिए प्रकाशक ही दायी होता है, यह सिद्धान्त ईश्वरकी तरह सत्य है, यद्यपि पुस्तकका अन्तिम प्रूफ मैंने भी देखा है; और इसीलिए 'चश्मदीद' गवाह हूँ कि कोई मर्मन्तुद त्रुटि मेरे देखनेमें न आयी।

—लेखक

विषय-सूची

उलूकतन्त्र

वह महीना था जिसमें एक विशिष्ट देवीके वाहन मोटे होते हैं। स्वर्गमें उर्वशीके घरमें किसी पुण्यात्माने प्रवेश किया था और प्रसन्नतामें बाहर एक विराट् अनारमें आग लगवा दी थी। अग्निकी फुलझड़ियाँ पृथ्वीतक आ रही थीं।······दूसरेके सुखसे दुःखी होना मानव धर्म है। पृथ्वीके मानव अत्यन्त दुःखी थे, दुःखके मारे पसीने-पसीने हो गये थे और सर्वत्र इस कष्टकी ही चर्चा थी। अखबारोंमें वह कष्ट डिग्रियोंमें नापकर छापा जा रहा था। एक [illegible] सम्पूर्ण [illegible] उक्त कष्ट-गाथा छापनेमें इतने तल्लीन थे [illegible] की सेवापर छोड़ दिया था।

घड़ियोंकी सूइयाँ [illegible] दे रही थीं, जिसे शास्त्रोंने श्राद्धके लिए प्रशस्त [illegible] दलाल [illegible] वेला' कहते हैं।

सड़कोंके चौराहोंके (पुलिसके) सिपाही किसी पान या शरबतकी दुकानपर आ बैठे थे [illegible] रहे थे कि [illegible] भिन्न [illegible] अमुक [illegible] आदमी था और [illegible] प्रकार [illegible] उनकी [illegible] फिर [illegible] थीं।······ [illegible] आ रहे थे; कोई [illegible]

कवि कदाचित् स्वर्ग और नरककी दुमुहानीपर पहुँचकर किसी अज्ञात प्रियतमकी स्मृतिमें, वहीं बैठ पड़ा था और लम्बी-लम्बी साँस ले रहा था। इस समय सड़कोंपर डाक्टरोंकी मूक कृतज्ञताके भारसे दबे वे जीव दिखलायी पड़ रहे थे, जिन्हें सनातनधर्मी अपने पितरोंके नामपर लोहेके गरम त्रिशूलसे दागकर, उनके पालन-पोषणके भारसे छुटकारा पा जाते हैं; और वे जीव दिखलायी पड़ रहे थे जो जनताके कानूनके शासनके अज्ञानका भार प्रसन्नता-पूर्वक ढोनेके लिए, सरकारसे लाइसेंस प्राप्त कर, सरकारकी ही स्थापित कल्लहौ [illegible] प्रतिदिन जाया करते हैं। इस संस्थाका लाभ [illegible] है कि सरकारने उन जीवोंको अन्य व्यवसाय करनेसे रोक दिया है। कम-से-कम इतने अंशमें सरकार साम्यवादकी पोषिका अवश्य है।

[illegible] अर्थात् शहर बनारसमें अनेक घटनाएँ ऐसी हो चुकी हैं जो और कहीं नहीं हुईं—तुलसीदासजीको यहीं क्लेश हुआ, राजा चेतसिंह एक खिड़कीसे गंगाजीमें कूदे, भारतेन्दु हरिश्चन्द्रने प्रौढ़ावस्थामें ही संसारकी असारता सिद्ध कर दी और उनके मसालचीने [illegible] हाथ [illegible]; अनेक घटनाएँ ऐसी हो रही हैं जो कहीं नहीं हो रही हैं—क्योंकि प्रकाशकोंको जितना कागज सरकारसे मिल रहा है, उससे बहुत अधिक कागजपर वे पुस्तकें छापते जा रहे हैं; कालेजोंके प्रोफेसर अवकाश लेकर कीर्तन कर रहे हैं; ब्राह्मणोंके पठन-पाठनकी देख-रेख शूद्र कर रहे हैं;—अनेक घटनाएँ न होंगी—महामहोपाध्यायोंके वंशधर संस्कृत न पढ़ेंगे, [illegible] न निकलेंगे, [illegible] न [illegible], [illegible] न होगी, मन्दिरोंमें [illegible] निषेध न होगा, सरकार द्वारा किसी प्रबन्धककी नियुक्ति न होनेसे यहाँ मन्दिरोंका प्रबन्ध सुचारु रूपसे न हो सकेगा और प्रबन्धक [illegible] बिना [illegible] मन्दिरोंमें [illegible] प्रवेश न कर सकेंगे;

इस प्रकार घटना-घटाटोपोंसे मण्डित काशीको छोड़कर अन्यत्र जाना अत्यन्त अनुचित ज्ञात होता है—विशेषतः जब लोग बड़ी-बड़ी दूरसे, पैसा खर्च करके, मरनेतकके लिए यहाँ आते हैं।

अतः यह घटना भी काशीकी ही है; उसी काशीकी, जहाँकी हवा भी आँखोंमें धूल झोंकनेमें पटु है, जहाँके दूकानदार भी अपने ग्राहकोंको दो-चार पैसोंकी माया छोड़नेको कहकर उन्हें ब्रह्मज्ञानके राजमार्गपर बलात् ढकेल देते हैं, जहाँके बगलबन्दी पहननेवाले ब्रह्मज्ञानी पण्डित भी लखनऊ और दिल्लीके चुनाव-दङ्गलोंमें गोखुर-प्रमाण नोटों [illegible] उतर पड़ते हैं, जहाँके——पर जाने दीजिये, इसी काशीसे अभी काम पड़ता है।

सो, इसी काशीकी गंगाजीके एक घाटके ऊपरवाली एक गलीके एक मकानके— पर आप इस ओर से ऊब गये होंगे, अतः पहले गलीकी बात समाप्त कर ली जाय। गलीका नाम वैसा ही लम्बा-चौड़ा था जैसा बिहारके आन्दोलनोंका होता है। इसके नामसे वैसी ही ध्वनियाँ निकलती थीं, जैसी जनतासे निकलती हैं। नामसे यह ज्ञात होता था कि पहले यहाँ [illegible] और एक दिन रातको १० बजे उन्होंने अपने सेवकोंको तलवारोंका मोरचा छुड़वानेकी आज्ञा दी। सेवक तलवार लेकर गलीमें उतर पड़े और आने-जानेवालोंकी मूँछों और खूनसे मोरचा छुड़ाने लगे। जब गलीवालोंने यहाँ आना बन्द कर दिया और मोरचा [illegible] [illegible] आपसहीमें, एक दूसरे पर [illegible] [illegible] कदाचित् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मनोविनोद [illegible]

और उनकी मिठाई तथा मलाई छीन लेते थे। कहा जाता है कि काशीमें बिजली लगनेके पहलेतक उस गलीमें ये बातें होती थीं।

इसी गलीके एक मकानकी बात है। मकानका सिंह-द्वार—सिंहोंसे इस द्वारका कोई सम्बन्ध न था। न उसमें कभी सिंह नामके आदमी बँधे थे न जानवर। इसलिए आप निःशंक होकर उसमें प्रवेश करें—उस दिशामें था जिसमें भगवान्के एक भीषण भक्तने अपनी भाभीकी भृकुटिसे शासित होकर अपनी प्रजाका शासन किया था। तात्पर्य श्रीमान् महाराज विभीषणसे है।

सिंह-द्वारसे घुसते ही दाहिने हाथ एक २॥ हाथ ऊँचा दरवाजा था। उससे लगी सीढ़ियाँ एक तहखानेमें चली गयी थीं। दरवाजेपर अलकतरेसे मोटे अक्षरोंमें लिखा था—'सिद्धोंकी सराय'।

१२ हाथ लम्बे, ४ हाथ चौड़े और ४॥ हाथ ऊँचे उस तहखानेमें उस समय चार सिद्ध बैठे थे।

तहखानेकी दीवारें [illegible] पोती हुई थीं और गेरूसे सर्वत्र राम राम लिखा हुआ था। [illegible] कुछ लिखनेकी जरूरत नहीं समझी गयी थी। ६-७ गावतकिये, १ [illegible] १ गिलास, शतरंज, ताश, दरी, हाथभरका चौकोर एवं मोटा एक टुकड़ा तथा १६ कौड़ियाँ भी सरायकी सम्पत्ति थी।

सिद्धोंके नाम थे—खेमटा तिवारी, चन्दनसिंह, कद्दूगुरु और वृन्दावनविहारी श्रीवास्तव।

इन सज्जनोंको आप न जानते होंगे क्योंकि ये [illegible] तरह आत्म-प्रचार नहीं करते। ये अपनी किसी कृतिको बार बार नहीं सुनाते। इस सम्बन्धमें ये हिन्दीके उन कवियोंसे अलग हैं। [illegible]

हैं जिन्होंने अपने जीवनमें एक ही कविता लिखी है और उसे ही सर्वत्र सुनाया करते हैं।

खेमटा तिवारी गृहस्वामी और 'सिद्धोंकी सराय' के संस्थापक हैं। उनके पिताकी अन्तिम इच्छा एक धर्मशाला बनवानेकी थी। उसीकी इन्होंने इस रूपमें पूर्ति की है। तिवारीजी एक ही बात बार-बार कहा करते हैं। वह यह कि बाल्यकालमें स्वास्थ्यके किन नियमोंका पालन न करनेसे उनके उदरमें वायुने अड्डा जमा लिया है और किस-किस समय वह उच्छृङ्खल होकर किस-किस दिशामें दौड़ती है। तिवारीजी भूत-प्रेत नहीं मानते, पर ४९ तरहकी वायुका अस्तित्व स्वीकार करते हैं।

चन्दनसिंहके बायें हाथमें भी इतनी शक्ति है कि वे आपका मुँह काला कर दें या आपको पङ्गु कर दें या आपके अङ्गोंको इतना विकृत कर दें कि आपको कर्ज देनेवाला काबुली भी आपको न पहचान सके। अर्थात् वे चित्रकार हैं। उन्होंने चित्रोंद्वारा अलिफलैला, [illegible] आदिका अनुवाद किया है जो मूलसे भी उत्तम है। उनका कथन है कि रंगोंकी विविधता और चौखटेपर ही चित्रकी सफलता अवलम्बित होती है।

[illegible] गुरु तान्त्रिक हैं। काव्य प्रकाश पढ़नेसे पहले जैसे सब शास्त्रोंकी एक एक पोथी [illegible] अनिवार्य होता है, वैसे ही तान्त्रिक होनेके लिए भी अनेक कलाओंका ज्ञान आवश्यक होता है। तान्त्रिक होनेके पहले ज्योतिष, हस्तरेखा, रमल, पिंगल और [illegible] शास्त्रोंकी [illegible], तथा भगवद्गीता, [illegible] और वात्स्यायनकृत [illegible] विशिष्ट ज्ञान आवश्यक होता है। (यह [illegible] गुरु एकान्तमें कहा करते हैं।) जो हो, [illegible] गुरु तान्त्रिक हैं, अतः तान्त्रिक होनेके लिए जिन गुणोंकी आवश्यकता होती होगी, वे सब उनमें हैं; हम यह मान सकते हैं।

वृन्दावनविहारी श्रीवास्तव वस्तुतः क्या हैं—हम नहीं कह सकते । पर, सिद्धोंकी सरायके वे उच्चकोटिके सदस्य हैं, अतः उनकी असाधारणतामें सन्देह नहीं । इनकी ब्राह्मणोंपर विशेष आस्था है, विशेषतः एक घटनाके बादसे । वह घटना इस प्रकार है—पर उसे जाननेके पहले यह जान लीजिये कि तभीसे उन्होंने ब्राह्मणोंके सम्पर्कमें जीवन बितानेका नियम कर लिया है ।

हाँ, तो वह घटना इस प्रकार है । तब श्रीवास्तवजीकी पत्नी जीवित थीं । उन्हींके कारण वह घटना भी हुई थी । सभी बड़ी घटनाएँ स्त्रियोंके ही कारण हुई हैं ।

श्रीवास्तवजीकी पत्नीने उन्हें बुलाकर लानेको कहा था ; कई दिनोंसे कह रही थीं । एक दिन रातको ११ बजे उसीकी चर्चा चली । उनकी पत्नीने उसी समय लानेको कहा ; उन्हें दस आने पैसे दिये और उन्हें गलीमें खड़ा करके, पक्का दरवाजा बन्द कर दिया—माघ महीना था ; आकाश में बादल थे—अत्यन्त परोपकारी, पर-जन्य ! उन्होंने अपने प्राणोंकी परवाह न कर अपना जीवन बहाना प्रारम्भ कर दिया और सभी गौरीशंकर (पाठकोंकी सुविधाके लिए उसका अंगरेजी नाम दिया जाता है—माउण्ट एवरेस्ट) पर खड़ा मेघ आकुल होकर सहसा उस शहरपर झुक आया । उस समय कुत्ते रोने लगे, पेड़ोंपर बैठे कौओंने पङ्ख फड़फड़ाये और पङ्खोंको दृढ़ कर लिया और श्रीवास्तवजीके घरसे गलीमें फेंका कूड़ा—जिसमें अण्डोंके छिलकों और प्याजकी कतरी नलोंकी [illegible] थी—उड़कर उनके मुँहपर आने लगा ।

श्रीवास्तवजी खड़े-खड़े आगे-पीछे हिलने लगे जैसे महाराज राम-चन्द्रजीका बाण लगनेपर स्वर्णमृग हिला होगा । वे यह विचार कर रहे थे कि सम्भवतः हिन्दू धर्मशास्त्रकारोंको स्त्री-चरित्रका उतना ज्ञान न

था जितना तुलसीदासजीको था । पर, तुलसीदास धर्मशास्त्री नहीं—अतः श्रीवास्तवजी—'ये सब ताड़नके अधिकारी' को पूर्ण सत्य और आवश्यक मानते हुए भी तदनुसार काम करनेमें झिझके और अन्तमें उसी तेजीसे आगे बढ़े, जिस तेजीसे गङ्गाके उस पारकी हँड़िया आँधीके वेगसे लुढ़क चलती है । पर, वृन्दावनविहारीजीका लक्ष्य निर्दिष्ट था । वे गुलाबको दूकानोंकी ओर बढ़ रहे थे ।

दूकानें बन्द हो गयी थीं, केवल एक दूकानदार ताले बन्द कर रहा था । श्रीवास्तवजी उसके पास पहुँचे और [illegible] गुलाब दे देनेको कहा, जिस आजिजीसे [illegible] कहते हैं ।

दूकानदारने एकबार उनकी ओर देखा, वे उस समय ऐसे खड़े थे जैसे तपोभङ्गके बाद और उसका फल प्रकट होनेके पहले महर्षि विश्वामित्र मेनकाके सामने खड़े हुए थे । तब दूकानदार पुनः अपने काममें लग गया । श्रीवास्तवजीने उससे यह कहना प्रारम्भ किया कि गुलाब न मिलनेसे संसारमें किन किन विपत्तियोंकी आशंका हो सकती है । उन्हें विश्वास था कि उन आपत्तियोंमें से न कोई ताली बनकर दूकानदारके दिलका ताला खोल देगी और तब उसकी तालियाँ दूकानके ताले खोल देंगी ।

ताले बन्द करते करते दूकानदारने जो कुछ कहा उससे उनका यह सन्देह प्रकट हुआ कि श्रीवास्तवजी किसी स्थान विशेषसे निकाल दिये गये हैं ।

ताले बन्द कर, बही हाथमें लेकर, दूकानदार श्रीवास्तवजीकी ओर घूमा और उनसे अति निकट अपनेको स्थापित कर कहा—बेटा, इस समय किसी धर्मशालामें जाकर सो जाओ । पेटमें भूख हो तो सवेरे आना ; ऐसी गुलाब दूँगा कि बाईजीकी तबीयत खुश हो जायगी ।

दूकानदारके चले जानेके बाद श्रीवास्तवजी उस भगवानको कोसने लगे जिसने दुनियामें गधों और उल्लुओंको पैदा किया है और उनकी बुद्धि आदमियोंको दे दी है ।

वहाँसे श्रीवास्तवजी बासी नीराकी दूकानपर पहुँचे । उन्होंने उस सरकारकी दूरदर्शिताकी प्रशंसा की जिसने इन दुकानोंको शामहीसे बन्द न होनेकी आज्ञा दे रखी है । प्याजकी गरमागरम पकौड़ियोंका पुट देकर, नीराके दो कुल्हड़ चढ़ाकर जब श्रीवास्तवजी यहाँसे बाहर निकले, तब उनकी बुद्धिपरसे मायाका आवरण खिसक गया था—उन्हें धर्मशाला और सड़ककी पटरीमें कोई अन्तर प्रतीत न होता था । उन्होंने पहले एक दूकानके तख्तेके एक अंशपर आसन जमाया और धीरे धीरे पूरे तख्तेपर दखल कर लिया—वे उस समय इस घटनाकी अंग्रेजोंके भारतपर कब्जा करनेकी घटनासे तुलना कर रहे थे । वे धर्मशालामें नहीं गये, पर यह समझ गये कि लोग धर्मशालाएँ क्यों बनवाते हैं । उसी समय उन्होंने कभी घर न जानेका निश्चय किया और जीवन-भर बिना पैसे खर्च किये भोजन प्राप्त करनेका प्रकार भी सोच लिया ।

दूसरे दिन ११ बजे एक [illegible] एक [illegible] आदमीने एक भयानक अत्याचार किया । उसमें एक [illegible] [illegible] । उसने एक आदमीको [illegible] मकानके दरवाजेके भीतरसे एक गलीमें [illegible] मारकर और साथ ही अर्द्धचन्द्र देकर इस प्रकार झोंक दिया कि वह घुटनों और कुहनियोंके बल जमीनपर बहुत देर बैठा रह गया ।

कुछ देर बाद वह आदमी उठकर खड़ा हुआ, उसने अपने चारों ओरके लोगोंको देखा, अपने कपड़े झाड़े और [illegible] [illegible] शान्तिसे कहा— इस तरह धक्का-मुक्की करके पिण्ड नहीं छूटेगा । [illegible] है सो अदा करना होगा !

ब्राह्मणदेव चकित होकर उस आदमीका मुँह देखने लगे और वह अर्थात् श्रीवास्तवजी गम्भीर गतिसे आगे बढ़े । चलते-चलते श्रीवास्तवजीकी ब्राह्मणोंपर बहुत श्रद्धा हुई । उसका कारण है । श्रीवास्तवजीने दो दिनों पहले जापानी जुजुत्सूके बारेमें पढ़ा था । वह लेख उस विषयका भारतमें प्रथम था । उन्होंने सोचा कि ब्राह्मण विलायत जाते नहीं और दो दिनोंमें ही ब्राह्मणोंमें जुजुत्सूका इतना प्रचार होना भी असम्भव है; अतः जापानियोंने ही इन ब्राह्मणोंकी किसी पोथीसे उसे सीखा ! ये ब्राह्मण तो भयंकर हैं ! जितनी शीघ्रतासे और जितनी दूर रहकर उस ब्राह्मणने श्रीवास्तवजीको गली सुँघा दी थी, वह जुजुत्सूकी ही करामात थी—इसका श्रीवास्तवजीको निश्चय था ।

तो, सिद्धोंकी सरायमें चार सिद्ध बैठे थे । क्षेमटा तिवारीने क्रुद्ध स्वरमें कहा— देखो कद्दू गुरू ! तुम मेरे घरमें उल्लू लाये हो, यह अच्छी बात नहीं है !

आलमारीमें, लोहेके पिंजड़ेमें तीन बित्ता ऊँचा एक उल्लू बैठा था ।

कद्दू गुरु एक गावतकियेके सहारे बैठे हुए थे । उसी अवस्थामें रहकर और सिगरेटका एक लम्बा कश खींचकर धुएँको नाकसे निकालते हुए, वे ही-ही करके हँस पड़े और उठ [illegible] बैठे । उनका सिर प्रायः पगड़ीसे ढक गया और दोनों [illegible] उनका मुँह बिल्कुल छिपा लिया ।

हँसीका वेग समाप्त होनेपर उन्होंने पूछा— तुम्हारे मकानमें तो [illegible] उल्लू, मतलब यह कि बहुत दिनोंसे एक उल्लू रहता है । फिर और एक [illegible] [illegible] क्यों ?

क्षेमटा तिवारीने कहा— देखो, दिल्लगी दिल्लगीकी जगह होती है; तुम्हीं कहो, यह असगुनका रूप नहीं है ?

चन्दनसिंहने कहा—जो हो, पर इतना बड़ा उल्लू नहीं देखा था कद्दू गुरू ! मैं इसका फोटो बनाऊँगा, तुम उसके साथ रहोगे ।

श्रीवास्तवने पूछा—कहाँसे लाये कद्दू गुरु ?

कद्दू गुरुने कहा—विन्ध्याचलके घनघोर जङ्गलोंसे मँगवाया है। बरसोंसे इसके फेरमें था ।

श्रीवास्तवने पूछा—आखिर इसका करोगे क्या ।

खेमटाने कहा—करेगा क्या ! अरे, इसकी बुद्धि उल्लुओं-जैसी हो गयी है ।

कद्दू गुरुने कहा—इसका एक गुन जानते हो ? इसे एकान्तमें रखकर इसके सामने किसीका नाम लो और फिर वह दूसरा नाम न सुनने पाये । तब यह उल्लू वही नाम अपने मनमें कहता रहेगा और ६ महीनेके भीतर वह आदमी मर जायगा । समझे खेमटा तिवारी ?

खेमटा तिवारीने बहुत क्रुद्ध-दृष्टिसे कद्दू गुरुको देखा और दौड़कर तहखानेके दरवाजेपर पहुँचे और बाहर झाँकने लगे । सामने ही उल्लू था । वह स्थिर नेत्रोंसे तिवारीको देखने लगा । खेमटा तिवारी चिल्लाये—गुरू ! कद्दू गुरू !

कद्दू गुरुने कहा—आदमी हो कि उल्लू ! क्या कहते हो ? यहाँ आकर क्यों नहीं कहते ?

खेमटा तिवारी निश्चिन्ततासे आकर बैठ गये और श्रीवास्तवकी जेबमें हाथ डालकर सिगरेटका पैकेट निकाला ।

कद्दू गुरुने पूछा—क्या कहते थे ?

तिवारीने कहा—कुछ तो नहीं ! मैं तो उल्लूको तुम्हारा नाम सुना रहा था क्योंकि वह मेरा नाम सुन चुका था ।

कद्दू गुरुने मुस्कराकर कहा—मैं तान्त्रिक हूँ। उसका उपाय कर लूँगा।

श्रीवास्तवने कहा—कद्दू गुरु ! यह उल्लू मुझे दे दो।

चित्रकारने कहा—तुम क्या करोगे ! जिसके सामने १५ दिन खड़े हो जाओ, वही मर जाय।

तिवारीने कहा—कद्दू गुरु ! तुम झूठ बोलते हो ! उल्लू तुम दूसरे कामके लिए लाये हो। कुछ दिन पहले तुमने बापके नामपर साँड़ छोड़ा था, अब उल्लू छोड़ोगे। है न !

कद्दूने कहा—तुम तो गधे हो गधे ! नहीं तो तुम्हारा नाम तो भले आदमियों जैसा होता !

यहाँ एक बात और कह दी जाय। खेमटा तिवारीका कहना है कि 'खेमटा' मेरी कुल-देवी हैं, उन्हींके नामपर मेरा यह नाम है ; पर उनके शत्रुओंका कहना है कि उनके पिता सङ्गीतकी खेमटा नामक शाखासे बहुत चिढ़ते थे और एक दिन तिवारीपर नाराज होकर उन्होंने उसे खेमटा कहकर पुकारा। बस, तभीसे यही नाम प्रसिद्ध हो गया।

तिवारीने कहा—गधोंके सिरपरसे नीलकण्ठ उड़ाये जाते हैं, तुम....

कद्दूने कहा—तुम गधे हो ! लेकिन तुमको गधा कहना भी तुम्हारी [illegible] बढ़ाना है। गधे तो बहुत बुद्धिमान् होते हैं।

श्रीवास्तवने गम्भीरतासे कहा—जरूर होते होंगे ! तुम्हारे बाप इसीलिए तुम्हें अक्सर गधा कहते थे।

कद्दू गुरुने श्रीवास्तवकी बातपर जरा भी ध्यान न देते हुए कहा—गधे अत्यन्त बुद्धिमान् होते हैं। एक बार···

श्रीवास्तवने कद्दू गुरुको रोककर कहा—अब रुक जाओ। तुम जानते ही हो, मुझे [illegible] है। उसने इस वक्त आक्रमण किया है। इसे

न रोकनेसे ३–४ घंटोंके लिए मेरी आत्मा शरीरके बाहर निकल आती है, केवल साँस चलती रहती है।

श्रीवास्तवने अपनी जेबसे एक बोतल निकाली और चन्दनसिंहसे एक गिलास माँगा। चन्दनसिंह गिलास लाये तो तिवारीने उसे छीन लिया, कहा——तुम तो तिगनीके झंझ (अंधे) हो। वह दूसरा गिलास दो, जिस-पर चमार लिखा हुआ है।

श्रीवास्तवने गिलासमें बोतलका अर्क ढालते हुए कहा——कद्दू गुरू! यह खास तरहसे बनी है——अंगूरोंकी लताओंके कुञ्जमें, आधी रातको; और आधी रातको ही नावमें रखकर शहरमें और मकानके पिछले दर-वाजेसे भीतर लायी गयी; इसके बाद——

तान्त्रिकजी बोले——तिवारी! एक पुरवा तो दो!

पुरवा आनेपर तान्त्रिकजीने उसमें अर्क लिया, थोड़ा पानी मिलाया और अंगूठे एवं तर्जनी या मध्यमा उँगलीके सिरोंको जोड़कर उनसे पुरवेमें कुछ लिखनेका भाव दिखाने लगे। उस समय उनके ओठ भी हिल रहे थे। अन्तमें उन्होंने पुरवा उठाया, उसे सिरसे लगाया और कहा——परशुरामाय नमः।

दो घूँट पीकर कद्दू गुरुने कहा——एक बार एक प्रयोगमें मुझे गर्दभ-मूत्रकी आवश्यकता पड़ी। मैं अपने धोबीके यहाँ गया। उसने कहा——महराज! हम न देब, हमार गदहवा मर जाई।

तब मैं एक चौड़े मुँहका बरतन लेकर धोबी-घाटपर गया। वहाँ भी धोबिनोंने आपत्ति की। तंग आकर मैं एक गधेकी ओर बढ़ा। मुझे यह नहीं मालूम था कि गधेको पेशाब कैसे आता है। अतः चुप-चाप ही आगे बढ़ा। एकदम पास आकर बैठनेपर गधेने [illegible]; फिर और दुलत्तियाँ झाड़ीं। मेरा बरतन हाथसे छूटकर गंगाजीमें और आगे

लगा और मैं खटाखट सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। मेरे पीछे ४०—५० धोबी चले आ रहे थे। १००—१२५ सीढ़ियाँ चढ़कर मैं एक मठमें घुस गया। धोबियोंकी भीतर घुसनेकी हिम्मत न पड़ी।

श्रीवास्तवने पूछा—धोबियोंने शोरगुल नहीं किया?

कद्दू गुरुने कहा—उन लोगोंने जितना शोरगुल किया उससे मैं समझ गया कि इनके गधे इनसे बहुत अधिक शिष्ट और शान्त हैं। खैर, किसी तरह वे चले गये।

कई दिनों बाद मैंने एक गधा खरीदा और उसे रेवड़ी तालाबपर गफूरके मकानमें रखा।

तिवारीने कहा—यही बुद्धि पहले आ गयी होती तो अच्छा न होता।

कद्दू गुरुने कहा—उस गधेने वहाँ आते ही अनशन प्रारम्भ किया और पेशाब करना बन्द कर दिया। मैंने उसके चारों पैर चार खूँटोंमें बाँध दिये और [illegible] बाँध दिया। सात दिन बीत गये, सातोंमें न [illegible] पेशाब किया। [illegible] गफूरको दानकर चला आया। [illegible] गधे बड़े [illegible] होते हैं। मुझे तो प्रत्यक्ष अनुभव है।

चित्रकारने पूछा—तो तुम्हारे [illegible] प्रयोगका क्या हुआ?

कद्दू गुरुने कहा—[illegible] कारण सैकड़ों रुपयोंपर पानी फिर गया और महीनोंकी मेहनत बेकार हुई।

श्रीवास्तवने कहा—[illegible]! [illegible]। [illegible]

गुरुने कहा—[illegible]

[illegible] पैदा कर सकता हूँ। कैसे? राजा [illegible]सिंहके [illegible]

उनसे कहेंगे कि तान्त्रिक कद्दू गुरुके पास एक उल्लू है जो किसी आदमीके यहाँ एक महीना भी रह जाय तो उसकी लक्ष्मी स्थिर हो जाय। पुरोहितजी ही ५००) पर उनके यहाँ एक महीनेके लिए उल्लू रखना पक्का कर लेंगे। अब २००) पुरोहितजीके, ३००) मेरे। यह खबर सभी रईसोंको मिलेगी और सभीके यहाँ पारीसे यह उल्लू रहेगा।

तिवारीने कहा—रईसोंके यहाँ दस-पाँच उल्लू बने ही रहते हैं, इसे भी वहीं रख दो और तुम भी वहीं रहो; मुझे कोई आपत्ति नहीं, पर यहाँसे हटाओ। तुम लाये क्यों यहाँ ?

गुरुने कहा—हमारे घर, जानते ही हो, बच्चा हैं।

श्रीवास्तवने कहा—इसलिए इस उल्लूकी जरूरत नहीं थी।

गुरु बोले—तुम बड़े नीच हो। अरे, वे हंगामा खड़ा कर देते न !

तिवारीने कहा—तो मेरा ही मकान रॉंड़की झोपड़ी है ? अभी उल्लू सहित धता बाराठ (बिदा) होओ।

गुरुने कहा—सुनो, एक उलूक-तन्त्र होता है। वह दिवालीकी रातको किया जाता है। दिवालीकी रातसे चार हफ्ते पहले मृगशिरा नक्षत्रमें शनीचरके दिन उल्लू पकड़ा जाता है। तबसे दिवालीकी राततक उसे पाला जाता है। उसे खास ढंगका खाना खिलाया जाता है। दिवालीकी रातको उसका तान्त्रिक विधिसे पूजन होता है। पूजनके बाद वह बोलना आरम्भ करता है। वह धीरे-धीरे बोलता है।

तिवारीने पूछा—आदमीकी तरह ?

गुरु बोले—एकदम आदमीकी तरह नहीं, पर उसकी बात समझमें आती है। वह १०८ बातें बताता है। साधकको उन्हें लिखते जाना चाहिए। १०० बातें बतानेके बाद वह जल्दी जल्दी बोलता है। अन्तकी आठ बातें बहुत महत्वपूर्ण होती हैं, पर यदि वह आठों बातें कह जाय

तो साधकका सिर कटकर गिर पड़ता है। इसलिए ३-४ बातें सुननेके बाद ही उसकी गर्दन काट डालनी चाहिए।

श्रोता स्तब्ध हो गये। कुछ देर बाद श्रीवास्तवने पूछा—क्या बातें बताता है?

गुरुने कहा—वह यह बताता है कि मेरे किस अंगका क्या उपयोग है। जैसे, आँखोंको कई चीजोंमें पीसकर अञ्जन बना लिया जाय और उसे लगाया जाय तो जमीनमें गड़ा धन दिखायी पड़ने लगता है; पङ्खोंको और चोंचको पीसकर उसका धुआँ शरीरको दिया जाय तो आदमी अदृश्य हो जाता है।

श्रीवास्तवने कहा—कहे चलो, अभी तो दो ही बातें कहीं।

तिवारीने कहा—१०० के ऊपर हो जायँ तो सावधान रहना।

कद्दू गुरु चुप रहे। उन्होंने अब भैंसोंके आगे बीन न बजानेका निश्चय कर लिया था।

एकाएक श्रीवास्तवजी उठकर खड़े हो गये। शरीर झाड़कर उन्होंने कहा—गुरु! हर एक आदमीके होता है कि नहीं, पता नहीं; पर मेरे शरीरमें दो आत्माओंका वास होता है। एक साधारण आत्मा तो प्रायः हर समय रहती है। वह जब रहती है तब मैं साधारण काम करता हूँ, जैसे खाना-पीना, सोना, तुम्हारे साथ मजाक करना, [illegible] रखना और [illegible] या सैर किया करते हैं, आदि। पर कभी-कभी मेरे शरीरमें वह साधारण आत्मा चली जाती है और असाधारण आत्मा आ जाती है। एकबार ऐसे ही [illegible] मैंने विवाहके [illegible] वर्ष बाद [illegible] अपनी पत्नीका [illegible] ही [illegible] किया था, इसके बाद आत्मा [illegible] करनेकी इच्छा हुई थी; एक बार फिल्मी गीत लिखनेकी इच्छा हुई थी। मुझे [illegible] लगानेको मन चाहता था, कई परोपकार करनेको विचार हुआ

था, कई वर्षोंका बाकी टैक्स दे डालनेकी प्रेरणा हुई थी, दिमागसे सम्बन्ध रखनेवाला कोई काम करनेका जी चाहा था—तिवारी उस समय मिलते तो मैं इनका सिर तोड़ डालता। आज, इस समय, वही असाधारण आत्मा मेरे शरीरमें प्रविष्ट हो गयी है, पर न मैं तुम्हें जूते लगाऊँगा, न तिवारीका सिर तोड़ूँगा। इस समय मुझे एक विचित्र अनुभूति हो रही है। मुझे भास हो रहा है कि मैं एक मन्दिर बनवाऊँगा। यह भी भास हो रहा है कि पहले मुझे उलूक तन्त्र सिद्ध करना होगा और तब मन्दिर बनवानेमें तुम तीनोंकी सहायता लेनी होगी। मुझे उलूकतन्त्रकी सिद्धि होगी—काशीसे १८४ मील पश्चिमके एक नगरमें। कट्टू गुरु! यह उल्लू किसके लिए लाये हो?

कट्टू गुरुने कहा—पाँच हफ्ते बाद दिवाली है। ४ दिनों बाद शनीचर और मृगशिरा नक्षत्र है। मेरे कई शिष्य बहुत दिनोंसे कोई सिद्धि करानेको कह रहे हैं। सोचा था, एकको इस बार उलूकतन्त्रकी सिद्धि करा दूँगा, और किसी कारण कोई न कर सका तो मैं ही कर डालूँगा।

श्रीवास्तवने कहा—मेरी असाधारण आत्माकी तुमको आज्ञा है कि इस बार मुझे ही यह सिद्धि कराओ; नहीं तो दिमागसे सम्बन्ध रखनेवाला कोई काम मुझे करना पड़ेगा। बस उठो, उठाओ उल्लू, चलो मेरे साथ! तिवारीजी! नमस्कार। चन्दन सिंह! चिरञ्जीव! अब दिवाली बाद भेंट होगी; अगर तुमलोग जीते रहे।

श्रीवास्तवजी आवेश जैसी दशामें उठे और उल्लूका पिंजड़ा उठाकर चल दिये। कट्टू गुरु—'रुको, रुको' कहते हुए उनके पीछे दौड़े।

तिवारीजी चन्दनसिंहको उसी प्रकारकी दृष्टिसे देखने लगे, जिस प्रकारकी दृष्टिसे उल्लूने उन्हें देखा था।

दिवाली बाद——

सिद्धोंकी सरायमें एक दिन पूर्वोक्त चारों सिद्ध विराजमान थे । समय वह था जिसे तथागतने चौराहोंपर खड़ा होनेके लिए निषिद्ध बतलाया है ।

कद्दू गुरु बहुत गम्भीर थे । श्रीवास्तवजीके हाथमें शीशेका एक गिलास था । उन्होंने कहा——बचा तिवारी ! यह पिपासा राक्षसीके समान है, इसके आक्रमणसे मेरा कण्ठावरोध हो गया था । अब वह कुछ शान्त हुई है । अब मैं तुम्हारी जिज्ञासा शान्त करता हूँ ।——

जब मैं यहाँसे गया तो यह सोच रहा था कि तुमलोगोंसे अब भेंट होगी कि नहीं । मैं सदा यही समझता हूँ कि मृत्यु तिवारीकी चोटी और चन्दनसिंहका कान पकड़े हुए है; क्योंकि चन्दनसिंहके चोटी नहीं । पर, यह सोचकर सन्तोष हुआ कि यदि मर भी गये तो भेंट होगी——तुम दोनों प्रेत होकर जरूर भेंट करोगे ।

तो, कद्दू गुरु मेरे पीछे-पीछे गये थे । [illegible] मैं वहाँ-के गया, जहाँ [illegible] थी । इन्होंने सब विधि मुझे बतलायी और मैं तदनुसार सब काम करने लगा ।

दिवालीकी रातको मैंने कद्दूजीको गोमतीके जलसे स्नान कराया, [illegible] तिलक किया, [illegible] और साधन-[illegible] प्रवेश किया । कद्दू गुरु बाहर बैठे ।

मैंने [illegible] किया । [illegible] । मैं [illegible] ([illegible]) [illegible] । [illegible] [illegible], [illegible], अतीत हो गये । मैंने अपने चारों ओर [illegible] किया और उसे अभिमन्त्रित किया । उस समय ऐसा मालूम हुआ कि हजारों [illegible] रहे हैं । मेरा कलेजा काँपने लगा; पर मैंने अपनेको शान्त किया । मैंने आँखें बन्द कर [illegible]

किया। मेरा आँखें बन्द करना व्यर्थ हुआ। मैं विचित्र जन्तुओं और राक्षसोंको देख रहा था। वे दौड़ते थे, चीखते थे, उछलते थे, मुँह चिढ़ाते थे, हँसानेकी चेष्टा करते थे; पर मैं आसनसे चिपका रहा।

इधर मनुष्यकी खोपड़ीमें बन्दरकी चरबी भरी गयी थी और दोनों आँखोंके छेदोंमें दो विशिष्ट बत्तियाँ जलायी गयी थीं। उनके जलनेसे एक विचित्र गन्ध कमरेमें भरी थी। साथ ही नाना प्रकारके माँसोंकी गन्ध भी थी। उलूकराज स्थिर दृष्टिसे मुझे देख रहे थे—उस दृष्टिमें अब मुझे क्रूरता, हिंसा और लोभ दिखायी पड़ रहे थे।

जप समाप्त हुआ। मैंने उलूकराजका पुनः पूजन किया, नैवेद्य सामने रखा और बीज-मन्त्रका मानसिक जप करने लगा।

उलूकराजने एक पङ्ख फड़फड़ाये, और शरीरको जैसे झकझोर दिया। उनके रोएँ खड़े हो गये, वे फूलकर दुगुने हो गये और उन्होंने मुँह खोलकर एक विकट घूत्कार किया। इसके बाद नैवेद्यकी ओर बढ़े और हिरनके माँसका एक बहुत बड़ा टुकड़ा लेकर उसे पञ्जों और चोंचसे इस तेजीसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया कि मैं क्या कहूँ। कुछ टुकड़े और रक्त-बिन्दु मेरे ऊपर आकर गिरे। इसके बाद उन्होंने कुछ खाया और सब अन्नपात्रमें थोड़ा रख दिया। तब वे आँखें बन्द कर खड़े हो गये। थोड़ी देर बाद वे बोलने लगे—

साधक! तूने बीज-मन्त्रमें व्यतिक्रम कर दिया। अब मैं आठ ही बातें बताऊँगा। तू आठ बातें सोच ले। मैं उन्हींका उत्तर दूँगा।

इतना कहकर श्रीमान् चुप हुए, अपना [illegible] ले गये और मन बैठे—

मैं तो घबरा गया! बुद्धि बिला गयी। किसी प्रकार मैंने प्रश्न सोचे। उलूकराज उत्तर देने लगे।

अब श्रीवास्तवने एक कागज जेबसे निकाला। उसपर यह लिखा था—

१—काशीमें...स्थानपर...मकानमें आज तीन महीने बाद भूमि फोड़कर रामचन्द्रजीकी मूर्त्ति निकलेगी। वह मकान तू ले ले। वहीं मन्दिर बनवाना।

२—मन्दिरके चढ़ावेसे तेरे निर्वाहकी व्यवस्था हो जायगी और तेरे मित्र भी सुखसे रहेंगे। मूर्ति निकलनेके चार दिनों बाद एक सप्ताहके लिए लोगोंका दर्शन करना बन्द कर देना और इसी बीच मूर्ति-प्रतिष्ठा करा देना।...

३—काशीमें राजघाट पुलके आगे एक हरिजन बैताल सिद्ध कर रहा था। एक दिन वह बहुत भूखा था। उसी समय एक उल्लूने उसके पास एक डब्बा गिराया। उसमें अमेरिकन बिस्कुट थे। हरिजनने उन्हें खाकर प्राण-रक्षा की। इस पुण्यके कारण वह उल्लू मानव-योनिको प्राप्त हुआ। उसका नाम खेमचा तिवारी है।

४—अब मैं वेजीटेबिल घी बनानेकी सस्ती विधि बताता हूँ। जर्मनी नामक देशमें चिड़ियोंकी चर्बी अलग करनेके यन्त्र बनते हैं। उनकी सहायतासे उन चर्बीको अग्निसे गलित करके उसमें थोड़ा नमक और मधुर मिलाकर कनस्तरोंमें बन्द कर लेना।

५—मिल-मालिक बननेका प्रकार यह है—किसी बड़े आदमीको पकड़कर एक लिमिटेड कम्पनी कायम करो और उनके मैनेजिंग डाइरेक्टर बन जाओ। आगे शेयर अपने परिचितोंमें बेचो। जमीन खरीदनेमें, इमारत बनवाने और मशीनें खरीदनेमें दो-चार लाख मार दो। काम शुरू होनेपर मिलमें घाटा बतला दो और इसका प्रचार करो। शेयर जब सस्ते होकर बिकने लगें तो सब खरीद लो। बस, मिल तुम्हारी हो गयी।

६—सोना बनानेका प्रकार—ताँबेके पत्तरको किसी कछुएके, कुएंमें

खूब रगड़ो। तब उसे सात दिन गेंदेके फूलोंके रसमें डाल दो। इसके बाद परेका—

कागजमें इतना ही लिखा था। श्रीवास्तवने कहा—उल्लूकराज बहुत जल्द बोलने लगे। मैंने घबराकर उनकी गरदन काट दी। मुझे मालूम हुआ कि भूकम्प आया है, बन्दर चीख रहे हैं, ऊँट बलबला रहे हैं,...

होशमें आनेके बाद मैंने विसर्जनकी क्रिया समाप्त की और बाहर आया। कद्दू गुरु सोये हुए थे।

कद्दू गुरूने कहा—यह बकता है। उस समय कुण्डलिनी जाग्रत होकर मेरे प्राणोंको चाट रही थी। उस सुखमें मैं मूर्च्छित था। इस गधेने मुझे बड़े जोरसे झकझोरा। कुण्डलिनी सड़ाकसे नीचे उतर गयी, प्राण विचलित हो गये। हो सकता था कि मैं मर ही जाता। इसीसे कहा है—अनाड़ियोंका सङ्ग न करो।

श्रीवास्तवने कहा—तिवारी! दिवालीकी रातसे तुमपर मेरा प्रेम दूना हो गया; कारण यह कि तुम उसी उल्लू-मंत्रोंसे जो जिन्दगी कराने मैं मन्दिर बनवाऊँगा। अब मैं तुम्हारे किसी भी बातसे बुरा न मानूँगा, चाहे उल्लूपन भरा हो क्योंकि वह तुम्हारा दोष नहीं, वह तो संस्कारका फल है।

तिवारी उठकर खड़े हो गये और कुछ स्वरमें बोले—देखो श्रीवास्तव, दिल्लगीकी भी हद होती है। उससे आगे मत बढ़ो।

श्रीवास्तवने उठकर तिवारीके चरण छुए और कहा—तुम जो चाहे कहो, अब मैं नाराज नहीं हो सकता। सुनो, मन्दिर बनवानेमें तुमने सहायता करनेको कहा था।

तिवारीने कहा—हमारी पत्ती (हिस्सा) रहेगी न?

श्रीवास्तवने कहा—तुम सब मन्दिरका प्रसाद नियमित रूपसे पाया करोगे।

तिवारीने कहा—तो मैं कटिबद्ध हूँ ! तुमने चाहे उलूक-तन्त्रसे यह सब जाना हो, चाहे कुक्कुर-तन्त्रसे ।

चन्दनसिंहने कहा—सबसे पहले उस जमीनको हथियाना चाहिए ।

कद्दू गुरु बोले—उसका जिम्मा मैं लेता हूँ । चार दिनोंमें रजिस्ट्री हो जायगी ।

× × × ×

पन्द्रह दिनों बाद नगरमें यह विज्ञापन बँटा—

रामचन्द्रजीका स्वप्न—बाबा वृन्दावनविहारीकी जय

सब सनातनधर्मियोंको विदित हो कि मोहल्ला......के......मकान-में रामचन्द्रजी आजसे आठ दिन बाद भूमिमेंसे निकलेंगे । हिमाचलके तपस्वी बाबा वृन्दावनविहारीने यह मकान आठ दिन पहले खरीदा और उसी दिन उनको भगवान् रामचन्द्रजीका स्वप्न हुआ । अब वहाँ पूजा जारी है । जनतासे दर्शन करनेकी प्रार्थना है ।......

भक्तोंकी भीड़ उस मकानपर पहुँचने लगी । मकान-भरकी पुताई ताजी थी । आँगनके एक कोनेमें बड़ी-बड़ी सफेद दाढ़ी-मूँछोंवाले एक बाबाजी जमीनपर माथा रखे आँख मूँदे बैठे थे । पंडित तिवारी और [illegible] महाशय कीर्तन करा रहे थे । लोग आते थे, कुछ देर खड़े रहते थे और चले जाते थे । कुछ कीर्तनमें भी शामिल होते थे ।

दो दिनों बाद आँगनके फर्शमें दरारें पड़ने लगीं । भक्तोंका आगमन बढ़ा, [illegible] पड़ोसी तक आ गये ।

तीसरे दिन जमीनसे कोई चीज उठ बाहर निकली, आश्चर्य! भगवान् रामचन्द्रका सिर बाहर आ गया । शहरमें सनसनी मची थी । शहरके भक्त दो दिनोंसे वहीं जम गये थे । चौथे दिन धड़तक बाहर आया । माला, पैसे-रुपयों और मिठाइयोंसे आँगन पट गया । कद्दू गुरु

इन सब चीजोंको बगलके एक कमरेमें फेंकने लगे।...शहरके कितने ही नास्तिक आस्तिक हो उठे। सारा शहर उमड़ पड़ा—कोई दर्शनके लिए, कोई छिद्रान्वेषणके लिए, कोई दर्शनार्थियोंके दर्शनके लिए। स्कूलों और कालेजोंके लड़केतक पीछे न रहे।

चौथे दिन रातको एक सप्ताह मन्दिर बन्द रहनेको घोषणा की गयी और उसका उद्देश्य बताया गया। तत्क्षण मन्दिर बनवानेके लिए ५-७ हजारका चन्दा हो गया।

मन्दिरके पट बन्द होनेके बाद बाबा वृन्दावनविहारीके पास कष्ट गुरु आये। पेटके नीचे एक खूँटेमें बाबाजी बँधे हुए थे, वह रस्सी खोली और उन्हें सीधा किया।

तिवारीने कहा—कमरेमें ज्यादा दर्द हो तो एक लाल हुमस कर।

बाबाजीने कहा—थोड़ा अंगूरासव दो, और क्या नाम उसका कि एक प्लेट मुर्गमुसल्लम।

बाबाजीको ये चीजें देकर, तीनों सिद्ध बगलके कमरेमें घँस पड़े और छाँट-छाँटकर बादामकी बर्फी, मूँगके लड्डू और परवलकी मिठाई खाने लगे।

यह कृत्य समाप्त हो जानेके बाद बाबाजीने कहा—अब खुदाईपर जुटो। भगवानको निकालो।

तीनों सिद्ध फर्श खोदने लगे। बाबाजी निर्देशक थे। मूर्ति निकालनेके बाद तिवारीने पूछा—

क्यों बाबाजी! भगवानके नीचे चने कहाँसे आये?

बाबाजीने उत्तर दिया—भगवानकी माया! देखो, भीतर कमरेमें ८ बोरे हैं। उन्हें लाओ और चना भर दो।

चन्दनसिंहने कहा—मैं पहले विज्ञानका छात्र था। उस ज्ञानके बलपर यह समझता हूँ कि किसी गड्ढेमें चना भरकर, उसपर मूर्ति रखी जाय और तब पानी भरकर, ऊपरसे पक्की फर्श बना दी जाय। तो ३-४ दिनों बाद चना फूलकर मूर्तिको ऊपर फेंक देगा।

बाबाजीने कहा——तुम गधे हो । भगवान् खाली हाथ कैसे आते ? वे प्रसाद रूपमें चना लाये हैं । कल शहरमें वितरण कराना ।

कड़ू गुरुने कहा——मन्दिरका आर्डर दे दिया था । वह तैयार है । आठ दिनों बाद प्रतिष्ठा होगी । उसका विज्ञापन बनवाना है ।

बाबाजी बोले——अब मैं एक बङ्क खोलूँगा ।

तिवारीने कहा——फिर वही ! शराब पीकर बहकने लगते हो ।

बाबाजीने कहा——चुप रह ! वह बङ्क ऐसा होगा, जिसमें एक पैसा भी न लगेगा । भगवान्के नामका बङ्क । लोग कागज-स्याही-कलम हमारे बङ्कसे कर्ज ले जायँगे और नाम लिखकर देंगे । कामना पूरी होनेपर ११) प्रसादके लिए देंगे । महीनेमें १० ग्राहक भी मिले तो ११२॥) हुआ । एक नामजपकी मशीन भी बैठा दिया जायगा । शुरूमें मर्द [illegible], [illegible] औरतें [illegible] जायँगी । हर महीने दो एकादशी पड़ती हैं, [illegible] पर्व [illegible] हैं । रामनवमीको अखण्ड कीर्तन और परिक्रमा होगी । सालमें २५ हजार तो कहीं गये नहीं हैं ।

[illegible] कहा—— औरतें बड़ी [illegible]मिजाज होती हैं । तुम नशेमें——

बाबाजीने कहा——[illegible] न कर । [illegible] देखा है ! [illegible] है । कितनी ही औरतोंने [illegible] आत्मा [illegible] और शान्ति प्राप्त की है । तू [illegible] क्या जानता है !

× × × ×

श्री राममन्दिर बन चुका है । उसमें आने-जानेके [illegible] हैं, [illegible] भी आते हैं । [illegible] और [illegible] है । [illegible] है — [illegible] । [illegible]——[illegible] ! [illegible] और [illegible] है । [illegible]——[illegible] नहीं है ।

ब्रह्मदैत्य

अधिक सम्भावना इसी बातकी है कि, आपने केवल ईश्वरकी वाणी अर्थात् वेदका ही अभ्यास किया हो, मनुष्यकी वाणीका अभ्यास न किया हो; और यदि यह सच है तो आपने न ज्योतिष या तन्त्र पढ़ा होगा और न अंगरेजी रेखागणित। तो, आपका त्रिकोणसे परिचय भी नहीं हो सकता। पर, यह निश्चित है कि आपके पुत्र या पौत्र त्रिकोणसे अवश्य परिचित हैं—उन्होंने अनेक त्रिकोण देखे होंगे। अतः यह कहानी उन्हींके लिए है।

त्रिकोण-शास्त्रका नियम है कि त्रिकोणकी दो भुजाएँ मिलकर तीसरी से बड़ी होती हैं। तो, ग, द, ह* नामक एक त्रिकोण है। उसकी ग द तथा द ह नामक भुजाएँ मिलकर तीसरी भुजा ग ह से बड़ी हैं। सुविधाके लिए हम इन भुजाओंका सहज नाम रख लेते हैं। ग द को 'रंग' कहिये, द ह को 'कूँची' और ग ह को 'रमाकान्त'। अब यह बात हुई कि रंग और कूँची मिलकर रमाकान्तसे बड़ी हैं। दुर्भाग्य या सौभाग्यसे रमाकान्त नामक एक आदमी भी हैं और वे रंग और कूँचीके बिना अधूरे हैं क्योंकि चित्रकार हैं। इसलिए, रंग और कूँची मिलकर रमाकान्तसे बड़ी हैं। उन्हींसे उनको परिचय दिया जा सकता है और उन्हींसे उनका पेट भरता है।

---

* (त्रिकोण: शीर्ष ग, आधार द—ह)

गद + दह — गह से बड़ी

= रंग + कूँची— रमाकान्तसे बड़ी

एक बात और कह दी जाय कि रमाकान्त काशीके निवासी हैं और प्रवासी भी वे काशीमें ही होते हैं। इस बातको समझाना होगा। रमाकांतके काशीमें तीन स्थानोंमें तीन मकान हैं। वे बारी-बारीसे उनमें रहते हैं।

रमाकान्त चित्रकार हैं तो क्या, आदमी बहुत अच्छे हैं। उनसे बातचीत करनेका अर्थ है, ऐसी-ऐसी बातें सीखना; जो न किसी दैनिकमें छपती हैं, न साप्ताहिकमें।

रमाकान्त अधिक पढ़े-लिखे आदमियोंसे बहुत नाराज रहते हैं। उनका कहना है कि ऐसे आदमी अपने लिए भी भार ही हैं, क्योंकि उनकी विद्या उनके काम नहीं आती, उससे दूसरे ही लाभ उठा सकते हैं। जो चीज़ अपनी हो, वह दूसरेके काम आये; यह रमाकान्तको पसन्द नहीं। उनके घरमें एक नीमका पेड़ है, उसपर गुरुच थी। उन्होंने उसे जल्दहीमें कटवा दिया; कारण, गुरुच उनके काम न आती थी, उसे माँगने और लोग आया करते थे।

प्रातःकाल ९ बजा था। रमाकान्तने चाय पीकर गिलास एक ओर रखा। (चाय वे रोज पीते हैं। उसका नुस्खा यह है—बादाम १ छटाँक, सौंफ)॥की, मुनक्का लाल १५, केसर ।)की, पीपल २ (जाड़ेमें), आदी १ टुकड़ा (जाड़ेमें), आदी ६१ पत्ती (गर्मीमें), चाय ६ पत्ती, गुड़ आवश्यकतानुसार, काली मिर्च ३१ दाना, जल ½ सेर, दूध १½ पाव, और सौंफ)की; गर्मीमें ठंडी चाय पीते हैं, जाड़ेमें गरम।) इसके बाद [illegible] कुछ सोचके उन्होंने [illegible] लेकर [illegible] आरम्भ की। जिसके प्रकाशक [illegible] हैं, उसमें सुन्दर [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] पर न [illegible] [illegible]। वे अपने लिए नहीं [illegible], [illegible] [illegible] लिए [illegible] हैं। वे [illegible] नाराज होते हैं तो कहते हैं कि मैं तुमको

ध्रुपद सुना दूँगा, और प्रसन्न होते हैं तो ध्रुपद न सुनानेका आश्वासन देते हैं । उनके परिचित इस आश्वासनका पूर्ण महत्त्व समझते हैं ।

ध्रुपद गानेके बाद उन्होंने [illegible] और अँगोछा [illegible] बाहर निकले । वे अब नहाने जा रहे थे—गंगाजी ।

रमाकान्तका मकान जिस गलीमें था, वह किसी प्रेमीने बनवायी थी, यह उनका विश्वास था; कारण, एक दूसरेसे टकराये बिना दो आदमी एक दूसरेके पाससे न निकल सकते थे । वह गली प्रेमियोंके बड़े कामकी थी भी । वे उसमें खड़े होकर चाहे जितनी देर निश्चिन्त होकर बातें कर सकते थे—उनके किसी परिचितके वहाँ आनेकी आशङ्का न थी । रमाकान्तने [illegible] खिड़कियोंमें कई जगह छोटे-छोटे छेद कर दिये थे और किसी प्रेमी जोड़ीके आ जानेपर वे उन्हींमें आँख लगाकर चुपचाप खड़े रहते थे । वे चित्रकार थे अतः सब प्रकारके दृश्य देखना उनका धर्म था । उस गलीको कुछ साँड़ों और कुत्तोंने पहचान लिया था और वे दोपहर और रातको वहाँ सोनेके लिए आ जाया करते थे । दो-चार दिनों तो रमाकान्तने इस बातकी उपेक्षा की, इसके बाद वे नियमपूर्वक एक डण्डा लेकर उन्हें खदेड़ आने लगे क्योंकि उनके विचारसे वे जीव प्रेमियोंको उनके [illegible] भी अधिक बाधा पहुँचाते थे ।

तो, आज भी वे नहाने चले । वे बहुत धीरे-धीरे, नपी-तुली चालसे चल रहे थे; जैसे आफिसोंमें क्लर्कोंका वेतन बढ़ा करता है । वे अपने अधूरे चित्रके बारेमें सोच रहे थे । चित्र किसी स्त्रीका था, यह तो कहना ही व्यर्थ है । रमाकान्त इस चित्रको प्रारम्भ करके बड़ी विपत्तिमें पड़ गये थे क्योंकि वे चाहते थे कि उस स्त्रीके मुखपर और अंगोंमें वे बातें आ जायँ जो [illegible] युवती [illegible] और आँखोंमें वह बात पैदा हो जाय, जिसे किसी स्त्रीमें देखकर आदमी

श्रद बन्दर होकर सन्तरेके पेड़पर चढ़ जाता है और सन्तरे तोड़-तोड़कर उस स्त्रीको खिलाने लगता है। रमाकान्त चाहते थे कि उसमें जीवन इस तरह दूरसे दिखायी पड़े, जैसे कालेजोंके लड़कोंके कोटके छेदमें गुलाबका फूल दिखायी देता है।

रमाकान्तको ऐसा चित्र बनाना असम्भव मालूम हुआ और तत्क्षण उन्हें आत्महत्याकी बात सूझी। उस समय वे पुलिस-चौकीके पास थे। वे अपने कामोंमें इतनी बार असफल हो चुके थे कि उन्हें विश्वास हो गया कि आत्महत्याका प्रयत्न भी असफल रहेगा और तब मैं इसी चौकीमें बन्द कर दिया जाऊँगा। उन्हें यह बात नापसन्द हुई कि अपनी हत्या करनेवाले उन लोगोंके साथ बन्द किये जायँ जो दूसरोंकी हत्या करना चाहते हैं। अतः उन्होंने आत्महत्याका विचार तबतकके लिए स्थगित कर दिया, जबतक सरकार आत्महत्या करनेवालोंके लिए कोई स्वतन्त्र स्थान न बना दे। उन्होंने घृणासे उस चौकीकी ओर देखा और आगे बढ़े।

अब वे सड़कपर थे। वहाँ उन्हें आत्महत्यासे अधिक आनन्दप्रद बातें दिखायी पड़ीं। एक सज्जन इस [illegible] तरह चले जा रहे थे [illegible] अर्थात् उनके ओठोंमें सिगरेट दबा हुआ था; उनके एक हाथमें चाँदीकी मूँठ और दूसरेमें [illegible] बेंत, जिसे वे [illegible] रहे थे। वे ऐसे ही अकड़कर चल रहे थे, जैसे उन फूलोंके [illegible] हैं, जिनके रंग खूब शोख निकल आते। पानकी दूकानपर सौन्दर्यके एक आधुनिक उपासक बैठे थे। ([illegible] है) वे [illegible] क्योंकि न वे किसी [illegible] कोई [illegible] वे किसीके [illegible] देख आनेके लिए [illegible] रहे थे।.... [illegible] रिक्शेमें एक आदमी [illegible]। उनके

रिक्शेवालेको एक चवन्नी दी। रिक्शेवालेने कहा—'हुजूर, कुछ और दीजिए।' तब उस आदमीने रिक्शेवालेकी हथेलीपरसे चवन्नी उठा ली और एक रुपया रखकर चलता बना। रमाकान्तने उस आदमीको तबतक देखा, जबतक वह दिखायी पड़ता रहा। उनके मतसे इस तरहका काम वही कर सकता है जो अति उदार हो और उदारता तभी हो सकती है जब दिल फैल जाय और दिलको फैलानेवाली दो ही चीज़ें हैं—प्रेम और शराब।

दशाश्वमेधके चित्तरञ्जन-पार्कके पास चित्तरञ्जनजीकी मूर्तिके एकदम पास, बीच सड़कपर, दिन-दहाड़े, दम्पतियोंमें मिनटोंमें प्रेम उत्पन्न करनेके तेल बिक रहे थे। विक्रेताको घेरे बहुतसे लोग खड़े थे और कुछ अमेरिकन सिपाही उन तेलोंकी शीशियाँ जेबोंमें भर रहे थे।

ज़रा आगे तीन आदमी जड़ी-बूटियाँ बिछाये बैठे थे। वे चिल्ला रहे थे—कण्ठमालाकी जड़ी दो आना, साँपकी जड़ी सवा पाँच आना, हत्था-जोड़ी तीन आना, लुटा दिया, लुटा दिया; इस शहरमें सिर्फ १५ दिन।

काली़जीकी तरफसे जो रास्ता गङ्गाजीकी ओर गया है, उसीसे होकर रमाकान्त उस जगह पहुँचे जहाँसे सीढ़ियाँ शुरू हो गयी हैं। वे सबसे ऊपरकी सीढ़ीपर खड़े होकर सामने देखने लगे—जैसे भूमि और आकाशके कुशल-मङ्गलकी जाँच कर रहे हों। तब उनकी दृष्टि गङ्गापर पड़ी। कलसे आज चार हाथ पानी बढ़ चुका था। पानी जहाँ आकर छू रहा था, उससे २०-३० हाथ इधर ही नावें लगती थीं और घुटने घुटने पानीमें होकर लोग आ जा रहे थे। पानीसे २५-२० हाथ ऊपर टेकैसाहबकी झोपड़ी थी।

रमाकान्तकी दृष्टि पानीपर होती हुई उस पार जाने लगी। पानी गँदला था, उसपर फेन था और छोटी-मोटी लकड़ियाँ, तिनके, घास

बहा जा रहा था—कहीं अलग, कहीं २–४ हाथकी लम्बाईमें। कहीं-कहीं नावें थीं जिन्हें माझी रामनगरकी ओर पीठ करके अर्थात् बहावकी ओर मुँह करके खे रहे थे।

शीतलाजीके मन्दिरकी फर्शपर आज पानी था—रमाकान्तने कुछ सीढ़ियाँ नीचे उतरकर देखा। घाटिये अपने तख्ते ऊपर लाते जा रहे थे। एक तख्ता प्रायः पूरा पानीमें था। बायें हाथके ऊँचे शिवालेकी दीवारसे टकराकर पानी घूमता था और शीतलाजीके चबूतरेसे टकराकर फिर घूमता था—पानीका उतनी दूरमें एक आवर्त्त हो गया था। उस आवर्त्तमें कुछ लकड़ियाँ थीं और दो शव थे। वे, दोनों दीवारोंके पासतक जाते थे और तब पानी उन्हें जैसे पीछे ढकेल देता था। वे गोता खाकर कुछ देरके लिए अदृश्य हो जाते थे और तब फिर इधर आ जाते थे।

पानीमें एक तख्तेके होनेकी बात कही जा चुकी है, उसके तीन कोनेपर तीन व्यक्ति खड़े थे। रमाकान्तकी दृष्टिमें ये तीनों वृत्तहीन थे, पर हम उन्हें वृत्त-स्पृष्ट माननेको बाध्य हैं क्योंकि रेखागणितका सिद्धान्त है कि यदि तीन बिन्दु एक ही सीधी रेखापर न हों तो एक (केवल एक) वृत्तसे अवश्य स्पृष्ट होंगे।

रमाकान्तने एक तख्तेपर अपना धोती-कुर्ता लोटा रखा, अँगोछा कमर-में बाँधा और पानीमें उतर पड़े। कमर-भर पानीमें एक बंगाली बाबू नहा रहे थे। उन्होंने रमाकान्तको देखते ही कहा—'नोमोस्कार मोशाई, नोमोस्कार। [illegible]'

रमाकान्त रोज नमस्कार सुनकर उनकी ओर पीठ करके खड़े होते थे और 'नमस्कार' कहकर, दक्षिण होकर नहाने लग जाते थे। रमाकान्त अपना इतना मूल्य अवश्य समझते थे कि उसे दो आँखों आँका जाय;

बंगाली बाबूका एक ही आँखसे वह काम करना उन्हें असह्य था। पर, आज वे बड़े प्रेमसे बंगाली बाबूके पास जाकर खड़े हुए और बहुत विनय-पूर्वक नमस्कार करके कहा (उस तरह नमस्कार करना चौदहवीं सदीके व्यक्तिके लिए भी प्रशंसाकी बात होती)—मुझे तो चतुष्कोणकी बात कभी भूलती ही नहीं। मैं स्कूलमें पढ़ता था, त्रिकोण पार करके चतुष्कोणमें परिणत हुआ था, बस तभी निकाल दिया गया।

बंगाली बाबूने [illegible] पूछा—क्यों ?

रमाकान्तने उस-पार देखते हुए कहा—हमलोगोंको रेखागणित स्वयं हेडमास्टर पढ़ाते थे। वे बायीं आँखसे ही दुनिया देखते थे। एक दिन उन्होंने मुझसे एक चतुष्कोण बनानेको कहा जिसकी चार भुजाएँ और एक कोण ज्ञात हों। मैंने चतुष्कोण बनाया और उसका नामकरण किया—क, न, स, ल। बस, हेडमास्टर साहब आग-बबूला हो गये और चिल्लाने लगे—'हमको काना साला कहता है! काना साला, एँ!' उसके बाद उन्होंने मुझे निकाल दिया। लेकिन मेरा...

बंगाली बाबूने गम्भीर भावसे नाक दबाकर प्राणायाम शुरू कर दिया और आँख बन्द कर ली। धर्ममें प्रवृत्त मनुष्यका ध्यान भग्न करना अधर्म समझ, रमाकान्त वहाँ चले आये, जहाँ तीन वृत्तहीन खड़े थे।

इन वृत्तहीनोंके नाम थे—कुन्नू गुरु, शंकरजी और सुदामा। शङ्करजी और सुदामाके तख्ते ऊपर चले गये थे। यह तख्ता कुन्नू गुरुका था। उनकी उम्र ५५ के कुछ ऊपर थी, मुँहमें दाँत न थे, पर जीभ थी जो बड़े-छोटे, टेढ़े-सीधे, [illegible] शब्दोंपर [illegible] लोटा करती थी। पितृपक्षमें तर्पण करानेमें उनकी [illegible] थी। वे एक साँसमें कहते थे—'हाँ, जल फेंको। माता [illegible], [illegible], पिता तृप्यताम्।' कुन्नू गुरुको याद था कि हमारे किस [illegible] [illegible]

रिश्तेदार 'तड़पन्ताम्' का अधिकारी हो चुका है और इसी गुणके कारण उनके यजमान उनसे प्रसन्न रहते थे, क्योंकि उन्हें जल देते समय अपने स्वर्गीय नाना आदिके नामोंवाली डायरी न लानी पड़ती थी।

शङ्करजीने कहा—का हो रमाकान्त, जरा उस कोनेपर जाओ तो!

रमाकान्त चौथे कोनेपर चले गये और उसे पकड़कर कहा—उठे यारो!

सुदामाने खड़े ही रहकर कहा—सम्हालके! नीचे चाचा हैं।

रमाकान्तने इधर-उधर देखा; तब कहा—क्या? कहाँ चाचा हैं?

सुदामाने कहा—इसी तख्तके नीचे हैं। तुम्हारे चाचा नहीं (आवर्त्तके शवोंकी ओर दिखाकर) इनके चाचा!

रमाकान्तने कहा—इनके चाचा? कह क्या रहे हो?

[illegible] चाचाके साथ आये थे। इनके चाचा तख्तके नीचे छिपे हैं। [illegible] खोज रहे हैं।

रमाकान्त चौंककर पीछे हटा और सहसा एक गढ़ेमें चला गया। उसकी गरदनका कुछ अंशमात्र ऊपर रह गया—पानीके। वह तैरकर तख्तके पास आया।

बुद्धू गुरुने कहा—अरे शङ्करवा! बेकारकी दिल्लगी कर रहा है! उठाओ रमाकान्त, उठाओ।

चार आदमियोंने तख्ता उठाया, जो पत्थरोंके बड़े-बड़े टुकड़ोंके पायोंपर रखा था। रमाकान्त आगे बढ़ा तो घुटनोंमें कोई चीज अटकती! वह टेककर आगे बढ़ा, दाहिने बायें भी हटा, पर वह चीज घुटनोंसे नहीं हट रही।

रमाकान्तने कुछ रुककर कहा—देखो, यह दिल्लगी अच्छी नहीं है। कोई चीज अटका रखी है तख्तेमें, और तख्ता उठानेको कहते हो!

सुदामाने कहा——अगर आँख बन्द करके, उसे खींचकर घाटपर ले जाओ तो दस रुपया इनाम ।

रमाकान्तने कहा——जाओ, जाओ !

बुद्धू गुरुने कहा——हमारा जिम्मा रमाकान्त ! यह न देगा तो हम देंगे ।

रमाकान्तने कहा——अच्छा तो लो !

रमाकान्त आँखें बन्द करके झुका, भीतर हाथ डालकर उस वस्तुको पकड़ा और खींच-खाँचकर, अन्दाजसे, बाहर निकाला ।

शङ्करजीने कहा——शाबाश ! हाँ, दहिनेसे बढ़ो ।

रमाकान्तको अब वह हलकी मालूम हुई । वह उसे ढकेलते हुए आगे बढ़े, किनारेपर लाकर छोड़ दिया और आँखें खोलीं ।

आँखें खोलते ही रमाकान्त चौंककर २-३ हाथ पीछे हट गये । सामने एक ताजा शव था । शवका पेट बहुत फूला हुआ था, सारा शरीर कुछ फूल गया था, मुँह खुला हुआ था, शरीरका रक्त जलके कारण अस्वाभाविक श्वेत हो चला था और हाथोंकी उँगलियाँ ऐंठी हुई थीं ।

बुद्धू गुरुने कहा——हम पैसा नहीं देंगे । यह क्या निकाल लाये ?

रमाकान्तने कहा——तुमलोग अत्यन्त नीच हो, कुलाङ्गार !

बुद्धू गुरुने कहा——जल छोड़ बैठा ! चाचा तड़पन्ताम् ।

शङ्कर बोला——क्या नहीं था चाचा हैं ! बिगड़ते क्या हो !

सुदामाने कहा——है मालूम ! इसमें जनेऊ है ।

बुद्धू गुरुने कहा——मरा है खा-पीके । पेट कैसा फूला है । मालपुआ भरा होइहै !

रमाकान्त कुछ देर चुप खड़े रहे । तब शवको पानीमें बाहरकी

ओर ढकेला और पानीको हिलोरकर, उसे आगे बढ़ाने लगे। शव आवर्त्तमें जा पड़ा और अन्य दो शवोंके साथ चक्कर खाने लगा।

रमाकान्त किनारेकी एक भौलिया[1] पर चढ़े, उसमेंसे एक बहुत लम्बी, मोटी, रस्सी निकाली और उसे गलही[2]में बाँधकर पानीमें छोड़ दिया। अब वे किलवारीपर[3] पैर रखकर पानीमें उतरे और रस्सी पकड़कर आगे तैर चले। पानी उन्हें शिवालेकी दीवारकी ओर ले चला। वे दीवारपर एक पैर अड़ाकर रुके और प्रतीक्षा करने लगे। थोड़ी देरमें शव उनकी ओर आये और उन्होंने एकका हाथ पकड़ा, जोर लगाकर उसे बाहरकी ओर खींचा और दीवारके सहारे आगे बढ़ने लगे। दीवारकी समाप्तिके पास आकर उन्होंने शवको और बाहर ढकेला और वह आवर्त्तके बाहर होकर सीधा आगे बह गया--- [illegible] दिशामें। इसी प्रकार उन्होंने शेष दो शवोंको भी आवर्तसे बाहर कर दिया।

घाटके ऊपरकी सीढ़ियोंपर कुछ स्त्रियाँ खड़ी, यह क्रिया देख रही थीं। यदि रमाकान्त पेशेवर (प्रोफेशनल) प्रेमी होते तो उन्हें उनकी दृष्टियोंमें न-जाने क्या-क्या भाव दृष्टिगोचर होते, और उन्हें न-जाने क्या करनेको प्रेरित करते।

अब रमाकान्त किनारे आये, रस्सी खोलकर यथास्थान रखी और कमरभर पानीमें आकर खड़े हुए। उन्होंने झुककर पैरोंके नीचेसे मिट्टी उठायी और शरीर मलने लगे। तीनों [illegible] तख्ता सँभालकर रखनेमें व्यस्त थे। रमाकान्त गोते लगाने लगे। पन्द्रह गोते लगानेके बाद उन्होंने स्नान समाप्त किया। तीनोंने उनके सिर और पीठपर मिट्टीकी [illegible] करने लगे।

१--बड़ी, छतदार नाव। २--नावका पिछला हिस्सा।
३--नावकी दिशा बदलनेका साधन।

सहसा रमाकान्त उछलकर पीछे दौड़े। वे हाथोंसे पानीको पीटते जाते थे। वे पानीसे निकलकर ऊपर दौड़े, सुदामाको पकड़कर वे पानीमें खींच ले गये और उसे दबोचकर, उसके ऊपर चढ़ बैठे। सुदामा छटपटाने लगा, उसका दम बन्द होने लगा। रमाकान्तने उसे छोड़ा और दोनों हाथ कन्धोंकी सीधमें फैलाकर, आँखें फाड़कर, एक पैर पानीसे ऊपर उठाकर, बहुत जोरसे चिल्लाये—ब्रह्मदैत्यसे छेड़खानी! हड्डियोंका सत खींच लूँगा! कच्चा चबा जाऊँगा!

सुदामाका मुँह खुला हुआ था। उसका एक हाथ सीनेपर था, एक रमाकान्तको रोकनेके लिए आगे बढ़ा हुआ; उसकी आँखोंमें भय था। वह काँप रहा था और उसके पैर पीछे हटते जा रहे थे। रमाकान्तने उछलकर उसका हाथ पकड़ा और उसके गलेपर दाँत जमाये। सुदामा सिकुड़ गया, उसकी आँखें फैल गयीं, उसके मुँहसे निकलने लगा—र-र-र-र- च्छा छा छा ब-ब-ब रम म्म म्म बा बा बा बा!

बुद्धू गुरु और शङ्करके रोएँ खड़े हो गये थे। वे वहींसे हाथ जोड़कर कहने लगे—कसूर भयल बाबा! हा-हा हाथ जोड़ते हैं; छो-छोड़ दीजिये। पू-पूजा देंगे।

भूत-प्रेतोंकी बात स्त्रियोंकी समझमें बहुत जल्द आ जाती है। ऊपर जो स्त्रियाँ खड़ी थीं, वे काँपती हुई वहाँसे चल दीं।

रमाकान्तने सुदामाको छोड़ दिया, कहा—जानता नहीं! बाँसचौकी-का ब्रह्म हूँ! ककड़ीकी तरह सिर तोड़ दूँगा अगर पूजा न दी! धरतीपर पटक दूँगा। हूँ! हा! है!!

रमाकान्त झटकेसे पानीसे निकले। तीनों मुसाफिर सिकुड़कर खड़े हो गये। रमाकान्तने तीनोंको खूब ध्यानसे देखा और अकस्मात् कुछ

गुरुके गलेपर सटीक तमाचा मारा, कहा—'चाचा तड़पन्नाम्' करता था ! वंसका नास कर दूँगा ।

इसके बाद रमाकान्त लम्बे-लम्बे डग रखते हुए सीढ़ियाँ चढ़ने लगे और कुछ ही क्षणोंमें सड़कपर आ गये ।

× × × ×

जिस पानकी दूकानपर सौन्दर्यके एक शौकीन दर्शकके बैठे रहनेकी बात कही जा चुकी है, उसीपर तीन-चार व्यक्ति खड़े थे । इनमेंसे हरीभाऊ ऐसे व्यक्ति हैं जो तीन घण्टे सुबह और तीन घण्टे शामको, इस पानकी दूकानके आसपास ही रहते हैं और जब उनका कोई परिचित पान खाने आ जाता है तो वे भी वहाँ आ जाते हैं और अपने परिचितपर अनुग्रहकर, उसके दिये पान खा लेते हैं । पानवालेने भी अपने प्रत्येक ग्राहकको अधिक-से-अधिक देरमें पान देनेका नियम कर रखा है, जिसमें उतनी देरमें उधरसे आने-जानेवाले प्रत्येक परिचितको वह बुलाकर अपने परिचयका प्रमाण दे सके ।

ठाकुर साहबके हाथसे पान लेकर हरीभाऊने कहा—कुछ सुना ! कण्ठालेपर ब्रह्मदैत्य आ गया है !

ठाकुर साहबने पूछा—कौन कण्ठाले ?

राम भाऊने कहा—वही अपना रमाकान्त ! जो तस्वीर बनाता है ।

कुटीश्वर कम्पनीके मालिक [illegible] भी यह सुनकर कुछ चकित हुए । उन्होंने रमाकान्तको कुछ [illegible] बनानेके लिए १५) [illegible] दे रखे थे । उन्होंने पूछा—ब्रह्मदैत्य कैसा ?

हरीभाऊने व्याख्या शुरू किया—गङ्गाजी नहाने गया था । एक मुर्दा वहाँ था । उसीको वहाँसे उठाकर दूसरे घाटपर रख दिया । बस,

ब्रह्मदैत्य चढ़ गया। तीन दिनोंसे बुखारमें पड़ा है। चलो देख आवें। आ हा हा! आइये, आइये!

जिसका इस प्रकार स्वागत हरीभाऊने किया था, वह पानकी दूकानपर ही आ रहा था, पर हरीभाऊको देखकर वह न आया; किसी जरूरी कामसे चला गया।

ठाकुर साहबने आसमानकी ओर देखा और कुटीचर कम्पनीके मालिकसे कहा—पानी बरसनेवाला है। चलो, रमाकान्तको देख आवें।

कुटीचर कम्पनीके मालिक भी उत्सुक ही थे। वे निश्चय कर लेना चाहते थे कि १७) पानीमें गये या कुछ आशा है।

रमाकान्त एक खाटपर लेटे हुए थे। चटाईपर ३-४ आदमी बैठे थे। ये लोग भी बैठे।

एक व्यक्ति रमाकान्तको ध्यानसे देख रहा था। वह लुंगी पहने था और लाल रंगकी दाढ़ीपर हाथ फेर रहा था।

रमाकान्तने करवट ली और कहा—अबे मौलवीके बच्चे, तेरा सारा मन्तर-जन्तर निकाल दूँगा।

मौलवी साहबने दो-तीन बार रमाकान्तकी ओर फूँक मारी और कहा—बड़े-बड़े सरसराकसोंको दोजखकी हवा खिला चुका हूँ। हाँड़ीमें बन्द करके पारमें गाड़ आऊँगा। तुम आये क्यों हो?

रमाकान्तने कहा—मुझे क्या पड़ी थी आनेकी!

मौलवी—तब क्यों आये?

रमाकान्त—मैं तो सैरको निकला था। मजेमें मुर्देपर बैठा जा रहा था। लड़कोंपर खेल रहा था। इसीने मुझे छेड़ा। जबरन वहाँसे हटाया। तो मैं इसीपर चला आया।

मौलवी—तुम जाओगे कब?

रमा०—जब मेरी इच्छा होगी। अरे हाँ आँ,

तेग चलाई तब रावनने अन्धा तीन लोक होइ जाय,

अङ्गदजूको मिरगी आई बनरा चले पराय पराय।

हाँ, हाँ, धागे न धिनक धिन, धागे न धिनक धिन।

मौलवी साहबने पूछा—पहले आल्हा गाते थे क्या?

रमाकान्त ताल देते रहे। बोले नहीं।

मौलवीने डपटकर कहा—मैं क्या पूछता हूँ!

रमाकान्तने कहा—चुप सुअर!

मौलवीने कहा—तोबा! तोबा! थू! बिरहमन लोग मरकर कितने बुरे हो जाते हैं!

कुछ देर बाद रमाकान्तने कहा—अब मैं जा रहा हूँ। रेवड़ी-तालाबपर वहीं ताड़के पेड़पर जरा बैठूँगा।

रमाकान्तने सिरहानेकी पाटीमें सिर लगाया, पैतानेकी पाटीमें पैर अड़ाये, धड़को धनुषाकार ऊपर उठाया और तब ऊपरसे गिर पड़ा और शिथिल हो गया। उसकी आँखें बन्द हो गयीं और [illegible]।

मौलवी साहबने फरमाया—भारी पाजी [illegible]। [illegible] देखिये, ऊँटके पैरकी हड्डी, बन्दरके दाँत और बिल्लीके सिरकी हड्डी चाहिए। [illegible], लोहबान, जाफरान, चार हाथ [illegible] कपड़ा, तीन हाँड़ी, आठ [illegible], तीन परई और [illegible] भी दरकार है। आबे-जमजम तीन बूँद चाहिए, वह मैं ले आऊँगा।

रमाकान्तकी माईने कहा—भाभी चीजें आप ही लाइयेगा। हिन्दू लोग हड्डियाँ नहीं [illegible]।

मौलवी साहबने कहा—अच्छी बात है, मैं ही ले आऊँगा। मुझे [illegible] भी मिलेगी। तो २५) दिलाइये।

ठाकुर साहबने पूछा—इतनेसे यह झंझट दूर हो जायगी तो ?

मौलवी साहब—खुदाने चाहा तो सब ठीक हो जायगा ।

ठाकुर—क्यों मौलवी साहब ! लोग मरकर भूत-परेत क्यों होते हैं ?

मौलवी—बन्दा जितने ज्यादा गुनाह करता है, उसकी रूह उतनी भारी होती जाती है । दुनियामें सब आफतें आसमानसे आती हैं । आसमानमें सात परतें हैं । रूह जिस्मसे निकलकर ऊपर उठने लगती है । जब वह तीन परदे पार करके चौथेमें चली जाती है, तब तो ठीक रहता है; नहीं तो वह भूत-प्रेत बनकर उन्हीं तीन परदोंमें घूमती रहती है ।

मलखानने कहा—बिलकुल टी० बी० का हिसाब है । तीन परदे-पार और मुक्ति !

मौलवी—लेकिन भारी रूहें चौथे परदेमें नहीं जा सकतीं । उनमें जो जितनी ज्यादा गुनहगार होती हैं, वे उतनी ज्यादा शैतानी करती हैं । उसी हिसाबसे उनके नाम होते हैं, जैसे जिन, भूत, राकस, परेत ।

ठाकुर—मेरे ये दोस्त तिवारी साहब इन बातोंपर यकीन नहीं करते ।

मौलवी—यकीन तो मिनटोंमें कराया जा सकता है । मैं इनपर किसी भूतको बुलाता हूँ ।

ठाकुर—रमाकान्तके ब्रह्मदैतको इनपर बुलाइये ।

मौलवी—वह तो अभी ताड़के पेड़पर है । फिलहाल दूसरा ही सही ।

इसी वक्त रमाकान्त उछलकर उठ बैठे । बोले—मैं आ गया । ले चला मुझे तिवारीपर !

तिवारीने कहा—देखिये बरम्हदैत्यजी ! मेरी रमाकान्तसे दोस्ती है, आपसे नहीं । आप मुझसे दूर ही रहिये ।

ब्रह्मदैत्यने कहा—दोस्ती क्या है ! तू रुपया देता है, काम कराता है । तेरे १७) बाकी हैं न अभी !

तिवारीने अब मान लिया कि ब्रह्मदैत्य है । उन्होंने श्रद्धासे नमस्कार करके कहा—महाराज ! आप खुली जगहके रहनेवाले हैं; कभी ताड़के पेड़पर बैठे, कभी बाँसकी फुनगीपर; अभी कलकत्ते हैं तो मिनटभरमें बम्बई; आपको रमाकान्तका यह महा गन्दा घर सुहाता कैसे है ? आप तो किसी मन्दिरकी पताकापर विराजिये—ऐसे मन्दिरकी पताकापर, जिसमें ऐसे प्रेमी एक दूसरेका दर्शन करने आते हों जिन्हें और कहीं अवसर न मिलता हो । आपने प्रेम तो अवश्य किया होगा !

ब्रह्मदैत्यने एक लम्बी साँस खींचकर कहा—प्रेमहीके कारण तो मैं ब्रह्मदैत्य हुआ हूँ । पर, वह लम्बी कहानी है । उस वक्त तुम्हारे प्रपितामह भी पैदा नहीं हुए थे । सारांश यह कि 'उसके' रिश्तेदारोंने मुझे ब्रह्मदैत्य बना दिया—मुझे काटकर फेंक दिया । उस समय न पुलिस थी, न घर-घरमें विभीषण थे । उस समय ऐसे काम करना धर्म समझा जाता था ।

तिवारीने पूछा—प्रेम करना ?

ब्रह्मदैत्यने कहा—नहीं, प्रेमियोंको ब्रह्मदैत्य बनाना । ब्रह्मदैत्य होनेपर मैं एक बार 'उसके' पास गया था । वह तो देखकर मूर्च्छित हो गयी । मुझे भी ग्लानि हो गयी । लौट आया ।

तिवारीने कहा—आप तो ऐसी करुण-कथा कह रहे हैं कि मुझसे रहा भी नहीं जाता ।

ब्रह्मदैत्य बोले—जब यह सब [illegible] और [illegible] उसे लेकर चले तो मैं पीछे-पीछे चला । थोड़ी दूर जानेपर एक [illegible] ऐसा [illegible] मारा कि

मेरी कमर टेढ़ी हो गयी। सोचो! मेरे ही जातके और मुझे डण्डा मारें!

तिवारीने पूछा——आपके जातके! यमदूत!

ब्रह्मदैत्यजी हँसे, कहा——ब्राह्मण गीता पाठ करते-करते मोह-मुक्त हो जाते हैं——उनमें दया नहीं रह जाती। वे ही यमदूत बनाये जाते हैं। जिसमें जरा भी दया हो, वह यमदूत कैसे बनाया जा सकता है?

तिवारी——भाग्यसे ही मैंने कभी गीता नहीं छुई। रमाकान्तके पिताको आपने देखा?

ब्रह्मदैत्य——नहीं।

तिवारी——कभी देख लीजियेगा। वे भी गीता-पाठी थे। तो, बात यह है कि आप प्रेमका महत्व जानते हैं। रमाकान्तका हालहीमें विवाह हुआ है। वह अपनी पत्नीसे प्रेम करता है। आप उसे छोड़ दीजिये।

ब्रह्मदैत्य——इसी लिए तो मैं डटा हूँ। प्रेम बहुत दुर्लभ है। वह भी अपनी पत्नीमें।

तिवारी——तो आप कबतक विराजेंगे?

ब्रह्मदैत्य——५-६ महीने। स्व-स्त्रीमें प्रेमकी अवधि दो वर्षकी होती है।

मौलवी——मैं अभी भगाता हूँ। ५-६ महीनेकी ऐसी-तैसी।

ब्रह्मदैत्य एकाएक उछला। उसने मौलवी साहबकी दाढ़ी पकड़कर खींचनी शुरू की और चिल्लाया——तू भगावेगा तू! तू अभी चला जा नहीं तो तेरे बच्चोंकी गर्दन उमेठ दूँगा, अभी।

तिवारीने प्रार्थना की——महाराज! छोड़ दीजिये। इस गरीबके बच्चेको मारकर क्या मिलेगा!

ब्रह्मदैत्यने कहा——इसे अभी हटाओ यहाँसे।

ठाकुर साहबने मौलवी साहबको उठाया और बाहर ले चले। वे

काँपते हुए घरसे निकल गये। उनकी आवाज कुछ देर सुन पड़ी—तोबा ! तोबा ! शैतान है शैतान ! इबलीस ! जान बची।

तिवारीने कहा—महाराज एक प्रार्थना है।

ब्रह्मदैत्यने कहा—कह !

तिवारी—एक तान्त्रिक हैं। ब्राह्मण हैं। बम्बईमें भूत-प्रेतोंका कारोबार था। लड़ाईकी भगदड़में बनारस चले आये हैं। उन्हें मैं लाना चाहता हूँ।

ब्रह्मदैत्यने कहा—अब तू मूर्खताकी बात करने लगा। मैं भी ब्राह्मण हूँ, उसपर मरा हुआ। वह मेरा क्या करेगा? गायत्री मैं जानता हूँ, जन्त्र-मन्त्र मैं जानता हूँ।

तिवारीने कहा—गुरुजी ! लोहा ही लोहेको काटता है। आप आज्ञा दीजिये तो मैं उनको लाऊँ।

ब्रह्मदैत्यने कहा—तू खुशीसे ला। मैं तुझपर प्रसन्न हूँ।

तिवारीने कहा—पर, मेरे घर मत पधारियेगा।

ब्रह्मदैत्य हँसे ; कहा—एवमस्तु ! पर, तूने यह प्रार्थना क्यों की ? धनकी जरूरत नहीं है तुझे ? तेरे घरमें ६ हण्डे गड़े हुए हैं। पूछता तो मैं उन्हींका ठीक पता बता देता।

तिवारीकी आँखें फैल गयीं। उसने गिड़गिड़ाकर कहा—महाराज ! अब बता दीजिये।

ब्रह्मदैत्य—तूने तो मुझे अपने घर जानेसे मना कर दिया !

तिवारीने आतुरतासे कहा—मैं एक बाँस अपने आँगनमें गड़वा देता हूँ। आप उसीपर विराजिये ! रोज आपकी पूजा किया करूँगा।

ब्रह्मदैत्यने कहा—अब तो तू चूक गया। पर, चिन्ता क्या है ; मैं तो यहाँ ६ महीने रहूँगा। फिर कोई अवसर मिलेगा।

तिवारी अपने ऊपर बड़े क्रुद्ध हुए। वे अब तान्त्रिकको न लाना

चाहते थे। उन्हें भय हो गया कि कहीं ६ हण्डोंका पता बतानेके पहले ही ब्रह्मदैत्य भी चले न जायँ। पर, अब तान्त्रिकको न लानेसे रमाकान्तके घरवाले नाराज होंगे।

तिवारीने कहा—महाराज! बिना बताये चले न जाइयेगा।

ब्रह्मदैत्यने कहा—तेरा प्रारब्ध!

* * *

इन लोगोंके चले जानेके बाद ही लखनऊसे रमाकान्तके एक भाई आ पहुँचे। जिन लोगोंसे इनका परिचय था, उनमें ये प्रसिद्ध थे, क्योंकि ये पी० एच० डी० थे पर सिरपर दो बित्तेकी चुटिया थी और 'आभास कार्यालय'का जूता पहनते थे। ये पहले 'सिविल सर्विस' में जानेवाले थे, पर विलायतमें इन्हें पता लगा कि सिविल सर्विसवालोंमें न सभ्यता होती है न सेवा-भाव। अतः इन्होंने वह परीक्षा इस ढंगसे दी कि फेल हो गये और इसके बाद पी० एच-डी० करके चले आये। इन महाशयका नाम था—रघुनाथ।

रघुनाथ, पी० एच-डी० ने विज्ञानके पीछे अपना जीवन नष्ट किया था। ये योगशास्त्र, ज्योतिष और वैद्यकके भी प्रेमी थे और समन्वयवादी थे।

महाभारतमें अदितिके उदरमें ४९ पवनोंकी उत्पत्तिकी जो कथा है, उसे ये सत्य मानते थे। इनका कथन है कि अदितिका अर्थ है आकाश, क्योंकि उसीके उदरमें वायुकी उत्पत्ति हुई। मूलतः सात वायु हैं। उनके और सात विभाग होनेपर ४९ हुए। इनका कहना है कि वस्तुतः ३६० वायु हैं क्योंकि वैद्यकमें बताया गया है कि शरीरमें ३६० अस्थियाँ हैं। सूर्य १२ राशियोंपर घूमता है। एक राशिमें तीस दिन रहते हैं और सूर्य ही अस्थियोंका आत्मा है। तो सूर्य सब मिलाकर १२ राशियोंपर १२×३०=३६० बार चलता है। अतः शरीरमें इतनी

अस्थियाँ और पवन होना उचित ही है। ये ही पवन जब किसी कारण शरीरमें अस्त-व्यस्त हो जाते हैं तो रोग उत्पन्न होते हैं। इसी कारण योगी लोग सूर्यकी उपासना करते हैं और प्राणायामके द्वारा वायुको वशमें करते हैं। इसका फल यह होता है कि हड्डियाँ पुष्ट रहती हैं, अतः वे दीर्घजीवी होते हैं और उन्हें कोई रोग नहीं होता।

रघुनाथजीको निश्चय था कि रमाकान्तके शरीरमें पवन अस्त-व्यस्त हो गये हैं और सम्भवतः खोपड़ीके भीतरके। अतः उन्होंने आते ही यह निश्चय करना चाहा कि रमाकान्तके ज्ञान-तन्तु अभी ठीक हैं या पवनोंके आघातसे छिन्न-भिन्न हो गये हैं।

रघुनाथ रमाकान्तके पास आकर बैठे। रमाकान्तने कुशल-मङ्गल पूछा।

रघुनाथने पूछा—तुम्हारे पास कितने रंग हैं?

उत्तर मिला—जितनी कूँचियाँ हैं।

प्रश्न—कितनी कूँचियाँ हैं?

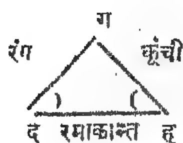
उत्तर—जितने रंग हैं।

प्रश्न—यदि एक रंग बढ़ जाय?

उत्तर—तो एक कूँची खरीदी जायगी।

प्रश्न—तुम्हें रंगसे अधिक आमदनी होती है या कूँचीसे?

त्रिकोण-गणितका एक सिद्धान्त यह है कि यदि किसी त्रिकोणकी दो भुजाएँ समान हों तो उनके सामनेके दो कोण भी समान होंगे। यदि रमाकान्त इसे जानते तो सहजमें उत्तर दे देते। [illegible] त्रिकोणकी [illegible] ही भुजा है। [illegible] रंग, कूँची तथा रमाकान्त हैं यह भी [illegible] है।



रंग=कूँची, और कोण ग द ह=कोण ग ह द, यह ज्ञात है। 'कोण' के स्थानपर 'आय' रखनेसे यह हुआ कि रंग और कूँची, दोनोंकी आय समान है।

'रमाकान्त' तो रंग और 'कूँची' दोनोंके लिए समान अर्थात् अन्यथासिद्ध हैं। अतः उन्हें छोड़ देना ही उचित है। इस प्रकार यही सिद्ध हुआ कि रंग और कूँचीके कारण समान आय है।

रमाकान्तने इसी बातको बहुत देरमें, बड़े कष्टसे और अशास्त्रीय ढंगसे रघुनाथको समझाया। रघुनाथने निश्चय किया कि ज्ञान-तन्तुओंपर पवनके धक्के लग रहे हैं, पर वे टूटे नहीं हैं। वे चिन्ता-मग्न हुए।

रमाकान्तने कहा—तुम पूरे पञ्चम अन्यथासिद्ध हो।

रघुनाथने बिना समझे ही पूछा—क्यों?

रमाकान्त—क्योंकि तुम पवनोंके फेरमें पड़े हो। मेरे सिरमें पवन नहीं है क्योंकि वह ठोस है, टकहिया हाँड़ी-जैसा बोलता है। तुम्हारी कोई नस जरूर खराब हो गयी है

रघुनाथ—क्यों?

रमाकान्त—क्योंकि तुमको पवन, अग्नि, आदि उलटी-पलटी बातें सूझती हैं। वह मौलवी भी तुम-जैसा ही था। कहता था आसमानमें भाप पकते हैं और उसीसे सब आपत्तियाँ आती हैं।

रघुनाथने चौंककर कहा—सच? कहता था? वह रहता कहाँ है? मैं उससे मिलूँगा।

रमाकान्त—क्यों

रघुनाथ—यह जो पञ्चतत्त्व हैं, उनमेंसे अग्नि-तत्त्व तो चारों युगोंमें एक-सा रहता है। सत्ययुगमें पृथ्वी-तत्त्वकी प्रधानता होती है। पृथ्वीसे और ब्राह्मणोंसे घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसी कारण उस युगमें ब्राह्मणोंका अत्यन्त सम्मान था। त्रेतामें जल-तत्त्वकी प्रधानता होती है। जलका पृथ्वीसे घनिष्ठ सम्बन्ध है, अतः उस युगमें भी राजा और ब्राह्मण समान ही रहते हैं। द्वापरमें वायुतत्त्व प्रधान होता है। वह पिछले दोनों तत्त्वोंसे असम्बद्ध है, अतः उपद्रव होते हैं। गत द्वापरमें महाभारत हुआ ही था। प्रत्यक्ष ही देख लो, औरतें, मजदूर, गधे-घोड़ेतक आसमानमें उड़ रहे हैं। सबके दिमाग आसमानमें हैं। जर्मनी और जापानको भी आकाशके ही बलपर जीता गया। यात्रा भी आकाशमार्गसे ही होगी। भूमिपर कुछ न रह जायगा और जिस दिन ऐसा होगा, उसी दिन प्रलय होगा। इसके बाद फिर पृथ्वीतत्त्वकी प्रधानता हो जायगी। मौलवी ठीक कहता था। इस युगमें सब विपत्तियाँ आकाशके ही कारण हैं।

रमाकान्तने कहा—बनारसकी सड़कोंपर घूम आओ तो तुम्हें मालूम हो कि अब भी किस तत्त्वकी प्रधानता है। बनारसका दूध पियो तो तुम्हें मालूम हो जाय कि यहाँ गङ्गाजलकी ही प्रधानता है।

रघुनाथने यह प्रसङ्ग छोड़कर पूछा—तुम्हें ज्वर है?

रमाकान्तने कहा—नहीं।

रघु०—है तो।

रमा०—यह तो मेरा सिर हिलना शुरू है और जबतक चाहूँगा, रहेगा।

रघु०—तुम क्यों सिर हिलाते हो?

रमा०—नहीं, जरा संसारका निरीक्षण कर रहा हूँ।

रघुनाथको ज्ञात हुआ कि इस समय रमाकान्तकी झोपड़ीमें पवनका वेश हुआ है, अतः उसने चुप रहना ही उचित समझा।

रात्रिको तान्त्रिकजी पधारे। गर्दनतक केश, बीचोबीच माँग निकाली हुई, माथेपर लाल तिलक, लुङ्गी पहने, गलेमें और बाहोंपर १५–२० तावीज; यह उनका रूप था।

तान्त्रिकजीने पूछा—कब ज्वर आया?

उत्तर पानेपर वे उँगलियोंपर गिनने लगे—कृत्तिका, रोहिणी, भरणी, गण्डयोग, क्षय। शनि-मङ्गलकी दृष्टि, व्यतीपात, बार—बेला—प्रचण्ड अशुभ है। सात दिनमें जायगा।

रमाकान्तकी ओर उन्होंने स्थिर दृष्टिसे देरतक देखा। रमाकान्तकी आँखें लाल थीं, शरीर काँप रहा था। तान्त्रिकजीने कहा—आवेश है। तान्त्रिकको बड़ा खतरा रहता है। एक बार एक लकवेके मरीजको देखने गया। उसके ग्रह अत्यन्त प्रबल थे। वह अच्छा हुआ, मैं बीमार पड़ा। पर, कोई हर्ज नहीं। मैं इसे दूर करूँगा।

ठाकुर साहबने कहा—तो कीजिये।

रमाकान्तने आँखें फाड़कर, दाँत पीसकर कहा—मैं तेरी चोटी उखाड़ लूँगा। तू क्या दूर करेगा?

तान्त्रिकजीने एक बड़ी-सी हँड़िया सामने रखी, उसमें जल भरा और तब उसमें सिन्दूर, गुग्गुल, धानका लावा, आध पाव देशी शराब, और रमाकान्तके नाखून लेकर २।) छोड़े। हाँड़ीको दो हाथ लम्बे कोरे कपड़ेसे ढँका और एक थालमें, घीमें तर पचासों बत्तियाँ जला दीं। इसके बाद उन्होंने कुछ जप किया और कुछ श्लोक पढ़े। तब उन्होंने एक जलती बत्ती उठायी, उसे रमाकान्तके सिरके पास घुमाया और जोरसे हाँड़ीमें पटक दिया। यही क्रम चला और जब १०-१५ बत्तियाँ रह गयीं

तो उन्होंने उन सबको एक साथ उठाया और रमाकान्तके सिरके पास घुमाकर अपने मुँहमें डाल लिया और उन्हें खा गये । तब वे रमाकान्तके माथेपर मंत्र पढ़कर फूँक मारने गये । रमाकान्तने चटाकसे उनके गालपर एक करारा चपत मारा । तान्त्रिकजी गाल सहलाते पीछे हटे और रमाकान्तके भाईसे कहा—कल थोड़ी लाल मिर्च और एक रस्सी रखियेगा । इसे बाँधकर धूनी दूँगा । सात दिनोंमें मैं इसको भगा दूँगा ।

रमाकान्तके भाईने उन्हें ७।) दिये और वे हाँड़ी लेकर चले गये ।

उनके जानेके बाद दर्शकोंमें बातचीत होने लगी । जलती बत्तियाँ खानेपर सभी चकित थे ।

रातको सोने जानेके पहले रघुनाथने रमाकान्तके कमरेमें झाँका । रमाकान्तने उन्हें सङ्केतसे बुलाया । रघुनाथ पास गये ।

रमाकान्तने उनका हाथ पकड़कर पास बैठाया और कहा—मैं बाँसबरेलीका ब्रह्मदैत्य हूँ, तुमको मालूम है ?

रघुनाथने भीत भावसे कहा—सुना है ।

ब्रह्मदैत्यने कहा—मैं ६ महीने रहूँगा । पर, तुम कहो तो कल ही चला जाऊँ ?

रघुनाथने कहा—आपकी बड़ी कृपा है ।

ब्रह्मदैत्य बोले—तुम्हें एक काम करना होगा । कल जब तान्त्रिक मुझे बाँधने आवेगा, तब मैं उसपर टूट पड़ूँगा । तुम उसके हाथ पकड़ लेना और जब मैं कहूँ कि 'अब मैं जाता हूँ' और गिर पड़ूँ तब समझ लेना कि मैं गया । इसके बाद तुम धूनी न देने देना क्योंकि मैं तो रहूँगा नहीं, कष्ट तुम्हारे भाईको होगा । और, खबरदार, यह सब किसीसे कहना नहीं ।

रघुनाथने शपथ ली ।

दूसरे दिन हाँड़ीवाली प्रक्रिया करनेके समय रमाकान्त स्थिर भावसे सोया रहा। उसके बाद तान्त्रिकजी रस्सी लेकर रमाकान्तके हाँथ बाँधने बढ़े। सहसा ब्रह्मदैत्य उठकर तान्त्रिकजीपर टूट पड़ा और इन्हें अन्धाधुन्ध मारने लगा। उसने तान्त्रिकजीके केश पकड़ लिये, झकझोरकर उन्हें गिरा दिया और लात मुक्कोंकी वर्षा शुरू कर दी। रघुनाथ तान्त्रिकजीके हाथ कसकर पकड़े हुए था। तान्त्रिकजी चिल्ला रहे थे, ब्रह्मदैत्य उनसे भी ज्यादा चिल्ला रहा था—ब्राह्मणको ठगने आया है! ४९।।) मुझमें ले गया! तेरा बाप भी तान्त्रिक था!

अन्तमें ब्रह्मदैत्यने उन्हें छोड़ दिया और हाँफता हुआ खाटपर जा बैठा। तान्त्रिकजीने छूटते ही ब्रह्मदैत्यके हाथ-पैर बाँध डाले और रघुनाथसे अत्यन्त क्रुद्ध होकर कहा—तुमने मेरे हाथ क्यों पकड़े! जानते हो ब्रह्म-दैत्यका आरम्भ हुआ, कहीं मेरा गला ही घोंट देता तो!

रघुनाथने अत्यन्त चकित होकर कहा—मैं तो रमाकान्तके हाथ पकड़े था।

तान्त्रिकजीने अविश्वास-भरी दृष्टिसे उन्हें देखते हुए कहा—मैं झूठ बोलता हूँ! खैर।

तान्त्रिकजीने अँगीठीमें लाल मिर्च डाली और खाटके नीचे रखकर रमाकान्तका सिर पकड़कर उसपर झुकाया और मन्त्र पढ़ने लगे।

ब्रह्मदैत्य चिल्लाने लगा—मैं जाता हूँ, मैं जाता हूँ।

और तब रमाकान्त शिथिल हो गया। रघुनाथने झपटकर अँगीठी उठा ली और खाँसते हुए उसे बाहर ले गये और उसपर एक लोटा पानी डाल दिया।

रघुनाथने कहा—ब्रह्मदैत्य तो गया।

तान्त्रिकजीने कहा—हाँ, अभी गया, फिर आ जायगा। अँगीठी

न उठाते तो मैं कबूल करा लेता कि फिर कभी न आवेगा। लीजिये, मैं जा रहा हूँ। अब ५००) लेकर ही आऊँगा।

तान्त्रिकजी जोरसे पैर पटकते हुए चले गये। हाँड़ी भी न ले गये।

थोड़ी देर बाद रमाकान्त उठ बैठे। उन्होंने अपना माथा दबाया, दर्शकोंको ओर देखा और पूछा—मैं कहाँ हूँ?

रघुनाथने कहा—घरमें।

तुम कब आये?

कल।

रमाकान्त पुनः लेट गये और थोड़ी देरमें सो गये।

× × ×

रातको ११ बजे रमाकान्तकी आँखें खुलीं। उन्होंने देखा—रघुनाथ पास ही बैठे हैं। रघुनाथ पास आये।

रमाकान्तने पूछा—सब लोग सोये हैं?

हाँ।

थोड़ा दूध पिला सकते हो?

हाँ।

दूध पीकर रमाकान्तने पूछा—तान्त्रिकको मजेकी चोट लगी कि नहीं? मैं तो मारते-मारते थक गया था।

रघुनाथ उसकी ओर देखने लगे।

रमाकान्तने कहा—यह सब नाटक था। असली बात इतनी ही थी कि मुझे ज्वर आया था। मैंने उसे दबा लिया।

रमाकान्तने सिरहानेकी तोशक उठाकर एक छोटी शीशी निकाली। उसे रघुनाथके हाथमें देकर कहा—ये कुनैनकी गोलियाँ हैं। मेरे बुखार में कुनैन खानेसे वह उतरता नहीं, वह तो अपने ही होगा।

रघुनाथ चकित होकर देखने लगे।

रमाकान्तने कहा—ब्रह्मदैत्यका नाटक अभी चलता, पर इस तान्त्रिकने कल ही १॥) ले लिये ! इस हिसाब से सात दिन भी लेता तो मेरा कितना रुपया निकल जाता ! पर मैंने मारा खूब ! १॥) की कसर निकाल ली।

रघुनाथ ने कहा—तुम बहुत दुष्ट हो। लेकिन भाभी तो बहुत दिनों-तक भड़केंगी।

रमाकान्त—उसकी चिन्ता मत करो। वह तो पी० एच-डी० भी नहीं है। अब एक काम करो। हाँडीमेंसे रुपये निकाल लो और हाँडी धीरेसे ले जाकर किसी मोहल्लेवालेके दरवाजेपर रख आओ।

ब्राह्मी-कल्प

फर्म घासीराम टनटनदास चमरियाका नाम आपने अवश्य सुना होगा। ये जगद्विख्यात व्यवसायी हैं। ये चीनमें चूहे भेजते हैं, जापानमें जिंक आफ सल्फेट भेजते हैं, अमेरिकामें अशोकारिष्टके पार्सल प्रेषित करते हैं, फ्रांसमें बन्दर भेजते हैं, इङ्गलैण्डमें आम भेजते हैं और अफ्रीकाको अचारसे पाटते हैं। तात्पर्य यह कि कोई देश या मनुष्य कोई चीज चाहे और फर्म घासीराम टनटनदास न दे सके, यह हो नहीं सकता। १००) लगाकर १२५) पा सकनेके सब व्यवसाय इस फर्मको पसन्द हैं।

इस फर्मके संस्थापक श्रीमान घासीरामजी मरुभूमिके निवासी थे; अतः वे तीन बातें स्वभावतः सह सकते थे—भूख, प्यास और गाली। तीन बातें स्वभावतः कर सकते थे—आँखोंमें धूल झोंकना, बालूमेंसे पानी निकालना और लम्बी यात्रा। मरुभूमिके होनेके कारण तीन गुण उनमें और थे—वे मोटी-से-मोटी चीज खा सकते थे, पतली-से-पतली पी सकते थे और कम-से-कम कपड़ोंसे काम लेते हुए, जमीनपर सो सकते थे। व्यवसायीमें ये ही गुण होने चाहिएँ।

अब हम पाठकोंको जरा पीछे ले जावेंगे। इससे उन्हें कृतज्ञ ही होना चाहिये। [illegible] रहे हैं। [illegible] हमेशा आगे ही देखना बुद्धिमानोंकी बात है।

हमें यह नहीं बतलाना है कि ये घासीरामजी किस खेतकी मूली थे—इस समय घासीरामजीकी झोपड़ी एक गाँवमें ही थी और [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] एक मूली-जितना भी नहीं था—यह आप

जानते ही होंगे, और न जानते हों तो किसी मन्दिरके फाटकपर खड़े हो जाइये। मन्दिर ऐसा हो जहाँ आपको अन्य किसीके जानेकी आशङ्का न हो। वहाँ ध्यानसे देखनेसे आपको मालूम होगा कि मन्दिरकी किसी दीवारका कुछ पलस्तर नया है और फाटकके बगलकी दीवारमें सङ्गमरमरका एक चौकोर टुकड़ा दिखलायी पड़ेगा। उसपर यह खुदा होगा-----

> जीर्णोद्धार-संवत्......
>
> फर्म घासीराम ठनठनदास चमरिया
>
> ....निवासी।

घासीरामजीके वंशमें और भारतीय व्यवसायके इतिहासमें सन् १८६४ चिरस्मरणीय रहेगा। उसी वर्ष घासीरामजी घरसे निकले। उनके वंशके चारणोंने घासीरामजीकी उपमा राजा भगीरथसे दी है। हम उन्हें भगीरथसे भी बड़ा मानते हैं। वे अपनी लक्ष्मी-गङ्गा वहाँसे मरुभूमितक लाये, जहाँ भगीरथकी गङ्गा जाकर गिरी हैं और उन्होंने स्थान-स्थानपर बाँध भी बाँधे। उनके वंशज भगीरथके वंशजोंसे अधिक योग्य निकले। उन्होंने उनकी मरम्मत की और नये बाँध बाँधे और बाँधते जा रहे हैं!

मानव-जीवन बहुत थोड़ा है, शरीर-कुटीरसे प्राण-पक्षिक कब चले जायँ, कुछ ठिकाना नहीं---अतः पाठकोंकी सुविधाका खयालकर हम संक्षेपमें ही कहेंगे।

घासीरामजी सन् १८६४ में १८ वर्षके थे। वे घरसे चल पड़े---कमाने। विवाह उनका हो चुका था---तब वे ४॥ वर्षके थे। महाकवि 'रत्नाकर'-वर्णित 'अनङ्गके तुरङ्ग' को उन्होंने दूरसे ही देखा था, आसक्ति

उत्पन्न न हुई थी। घरमें जितना कष्ट था, उससे अधिक विदेशमें होनेका भय न था।

वे एक कम्बल और एक लोटा लेकर चले थे। कम्बलके ऊपरके बेकार रोयें झड़ चुके थे। वे जयपुर होते हुए दिल्ली चले। जयपुरसे विदा होते समय उन्होंने हसरत भरी निगाहोंसे मरुभूमि और उसके जहाजोंको देखा। तब उन्होंने लोटा तरबूजके जलसे भर लिया और कम्बलमें स्वच्छ, चमाचम बालू बाँध लिया।

दिल्ली आकर उनका बोझ हलका हो गया। उनका बालू सेठोंकी कोठियोंमें और हकीम खुदाबख्शके घर विराजमान हो गया। सेठ लोग उससे देशी स्याहीके अक्षर सुखाने लगे, हकीम साहब उसे मरीजोंको खिलाने लगे। बालू बेचकर घासीरामजीको ३।।।=) मिले। तरबूजके जलके बदले एक व्यापारी उन्हें दिल्लीतक एक वक्त खिलाता आया था। जन्मभूमिकी प्रशंसा [illegible] घासीरामजी [illegible] गये।

१।।।=) लेकर घासीरामजी काशी आ गये। यहाँ उन्हें अपना नामराशि एक व्यापारी मिला जिसकी [illegible] दुकान थी। घासीरामजीने इससे एक शिक्षा प्राप्त की। थोड़ेसे पैसोंसे ऐसा व्यापार करना, जो बहुत लाभप्रद हो।

घासीरामजीने काशीमें दो व्यापार शुरू किये। संस्कृतके विद्यार्थियों और [illegible] से पानीके [illegible] खरीदकर सईसोंके हाथ बेचने लगे। [illegible] व्यापार [illegible] था। सायङ्काल वे एक खाली [illegible] लेकर [illegible] लगे। वहाँ [illegible], [illegible] पर [illegible], उनका [illegible] वे [illegible] थे और [illegible] मिलाकर, गलियोंमें घूमकर

बेचते थे । इन दोनों व्यापारोंसे उन्हें महीनेभरमें ६१)॥ प्राप्त हुए । अवश्य ही यह 'नेट प्राफिट' था ।

काशीकी सेवा घासीरामजी ६ ही महीने कर सके । इसके बाद वे बङ्गालकी ओर बढ़े । उन्होंने तीन चीजें साथ लीं—(१) अपने एक ग्राहकका इस आशयका प्रमाणपत्र कि घासीरामने हमें ६ महीने शुद्ध तेल बेचा, (२) विश्वनाथजीका चन्दन, ६ महीनोंमें एकत्र किया हुआ और (३) १२ बोतल गङ्गा-जल ।

एक मुट्ठी चन्दन और एक बोतल गङ्गाजलके प्रतापसे वे सब प्रकार-के ताप सरलतासे सहते हुए, बिना पैसा खर्च किये, बङ्गाल पहुँच गये । यहाँ एक देहाती कसबेमें उन्होंने डेरा जमाया और वहाँके सब प्रसिद्ध व्यक्तियोंका घर वे चन्दन-गङ्गाजलकी सहायतासे पहचान आये और प्रशंसा-पत्र दिखला आये । एक बार देख लेनेपर वे कुछ भी नहीं भूलते थे—इस विषयमें कुत्तोंकी शक्ति उनसे बहुत कम थी । घासीरामजीकी आकृति, भाषा और व्यवहारके कारण संसारके हास्यमें बहुत वृद्धि हुई—यह कसबा संसारमें ही था ।

इसके बाद घासीरामजीने व्यवसाय प्रारम्भ किया और शुरू करनेके दिन उन्होंने '[illegible]', '[illegible]' और '[illegible]'का अर्थ जन्मभर न समझने-की शपथ ली ! हम भी संक्षेपमें कहनेकी शपथ-सी कर चुके हैं, अतः यही कहें । १० सालमें घासीराम 'सेठ' हो गये, बङ्गाली जमींदार उनके घर आकर हुक्का पीने लगे और हैंडनोट लिखनेका अभ्यास करने लगे ।

इस बीच उन्होंने घर बराबर रुपया और चिट्ठियाँ भेजी थीं, जिनके उत्तर लेकर उनके बहुतसे रिश्तेदार आये थे और वहीं बस गये थे । वे ही उनकी पत्नीको भी लेते आये थे और घासीरामजीने [illegible]

महिमा भी पूरी तौरसे समझ ली, जब उन्हें अनायास ही कई पुत्र भी हो गये।

सेठ घासीराम यातायातके लिए वहाँ ऊँट रखना चाहते थे, पर जहाँके पञ्चतन्त्रके टीकाकार 'उष्ट्र'का अर्थ 'कश्चित् पक्षिविशेषः' लिखते हों, वहाँ उनकी यह आशा कैसे पूरी हो सकती थी ?

इसके बाद आया सन् १९१४। दो वर्ष पहलेसे ही सेठजी १९१४ की अगवानीके लिए धोती कसे बैठे थे—अब उन्हें तोंद निकल आयी थी। सेठजीने गद्‌गद होकर अगवानी की और विदाई की रोते हुए। १९१४ भी उन्हें याद रखेगा ! अगवानीकी प्रसन्नतामें सेठजीने अपना सारा गोदाम बेच डाला, तब औरोंके गोदाम बेच डाले; लोहा भी बेचा लकड़ी भी, तेल भी बेचा तेलहन भी, दूध भी बेचा गाय भी, गधे भी बेचे घोड़े भी, सोना भी बेचा बालू भी, यहाँतक कि आदमी भी बेचे—स्त्रियाँ तो किस खेत की मूली थीं। कुशल यही हुई कि उन दिनों वे अपनी पत्नीको एकदम भूल गये थे।

सेठ घासीरामजीने हजारों नामोंसे कारोबार किया था। १९१९ में वे सब गद्दियाँ टूट गयीं, बहुतोंका दिवाला निकल गया; पर न-जाने किस युक्तिसे सबका रुपया सेठजीके यहाँ चला आया, जैसे सब नदियोंका जल समुद्रमें चला आता है और अन्तमें 'एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म'की तरह केवल एक फर्म रह गया—घासीराम टनटनदास चमरिया।

इसी वर्ष उनके जन्मपत्रमें सनीचर साढ़े साती हो गया, राहु व्यय भावमें चले गये और गुरुपर केतुकी पूर्ण दृष्टि पड़ने लगी। उस समय उनके पुत्र अनेक थे ! उसका फल भी प्रकट हुआ।

[illegible] ग्रहोंके पक्षोंने उन्हें [illegible] आपको एक चिट्ठी लिखकर [illegible] किया और सब उजाड़ माल बेचनेका अभियोग लगाया ! सेठजीने

इसका वह उत्तर दिया जो सर तेजबहादुर सप्रू या भूलाभाई देसाईको भी न सूझता। उन्होंने कहा—कोई तो बेचता ही, अतः मैंने बेचा तो क्या? मेरे घर पैसा आना आप लोगोंको क्यों खलता है?

पञ्च निरुत्तर हुए, पर दूसरा अभियोग लगा।—तुमने चर्बी मिलाकर घी बेचा। हिन्दुओंको धर्मभ्रष्ट किया।

इसका उत्तर सेठजी न दे सके। उनपर २० लाख रुपया जुर्माना हुआ। सेठजी उसे स्वीकारकर लौट आये।

अपने पुत्र टनठनदास, पूर्णमल और जुहारमलसे परामर्श करके सेठ घासीरामने काशीमें एक पाठशाला और क्षेत्र खोलनेका निश्चय किया। इसके बाद ही उनकी वहीमें 'घासीराम टनठनदास नामरिया संस्कृत पाठशाला व क्षेत्र'के नाम २० लाख रुपया जमा हो गया। काशीमें ३॥ लाख रुपयोंसे ६ तल्लेका एक मकान सड़कपर खरीदकर उसपर साइनबोर्ड झुला दिया गया। मकानके नीचेके तीन तल्ले किरायेपर उठा दिये गये—पाठशालाके हिसाबमें ही वह रुपया जमा होगा। चौथा तल्ला खाली रखा गया—मालिकोंके ठहरनेके लिए। अन्तिम दो तल्लोंमें क्षेत्र और पाठशाला हो गयीं। ८ विद्यार्थी और एक मुनीम रख दिया गया। दिनमें ३–४ पण्डित आकर पढ़ाने लगे। इनमें से कोई साहित्य-दर्शनाचार्य था, कोई वैयाकरण-व्याघ्र, तो कोई वेदान्त-वितुण्ड। सभी अपनेको प्रधानाध्यापक लिखकर इतने सन्तुष्ट थे कि २०) रुपयेमें ही अपना काम चला लेते थे और ७५) की रसीद हर महीने मुनीमको दे देते थे।

इस पुण्यकर्मकी समाप्तिके कुछ महीनों बाद सेठ घासीराम चल बसे। उनके शत्रुओंका कथन है कि पाठशाला बनवानेके शोकमें वे मर गये, पर हम यह न मानेंगे। कारण यह कि उनका [illegible] [illegible] था और है; पाठशालाके नाम उसकी रजिस्ट्री नहीं हुई। पाठशालामें

मकान भी ठनठनदासके नामसे खरीदा गया—पाठशालाके नाम नहीं। दूसरे इस कामसे सेठजीको अनेक सुविधाएँ प्राप्त हुई थीं।

१—२० लाख रुपयोंपर इनकम टैक्स न देना पड़ता था।

२—ये रुपये उनके व्यवसायमें लगे थे। उनपर ३) सैकड़ा सूद मूलमें जमा करके, अधिक आय बिना बहीमें लिखे, तिजोरीमें चली जाती थी।

३—इस बहाने काशीमें एक मकान हो गया और ठहरनेकी जगह हो गयी।

४—दूर-दूरतक कीर्त्ति फैल गयी।

५—पण्डित नामक वन्दीजन मुफ्तमें प्राप्त हुए।

६—मुनीम और विद्यार्थी नामक सेवक भी सेंतमें मिले जो [illegible] अगवानी करने और विदा करने जाते थे।

७—मुनीमजीके जरिये काशीका बाजार-भाव रोज मालूम होता था और मुनीमजी जरूरत पड़नेपर बनारसी साड़ी, लँगड़ा आम, अमरूद वगैरह भेजा करते थे। आदि, आदि—

अतः हम सेठजीके शत्रुओंको झूठा समझते हैं। शत्रु सदा झूठे होते ही हैं।

सेठ घासीरामजी मरनेके बाद कहाँ गये होंगे, इस बारेमें भी तरह-तरहके मत हैं, पर हमें उनसे कोई प्रयोजन नहीं। उनके पुत्रों और पौत्रोंने उनकी [illegible] थी। अपने गाँव और उनके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible], बचा हुआ सब ही [illegible] [illegible] [illegible]

और तज्जातीय नाना पदार्थ भी टी-पार्टियोंमें समाप्त कर दिये, जो बचे हुए थे; जो कम्बल और धुस्से आदि विलायती कम्पनियोंने 'रिजेक्ट' (अस्वीकृत) कर दिये थे, उन सबको बड़ी उदारतासे ब्राह्मणोंको दे डाला।

सेठ घासीरामके पौत्रोंने भी बहुत दरियादिलीसे काम लिया। वे कलकत्ते गये—लोअर चितपुर रोडके और आगेतक; और वहाँ सुगन्धवाला; डौली मेन, वासना मिस्त्रिर आदि अनेक अबलाओंको ईयररिंग, नोजपिन, जार्जेटकी साड़ियाँ आदि देकर सन्तुष्ट किया। ये अबलाएँ पूर्णतः इनपर और इनके मित्रोंपर अवलम्बित थीं।

ये पौत्र स्वास्थ्यका सदा ध्यान रखते थे। मेद-वृद्धि-कर घी, दूध या मलाई न खाते थे। टोस्टके साथ नमकीन मक्खन और शीघ्र पचने वाले कुछ पदार्थ खाते थे। घरसे टहलते हुए आफिसकी ओर जाते थे और १३६ कदम चलनेके बाद कारमें बैठ जाते थे। प्यास लगनेपर जौके सारसे युक्त वह पुष्टिकर पानी पीते थे, जिसे अंग्रेजीमें 'बियर' कहते हैं। भाँगसे घृणा थी—उसमें ५ प्रतिशतसे अधिक अल्कोहल होता है।

इनमें भी एक पौत्र बहुत बुद्धिमान् है। उसका मत यह है कि पाठशालाके स्थानपर अस्पताल खोला जाय—क्योंकि देशको जितनी जरूरत चिकित्साकी है, उतनी पाठशालाकी नहीं। आयुर्वेदपर उसकी श्रद्धा नहीं है। वह कहता है कि वैद्यकी बोली सुनकर ही रोगीके प्राण काँप उठते हैं, पर नर्सके दर्शनमात्रसे रोगीके सिरपर बर्फ रखनेकी जरूरत नहीं पड़ती। पुनश्च, वैद्यमात्रको पायरिया होता है और रोगियोंपर उसका बुरा असर पड़ता है।

अब हम सेठजी और उनके वंशजोंका वर्णन समाप्त ही कर दें—पर पाठक यह न समझें कि उन लोगोंसे पिण्ड छूट गया। 'आत्मा वै

जायते पुत्रः' यदि सत्य है, तो सेठ घासीराम नये रूपोंमें वर्तमान हैं और जबतक उनका वंश है, तबतक रहेंगे।

× × ×

इतनी बातें सुनते-पढ़ते आपका माथा गरम हो गया होगा——वह इस कारण खराब न होने पावे, इसकी नैतिक जिम्मेदारी इस विवरणके लेखकपर है; अतः माघ मास है और मेघ छाये हुए हैं। समय——२ बजे रात, और स्थान——'फर्म घासीराम ठनठनदास चमरिया संस्कृत पाठशाला व क्षेत्र' का छटा तल्ला।

एक कमरेमें अध्यापक-विहीन पूरी पाठशाला——अर्थात् आठों विद्यार्थी थे। वे गरुड़ासनसे बैठकर, हिल-हिलकर, मण्डूक-महिष-बलीवर्द-स्वरमें अपने-अपने पाठ्य-ग्रन्थ घोख रहे थे। एक विद्यार्थी उस स्वरमें घोख रहा था जिसमें संगीतके ऋषभ नामक स्वरका उच्चारण एक जीव-विशेष करता है। उनके इस परिश्रमके दो कारण थे। एक तो यह कि परीक्षा सन्निकट थी। दूसरा यह कि एक प्रतिवेशीने अनिद्रा-रोगका कारण इनको बताकर, अदालतमें अर्जी दी थी कि या तो पाठशाला वहाँसे उठा दी जाय, या ये हटा दिये जायँ; पर अदालतने प्रतिवेशीको ही हट जानेकी राय दी थी। इसीकी प्रसन्नतामें इन लोगोंने सात रात यह पुण्यानुष्ठान करनेकी ठान ली थी। आज तीसरा दिन था।

एकाएक कुन्दन मिश्र मण्डूक-प्लुतिसे त्रिलोचन शर्माके पास आ गये और शर्माजीके कानके [illegible] बीड़ी निकालकर उसमें अग्नि-संयोग किया। शर्माजीका मिश्रजीसे [illegible] था।

इसी समय अर्थात् जब मिश्रजी-शर्मा-द्वयने धूम्र-निष्पादन कर रहे थे, [illegible] पूछा——[illegible]! [illegible] लिखा है कि

रघु राजाको यवनी-मुख-पद्मोंका मधु-मद सहन नहीं हुआ ; तो क्या यवनानियोंके मुख बहुत लाल होते हैं ?

दन्तासुरजीके बोलनेके पहले ही मिश्रजी बोले—ओ गरुड़ध्वज ! वैयाकरणोंके समक्ष अशुद्ध शब्द मत भाषण किया कर ! यवनकी स्त्री यवनी और उसकी भाषा यवनानी होती है । समझा ! 'यवनाल्लिप्याम्' ।

दन्तासुरजीने कहा—परसाल यहाँ जो प्रदर्शनी हुई थी, उसमें मैंने कई यवनियोंके मुँह देखे थे—वे तो लाल नहीं थे । पर जो यवन राजा होते होंगे, उनकी स्त्रियोंके होते होंगे ।

कुन्दन मिश्रने कहा—तू तो गरुड़ध्वज ! न्याय पढ़के शुष्क हो गया ! साधारण बुद्धि भी नहीं रही । वेदान्तीसे कालिदासकी बात पूछने गया ।

गरुड़ध्वजने कहा—शर्माजी, तो तुम्हीं कहो । तुम तो साहित्यकी टाँग तोड़ते हो ।

शर्माजीने कहा—एक तो मधु-मद पद कहाँ है । उसका अर्थ यह है कि शराब पीकर उनके मुख लाल थे । दूसरे यह कि आजकल लोग कालिदासकी उस उक्तिका यह अर्थ करते हैं कि राजा रघुको मुँहकी लाली सहन नहीं हुई, अर्थात् उन्होंने उनके पतियोंको मारकर उनके मुँह पीले कर दिये । पर यह अर्थ नहीं है । अर्थ यह है कि राजा रघुने उन यवनियोंका हरण कर लिया और जिन यवनोंने बाधा दी उनको मार डाला ।

अब सियारामसे न रहा गया । उसने घोखना बन्द करके कहा—तुम साहित्य पढ़नेवाले अर्थका अनर्थ करते हो ।

शर्माजीने उत्तर दिया—तुम अपना धर्मशास्त्र घोखो ! अर्जुनने उलूपीसे विवाह किया था कि नहीं ? वह थी नागकन्या अर्थात् [illegible] ।

सियारामने कहा—शिव ! शिव ! क्या बकते हो ! राजा रघु और यवनी ! यह अर्थ कहाँसे आया ?

शर्माजीने कहा—यह तो कालिदासका सीधा व्यंग्य है। कहीं-कहीं तो व्यंग्यसे भी व्यंग्य होता है।

अमोलचंदसे भी न रहा गया। उन्होंने कहा—मल्लिनाथकी टीका देखो। वह प्रामाणिक है—'माघे मेघे गतं वयः'। (मल्लिनाथकी उम्र माघ काव्य और मेघदूतकी टीका लिखनेमें ही बीत गयी।)

शर्माजीने कहा—पर, यहाँ तो रघुवंशकी बात है !

अमोलकने कहा—तात्पर्य तो प्रामाणिकतासे है !

शर्माजी बोले—'माघे मेघे' का अर्थ भी जानते हो ? उसका अर्थ यह है कि माघ मासमें, मेघ छाये हुए थे; ऐसे समय मल्लिनाथ मर गये।

सियारामने कहा—तुम नरकमें जाओगे, नरकमें !

वेदान्त पढ़नेवाले दन्तासुरजी बोले—तुम सब मिथ्या वाग्विलास कर रहे हो।

कुन्दन मिश्रने उत्तर दिया—मिथ्या कैसे ? शब्द-ब्रह्मकी ही उपासना तो हो रही है !

इस समय भी हर्षराम अपनी मीमांसाकी पोथीपर झुके हुए थे और भवानीदत्त भी पोथना खोलकर एक श्लोकका निरीक्षण कर रहे थे। यह देखकर इन लोगोंने अपना वाग्विलास बन्द किया, कुछ इशारेबाजी हुई और अमोलचन्द एवं सियाराम उठे। अमोलचन्दने हर्षरामको बाहोंसे पोथी उठा ली और सियारामने भवानीदत्तको, कन्धे पकड़कर, पीछेकी ओर खींच दिया। अब भवानीदत्त उठकर बैठे तो भोजपत्र गायब था।

भवानीदत्त घबराकर उठे और अँगोछा सम्हालते हुए, क्रुद्ध होकर बोले—ऐसी दिल्लगी किसी कामकी नहीं है। खामख्वाह किसीको तंग करना ! लाओ इधर !!

पर, इस समय सब लोग गरुड़ासनसे बैठकर, अत्यन्त दत्तचित्त होकर घोख रहे थे। सबके नेत्र भी बन्द थे।

भवानीदत्तने सबकी पुस्तकें उलट-पुलटकर देखीं, सबके बिस्तर उलट डाले—भोजपत्र न मिला। उनकी विकलता बढ़ती जाती थी। अन्तमें वे दन्तासुरके पास गये। कहा—देखो, बता दो ! मैं कल तुम्हें नया गुड़ खिलाऊँगा।······अच्छा, एक गुलाबजामुन !

दन्तासुर मीठेके प्रेमी थे। पर, गुड़से इतनी जल्दी गुलाबजामुन सुनकर उन्होंने और कुछ देर धैर्य रखना ही उचित समझा।

भवानीदत्त अब अमोलकचन्दके पास आये, बोले—देख भैया, दे दे ! मैं कल एक कुण्डली तुझसे दिखवाऊँगा, मेरे गाँवके आदमी आये हैं। आठ आने दिलाऊँगा।

पर ज्योतिर्विद् अमोलकचन्द मिनके भी नहीं। अब भवानीदत्त पैर पसारकर बैठ गये, कहने लगे—कौन साला अब यहाँ रहेगा। कल ही चला जाऊँगा। काशीमें क्या क्षेत्रोंकी कमी है, कि लाट साहबकी सिफारिश बिना भरती नहीं होगी !

अब शर्माजी बोले—क्या एक कागजके टुकड़ेके लिए जान दे रहे हो !

भवानीदत्तने स्वर बदलकर कहा—कागजका टुकड़ा ! वह आशी-कल्प है ! कागजका टुकड़ा ! बेताल भट्टका पता जानते हो ? उनके यहाँके एक लड़केको पूरे ३३ दिन भांग पिलाकर पास किया है।

पूरी पाठशालाने भवानीदत्तको घेर लिया। भक्तकृष्णने पूछा—कौन बेताल भट्ट ?

भवानीदत्तने कहा—बेताल भट्टको बस, तुम्हारे जैसे गधे ही नहीं जानते। काशीमें १३६ वर्ष पहले एक भट्ट थे। उन्हें बेताल सिद्ध था। एक बार काशीमें ऐसा हुआ कि २४ घण्टे बीतनेको आये, पर कोई मुर्दा नहीं आया। डोम लोग धर्मशास्त्रियोंके यहाँ पहुँचे और कहा कि ऐसा कभी नहीं हुआ था, यह अनर्थकी बात है। धर्मशास्त्रियोंने सब पोथी-पत्रे देखे, पर कोई विधान न मिला। इधर, यह बात स्पष्ट ही थी कि कोई अनर्थ होनेवाला है। महाश्मशानमें २४ घण्टे मुर्दा न आवे!

अन्तमें सब पण्डित भट्टके यहाँ गये। भट्टने बेतालका आवाहन किया और कुछ देर चुप रहकर कहा—बेतालकी आज्ञा यह है कि आप लोगोंमें जो सबसे बड़ा पण्डित हो, आज उसीकी बलि दी जाय।

यह सुनते ही सब पण्डित प्राण लेकर भागे। डोमोंने रोकनेकी चेष्टा की पर वह व्यर्थ हुई। तब बेताल भट्टने डोमोंसे कहा—तुम लोग जाकर एक चिता लगाओ, आज हमीं जलेंगे।

डोमोंने आँसू बहाते हुए उनकी आज्ञाका पालन किया। बेताल भट्ट आये। वे नंगे बदन थे, गलेमें प्राचीनावीत (उलटा पहना जनेऊ) था, पैरोंमें खड़ाऊँ, हाथोंमें करताल। वे गा रहे थे—वन्दे श्रीबेतालम्,

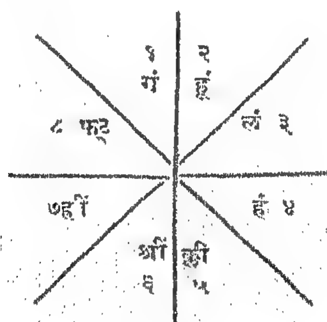
उन्होंने पूरा भजन गाया। उनके पुत्रोंने झुककर प्रणाम किया। उन्होंने कहा—हम जो ब्राह्मी कल्प लिख आये हैं, उसे सुरक्षित रखना। अब हमारा ही वंश सङ्कटके समय काशीका मान रखेगा। महाप्रभु बेताल तुम्हारा कल्याण करें। भाँग जरा कम पीना। हमारा प्रत्येक वंशधर अब बेताल भट्ट कहावेगा। काशीके पण्डितोंको ब्रह्मज्ञान नहीं होगा। मेरा शाप है कि······

इसी समय 'राम नाम सत्य है' सुनाई पड़ा और कुछ लोग एक मुर्दा लिये हुए आए। डोमोंने 'बेताल भट्टकी जय' घोष किया।

वेताल भट्टने कहा——अब इस चितापर इसीको रख दो। साथमें हमारा यज्ञोपवीत, खड़ाऊँ और करताल भी। हम अब घर नहीं लौटेंगे। हम पारमें रहेंगे और सब पण्डितोंसे कह देना कि अगर कोई वहाँ दिखायी पड़ा तो बलि दे दूँगा। अबसे मैं शुद्ध वेताल हूँ।

श्रोता यह कथा सुनकर स्तब्ध हो गये। भवानीदत्तने पुनः कहा——तभीसे कोई पण्डित पार नहीं जाता।

गरुड़ध्वजने काँपते हाथोंसे अपनी बगलबन्दीके भीतरसे भोजपत्र ऐसे निकाला, जैसे सर्प निकाल रहे हों। भवानीदत्तने उसे झपटकर ले लिया। उसपर एक अष्टदल बना था——



देवदत्त

श्रीं ह्रीं क्लीं कमलदलनिवासिनि नीलसरस्वति देवदत्तस्य मुखकमले सहंसं वस वस, मेधां देहि, सिद्धिं प्रयच्छ ऐं।

अमोलकने पूछा——यह क्या है?

भवानीदत्तने उत्तर दिया——यह अष्टदल इसी प्रकार भोजपत्रपर लिखकर साधकको अपने आसनके नीचे रखकर अष्टदलके नीचे लिखा

मन्त्र ५००० बार जपना होगा ।

दन्तासुरने पूछा—यह देवदत्त क्या है ?

भवानीदत्तने कहा—उस स्थानपर साधकका नाम रहेगा ।

कुन्दन मिश्रने पूछा—विधि ?

भवानीदत्तने कहा—माघकी अमावस्याके एक दिन पहले यह जप करना पड़ता है और अमावस्याकी अर्धरात्रिको एक औषध खाकर किसी नदीमें कमरभर जलमें खड़े होकर 'श्रीं ह्रीं क्लीं' मन्त्रको सूर्योदयतक जपना पड़ता है । यह दवा अत्यन्त उग्र है । वह पच जाय तो साधककी स्मृति इतनी प्रबल हो जाती है कि कोई भी ग्रन्थ एक बार पढ़नेसे याद हो जाता है । पर, प्रायः दवा पचती नहीं, वमन हो जाता है । वमनका छींटा यदि शरीरपर कहीं पड़ जाय तो वहाँ कुष्ठ हो जाता है । संभवतः इसीलिए जलमें खड़े होनेका विधान है ।

सियारामने कहा—अमावस्या तो चार दिन बाद ही है !

भवानीदत्तने कहा—मैं तो इस बार करूँगा ।

हर्षरामने पूछा—औषध क्या है ?

भवानीदत्तने उठकर एक कोनेमें रखी एक गठरी खोली । उसमें एक मोटी-सी पुस्तकमेंसे एक कागज निकाला । उसपर यह लिखा था—

"ब्राह्मीकल्प"

शाटल (लोध)	२ तोला
भूतनाश (बहेड़ा)	१ ,,
पूतना (हरीतकी)	३ ,,
गणिका-पुष्प (जुहीके फूल)	७ ,,
नटी (मालकाँगनी)	१/२ ,,

चोच (तज)	२½	,,
अनार्यतिक्त (चिरायता)	१	,,
काकनासिका (कौआठोंठी)	२	,,
नकुलेष्टा (रास्ना)	२	,,
गोस्तनी (दाख)	४	,,
अग्निमुखी (भिलावाँ)	½	,,
विट्खदिर (एक तरहका खैर)	२½	,,
ब्राह्मी	१०	,,

यह औषध एक मात्रा है। एक दिन पहले उपवास करना चाहिये।

भवानीदत्तने कहा—हरद्वारकी ब्राह्मी दो सेर मेरे पास है। बाकी चीजें खरीद चुका हूँ।

कुन्दन मिश्रने विगलित होकर कहा—भवानी भाई! मुझे भी बता दे!

भवानीने कहा—भाई, एक पैसा रोज क्षेत्रसे मिलता है। पिछले श्राद्धोंमें ७) दक्षिणामें मिले थे। नुस्खा लेनेमें प्रायः सब व्यय हो गया। मनोरमाको बन्धक रखकर ४) लाया, तब जाकर काम चला।

कुन्दनने कहा—पैसे मेरे पास हैं। कम होंगे तो कम्बल बेच दूँगा।

दन्तासुरने कहा—मैं भी करूँगा।

धीरे-धीरे सब तैयार हो गये। भवानीदत्तने कहा—दो बातें इसमें नहीं लिखी हैं। एक यह कि दवा घर खाकर 'श्रीं ह्रीं क्लीं' का जप करते हुए नदी-तटपर जाना चाहिए और [illegible] [illegible] होना चाहिए। मौनव्रत सूर्योदय होनेपर ही टूटेगा। दूसरी बात यह कि लौटकर उड़दकी खिचड़ी और दही खाना चाहिए।

त्रिलोचन शर्माने श्रद्धासे गद्गद होकर पूछा—भवानीजी! तुम्हें इस ओर प्रवृत्ति कैसे हुई?

भवानीदत्तने कहा—सेठ घासीराम मरनेके पहले अपने वंशजोंके लिए एक उपदेश-पत्र लिख गये हैं, पहले उसे सुनो। उन्होंने लिखा है—

"(१) पढ़ने-लिखनेमें ब्राह्मणोंने अत्यन्त सूक्ष्म बुद्धिका परिचय दिया है। यदि वे उस बुद्धिका उपयोग व्यवसायमें करने लगेंगे तो मारवाड़ी भूखों मरने लगेंगे। अतः ब्राह्मणोंको सदा व्यवसायसे दूर रखो। इसका सहज उपाय यह है कि उन्हें दान देते रहो, क्षेत्र और पाठशाला खोलते रहो।

(२) ब्राह्मणोंको अँगरेजी और हिसाब न पढ़ने दो।

(३) अँगरेजोंकी सदा मदद करो। हाकिमोंको अपना बाप समझो। उन्हें दावत और चन्दा देते रहो।

(४) अपनी पगड़ी उल्लूकी लकड़ी है, जिसके पैरोंपर रख दोगे, वह उल्लू हो जायगा। इस शस्त्रको सदा साथ रखो।

(५) गम खाना सदा अच्छा है। गाली खानेसे गम खानेकी शक्ति बढ़ती है।

(६) कसरत कभी न करना। इससे खूनमें गरमी आती है और गम खाने की ताकत घटती है। शरीर जितना भी ढीला रहे, उतना अच्छा।

(७) उधार मिलना 'भाग्य' है। उधार खूब लो। जरूरत पड़े तो उधार दो भी। पर, लेने पर ध्यान ज्यादा रखो।

(८) व्यापार कोई खोटा नहीं होता। मन खोटा होता है। उसे बड़ा रखो। जिसमें दो पैसा मिले वही व्यापार है।

(९) देशभक्ति बहुत बड़ी चीज है—पर पैसे से बहुत छोटी। जहाँ पैसेकी बात हो वहाँ देशभक्तिको फटकने भी मत देना। जहाँ पैसेकी बात न हो वहाँ देशभक्ति करो।"

भवानीदत्तने कहा—इसलिये, अब मैं व्यापार करूँगा। शामको मैं कुंजगली में जाता हूँ, दलाली करता हूँ। अभी कुछ नहीं मिलता—बड़े-बड़े धरियार वहाँ हैं। पर, २–३ महीनोंमें २)–२॥) रोज मिलने लगेगा।

सियारामने कहा—मैं पकौड़ी बनाना जानता हूँ।

भवानीदत्तने कहा—कुंजगलीमें खोमचा लगाओ। अपने अध्यापकोंसे तीन गुना ज्यादा लाभ रहेगा।

कुन्दन मिश्रने कहा—अपने लोग मिलकर एक कम्पनी खोलेंगे। पर मक्खन जरूर बेचेंगे।

दन्तासुरने कहा—मक्खन ज्यादा नहीं बिकेगा। पहले ऐसी चीजें बेचो, जिन्हें विद्यार्थी खरीदें।

कुन्दनने कहा—मक्खनकी जरूरत बड़े आदमियोंको बहुत होती है, विशेषतः उन्हें जो रायबहादुरीके फेर में रहते हैं।

हर्षरागने कहा—पहले पुस्तकोंकी दूकान करो।

भवानीदत्तने कहा—जयपुरी साड़ी और मारवाड़ी पगड़ीकी दूकान पहले करनी होगी। मारवाड़ी हमें उल्लू बनाकर रखना चाहते हैं, हम उन्हींसे दूना लाभ करेंगे।

दन्तासुरने कहा—यह पीछे देखेंगे। अभी तो ब्राह्मी-कल्प कर डालो।

* * *

औषध कूटने के लिए सबकी पारी बँध गयी थी। विलोचन शर्माने

कूदते हुए कहा—भवानी गुरू ! यह नकुलेष्टा आदमियोंका क्या हित करती है ? इसे न्यौले खाते हैं न ?

वेदान्ती दन्तासुरने कहा—धर्मशास्त्र गणिकासे दूर रहनेको कहते हैं, और आयुर्वेद उसका सेवन बताता है !

हर्षरामने कहा—यह चोंच भी विचित्र है। इसीके किसी गुणपर मुग्ध होकर तो हिन्दीमें चोंच शब्द नहीं चलाया गया ?

गरुड़ध्वजने कहा—बहेड़ेका नाम भूतावास क्यों है ? बहेड़ेके पेड़पर भूत रहते हैं क्या ?

भवानीने कहा—भूतोंका पता नहीं, पर कलि तो रहा था।

सियारामने कहा—पूरी मात्रा एक बारके भोजन जितनी हो जायगी।

गरुड़ध्वज बोले—इसीसे एक दिन पहले अनशन करनेकी विधि है। गुरुपाक चीजें इसमें कई हैं, जैसे नटी, गोस्तनी।

विलोचनशर्मा ने कहा—मुझे सबसे अन्वर्थ नाम लगा—अनार्यतिक्त। अनार्योंपर बहुत अच्छा व्यंग्य है। अनार्यका अर्थ जानते हो ? जिनकी लड़कियोंसे हम धर्मशास्त्रोक्त विवाह नहीं कर सकते।

आज अनशन था—सबका। दन्तासुरके शून्य उदरमें वायु स्वच्छन्द होकर इधर-से-उधर दौड़ रही थी—जैसे स्टेशन खाली रहनेपर 'शंटिंग' होती रहती है। उसने कहा—और चाहे जो वस्तु शून्य अच्छी होती हो, पर उदर शून्य अच्छा नहीं होता। मेरे पेटमें हवा ऐसे दौड़ रही है, जैसे किसी सुरंगमें रेल।

सियारामने कहा—इतने ही से घबरा गये ! भगवान्‌को ब्रह्माण्ड-भाण्डोदर कहा है। अब उनकी स्थिति समझो ! उनके पेटमें क्या-क्या नहीं हो रहा है ! कहीं रेल चल रही है, कहीं सरकसमें घोड़े उछल रहे हैं, कहीं गधे तुलसी झाड़ रहे हैं, कहीं अखबार छप रहे हैं !

त्रिलोचन शर्माने कहा——ब्राह्मणोंमें भृगुजी बड़े कुल-कलङ्क हुए ! पहले लक्ष्मी ब्राह्मणोंके चरणोंमें पड़ी रहती थीं । भृगुजीने विष्णुजीको लात मारी——सोमरस ज्यादा पी गये होंगे । तभीसे ब्राह्मणमात्र लक्ष्मीको लात खाने लगा ! इसी लिए ब्राह्मणोंके लिए मद्य निषिद्ध कर दी गयी ।

दुर्गाराम बोले——अच्छा ही हुआ, नहीं तो जरा-सा माथा गरम होते ही लाट साहबको लात मारने दौड़ते ! देखो न ! रावण पीने लगा था, सो क्या उपद्रव किये !

अमोलकचन्दने कहा——रातको जप करना है । रात एक ही जगह रहना । किसीको झपकी आयी तो मैं लात मारूँगा ।

भवानीदत्तने कहा——तुम्हारा जप भ्रष्ट हो जायगा ।

अमोलकने कहा——हो जायगा सो हो जाय । पर, मेरे रहते किसी-का कार्य नष्ट नहीं हो सकता ।

दूसरे दिन अर्धरात्रिको पाठशालासे आठों सज्जन निकले । सब लँगोट और उसपर एक अँगोछा पहने और कम्बलकी घोघी मारे हुए थे ।

थोड़ी दूर जानेपर सड़कके एक दूधवालेने इन्हें देखा और चिल्लाया——क्या गुरू ! किसी सेठको फूँकने जा रहे हो ?

किसीने उत्तर न दिया । आगे आकर एक अँधेरी गली मिली । भवानीदत्त अगुआ थे । वे रुके और गलीमें अपना कम्बल बिछाकर गरुड़ध्वजको उसपर लेटनेको कहा । वह कुछ चकराया, पर लेट गया । भवानीदत्तने उसे कम्बलमें लपेटा और चार आदमियोंको उठानेका संकेत किया । अब भवानीदत्त आगे हुए, बीचमें जीवित गरुड़ध्वजका शव और पीछे सियाराम एवं दत्तात्रेय । भवानीदत्तने गरुड़ध्वजका कम्बल ओढ़ा और जुलूस बढ़ाया ।

कई गलियोंसे घूम घामकर ये लोग एक निर्दिष्ट घाटपर आये और एकदम किनारे लाकर गरुड़ध्वजको लेटाया। वह लेटा ही रहा। इन लोगोंने उसे मुक्के मारे, उठाना चाहा पर वह उठा ही नहीं। तब इन लोगोंने उसे उठाया और बड़ी जोरोंसे पानीमें फेंक दिया और साथ ही सब के-सब धमाधम पानीमें कूद पड़े। इसके बाद सब तैर-तैरकर, सीढ़ियोंपर कमरभर पानीमें आकर खड़े हुए और जप करने लगे।

थोड़ी देर बाद घाटके तख्तेपर ८-१० सण्ड-मुसण्ड आदमी आकर बैठ गये। उन्होंने बीचमें एक लालटेन रखी, बगलमें दुःख-भञ्जन अर्थात् तेल पिलायी हुई मिर्जापुरी बाँसकी लाठियाँ। इसके बाद वे बड़ा शोरगुल मचाकर—'लगे यारो' करने लगे; १६ परियोंका नाच होने लगा।

भवानीदत्तके ठीक बगलमें एक नाव आकर रुकी तो उन्होंने हूँ हूँ करके दूर हटानेको कहा। नाववालोंने नाव जरा हटा ली। वे कभी नाव आगे ले आते थे कभी पीछे। उसपर ७-८ आदमी थे।

थोड़ी देर बाद वहाँ १५-२० सिपाही आ पहुँचे, साथमें थानेदार भी थे। कौड़ी खेलनेवाले उठकर खड़े हो गये, अपने-अपने लट्ठ उठा लिये।

थानेदार साहब उनके पास आये। एकके कानमें कुछ कहा और तब सब लोग एकदम गङ्गातटपर चले आये। एकने डपटकर पूछा—के हो रे?

साधकोंको कुछ सन्देह नहीं हुआ। वे जप करते रहे।

तब दूसरा झपट पड़ा—बाहर निकलो!

साधकोंने पीछे देखा, फिर सीधे खड़े होकर जप करने लगे।

थानेदार साहब ने कहा—साले पक्के खूनी हैं ! मारो सालों को !

हर्षरामके कन्धेपर सटीक लट्ठ बैठा। वे 'हाय' करके पानीमें गोता खा गये। पर, तुरत निकलकर किनारेकी ओर बढ़े। पानीसे बाहर वे कन्धा पकड़कर बैठ गये और बोले—तुम्हारा सर्वनाश हो जायगा। ब्राह्मणका जप भ्रष्ट कर दिया।

थानेदारने कहा—जप करते हैं ! किसीका खून करके अभी फेंक दिया, जप करते हैं ! इन सालोंको भी निकालो तो !

पर शेष साधक यह सुनकर काँपते हुए स्वयं ही निकल आये। भवानीदत्त जरा पक्के थे। वे तैरकर पार निकल जाना चाहते थे। जैसे ही गोता मारकर वे कुछ दूरपर निकले, नावपरसे किसीने पीठपर बाँस मारा। भवानीदत्त मूर्च्छितप्राय हो गये। उसी अवस्थामें उन्हें नावपर खींच लिया गया और किनारे लाया गया।

थानेदारने फरमाया—थानेपर ले चलो। यहाँ जाल डलवाओ।

इसके बाद वे कोड़ी खेलनेवालोंकी ओर घूमे। एकसे कहा—पंडाजी शुक्रिया ! आपने बड़े मौकेपर मदद दी। नहीं तो ये निकल भागते। हमारे खुफियाने भी खूब काम किया।

साधकोंको एक ही रस्सीमें बाँधकर थाने पहुँचाया गया और एकाकी कोठरीमें बन्द कर दिया गया।

प्रातःकाल अर्थात् १२ बजे जमादारने थानेदार साहबसे कहा—घाटपर कुछ नहीं मिला।

भीतरसे एक सिपाहीने आकर कहा—हुजूर, सालोंने तमाम कमरा खराब कर दिया ! सब जगह कै और पैखाना !

हुजूरने कहा—उन्हीं हरामियोंसे साफ कराओ।

इतने ही में भीतरसे मुनीमजी निकले। ये साधकोंसे भेंट करके आरहे थे। उन्होंने थानेदार साहबको पूरी घटना सुनायी। अन्तमें कहा—थाल्या सिद्धी करे था। वींको फल पा गयो, ईंब छोड़ द्यो। थारै खोपियाको भरम हो गयो।

तीन-चार दिनोंकी तहकीकातके बाद थानेदार साहबको भी विश्वास हो गया। उन्होंने मुनीमजीको बुलवाया और एकान्तमें कुछ बातें की। मुनीमजीने उनकी जेबमें कुछ जरूरी कागजपत्र रखे और साधकोंको साथ लेकर चले आये। पाठशालामें आते ही उन्होंने साधकोंको अपनी-अपनी चीजें उठाकर तुरत जानेको कहा, जिसमें वे स्वच्छन्द होकर साधना कर सकें।

पाठशालाके मकानपर साइनबोर्ड अब भी झूल रहा है। वही, पुराना साइनबोर्ड; पर ब्राह्मी-कल्पके व्यर्थ होनेके कुफलके कारण उसपरसे 'पाठशाला व क्षेत्र' मानो जादूसे उड़ गया है और उस जगह तरह-तरहके बेल-बूटे दिखायी पड़ रहे हैं।

मालिश

बाबू रामचरित्रसिंह डरते-डरते उस कमरेमें घुसे, जिसमें आसमानकी ओर मुँह किये, पलँगपर एक स्त्री सोई थी। वह गाढ़ निद्रामें थी। बाबू साहब दबे पाँवों पलँगके सिरहाने आकर खड़े हुए और तब झुककर, सोई हुई स्त्रीका मुँह देखने लगे।

पर स्त्रीका, और विशेषतः सोई हुईका वर्णन करना भारतीय शिष्टताके विरुद्ध है। वानर जातिके हनुमानजीको भी रावणकी सोई हुई स्त्रियोंको देखकर यही तत्त्वज्ञान हुआ था। अतः इस परम सभ्य युगके लेखकको तो ऐसा नहीं ही करना चाहिये।

तो, बाबू रामचरित्रसिंहने उस महिलाके खुले मुँहमें पानी डाल दिया। वह घबराकर उठ बैठी और उसने बाबू साहबको देखते ही कहना शुरू किया——

तुम बड़े अशिष्ट हो। पढ़े-लिखे अपण्डित हो। लङ्कामें उत्पन्न होने योग्य हो।

बाबू साहबने कहा——'साहित्यरत्न' होनेका यह अर्थ नहीं कि तुम शुद्ध गालियाँ दो, भले ही वे संस्कृतमय हों।

महिलाने कहा——मेरे पिताजीको तुम्हारा यह आचरण ज्ञात हो जाय, तो वे क्या करें, जानते हो?

बाबू साहब बोले——ईश्वरको धन्यवाद दो कि मेरे पिताजी जीवित नहीं हैं। पहले मैं भी मुँह खोलकर सोता था। एक दिन उन्होंने मेरे मुँहमें एक बर्रे छोड़ दी थी। उस दिनसे मैं जब सो जाता हूँ, तब मुँह आपसे-आप बन्द हो जाता है।

बाबू रामचरित्र सिंहकी धर्मपत्नी मालिनी देवी 'साहित्यरत्न' ने क्रुद्ध दृष्टिसे उन्हें देखा, और तब आँचलसे मुँह और गला पोंछने लगीं।

पतिदेव बोले—तुम मुँह खोलकर सोती हो, यह तुम मानती ही न थीं, वही मैंने आज प्रमाणित किया है। स्त्रीकी त्रुटियाँ सुधारना पतिका कर्त्तव्य है। यह शास्त्रोंमें लिखा है।

पत्नीने कहा—शास्त्र! खूसटोंकी गप्पें शास्त्र हैं।

पति बोले—तुम-जैसी स्त्रियोंके कल्याणका उन्हें बहुत ध्यान था। इसीलिये उन्होंने यह नियम बनाया है कि पत्नी पतिके बाद सोये और पहले उठ जाय अर्थात् पत्नीके दोष पति न देख पावें। इस सभ्य युगके किसी मनोवैज्ञानिकने कभी यह बात सोची है?

पत्नी चुप रहीं।

पति पुनः बोले—मैं उन खूसटोंकी गप्पोंको शास्त्र मानता हूँ। न मानता तो तुम्हें तलाक दे देता। कितनी अशुभ बात है—मुँह खोल-कर सोना।

पत्नी चुप ही रहीं।

पति फिर कहने लगे—विज्ञानकी दृष्टिसे देखो! साँस जोरसे निकलती है और जोरसे भीतर जाती है। साँसें तो गिनी-गिनायी होती हैं, अतः उनका कम उपयोग करना ही अच्छा है। दूसरे, साँस भीतर जाते वक्त, मक्खी या मच्छर भी भीतर जा सकता है।

पत्नीने बहुत क्रुद्ध होकर कहा—तुम्हें अनिद्रा रोग है तो जागो। मुझे क्यों नष्ट कर रहे हो!

बाबू साहबने कहा—अभी तो दस ही बजे हैं, सबेरा होनेमें देर है। मेरा प्रेम देखो। इस युगके पति अपनी पत्नियोंसे ११ बजेके बाद कभी आनन्दित करते हैं?

पत्नी बोली—तुम कृपा ही रखो। जाओ, छतपर टहलो।

पतिदेवने कहा—तुमने तो भवभूतिके नाटक पढ़े हैं। उनमें रामचन्द्रजीने सीताजीके साथ पूरीकी पूरी रातें किस विशिष्ट प्रकारसे वार्तालाप करते हुए बितायी हैं, यह वर्णन भी पढ़ा होगा।

मालिनी देवी बोलीं—उन्हें अयोध्यामें अवकाश न मिला होगा।

पति बोले—इससे उनके प्रेमकी कमी तो साल नहीं होती। आजकलके युवक तो महीनेभरमें ऊब जाते हैं। मैं रघुवंशी हूँ, रामचन्द्रजीका कुछ असर खूनमें है।

मालिनी देवीने सहसा कहा—अरे! मैं अपनी पायजेब तो छतके आलेपर ही भूल गयी हूँ।

पतिदेवने क्रुद्ध होकर कहा—याद न आ जाता तो सुबह बन्दर उठा ले जाते।

पतिदेव उसे लाने बाहर निकले। मालिनी देवीने उठकर भीतरसे दरवाजा बन्द कर लिया और तकिया लगाकर लेट रहीं।

रघुवंशी बाबू साहब लौटे तो पत्नीने कहा—आकर छतपर टहलो।

बाबूसाहब क्रुद्ध होकर कुछ ऐसी बातें कहने लगे जैसी पढ़िता लोग साधारणतया नहीं कहते हैं।

अन्तमें बाबू साहब छतपर जाकर टहलने लगे।

रातके सन्नाटेमें छतपर टहलते हुए सोचने लगे कि मेरे शहरके लोग कितने मूर्ख हैं कि सोये पड़े हैं। अहो! ये अपना कितना अमूल्य समय नष्ट कर रहे हैं! इस समय जागकर ये ताश खेल सकते थे, गाँजा पी सकते थे, दूसरेके धनकी चिंता कर सकते थे, अपने मैले कपड़े धो सकते थे, शीर्षासन कर सकते थे या आपसमें मारपीट तो कर ही सकते थे! आखिर साँस तो गिनतीकी हैं, उन्हें इस तरह, बेकार निकल जाने देना

कितनी खेदजनक बात है! उनके मनमें आता था कि सबको जगा दूँ और कहूँ—अरे मूर्खो! अपना-अपना धर्म करो, मृत्यु तुम्हारी चोटी पकड़े खड़ी है!

नींद कम आनेसे बाबू साहब प्रसन्न हुए। सोचा, अपने साहित्यिक कार्य रातको किया करूँगा। 'तोता मैना' का संशोधन, 'चार यार' पर टीका, 'भूतनाथ' पर भाष्य आदि कार्य आखिर करने ही तो हैं। उन्हें और करेगा भी कौन!

पर, यह भी न हो सका। जब काम करने बैठते थे तब आँखें भारी होकर बन्द होने लगती थीं, सिरमें दर्द होने लगता था। जब पोथीपत्रा रखकर, जल पीकर, दिया गुलकर सोनेका उपक्रम करते थे, अर्थात् सिर और पैरोंके नीचे तीन तकिये लगाकर, चादर ओढ़कर आँखें बन्द करते थे; तब आँखें हल्की होकर खट-से खुल जाती थीं, सिरमें विचार भर जाते थे। हारकर रोशनी करके पुनः साहित्यिक काम करने बैठते थे और पुनः आँखोंपर भारीपन चढ़ बैठता था और रोशनी काटने दौड़ती थी। इसी प्रकार रात बीतती थी।

कई दिनों यही प्रक्रिया हुई तो उन्हें आवेश अर्थात् प्रेत-लीलाका सन्देह हुआ पर उनके नापितने कहा कि शहरमें बिजली लगनेके बादसे भूत रहे ही नहीं। जब इतने छोटे जन्तु या आदमीका ऐसा निश्चय है तब उन्हें न होना लज्जाजनक होता। अतः यह विचार भी मनसे निकाल डाला।

तब वे वैद्यजीके यहाँ गये अर्थात् रोगीकी हैसियतसे गये; वैसे तो रोज ही जाते थे।

वैद्यजीने हाथ फैलाया और दो उँगलियोंसे नब्ज पकड़ी। बीच-बीचमें उनकी उँगली भी नब्ज पर नृत्य करती थी, जैसे पक्के गायक अर्थात् राग रागिनियोंके साधक 'कन' लगाते हैं।

देखकर उन्होंने गम्भीर 'हूँ' किया और कहा —कुछ नहीं।

बाबू साहबने कहा—यह तो मैं भी जानता हूँ कि न मुझे टी० बी० है, न संग्रहणी, न सन्निपात, न कालरा, न डिप्थीरिया, न कारबंकल, और न कोई भयंकर रोग। पर 'कुछ नहीं' गलत है।

वैद्यजीने कहा—सब कुछ हो सकता है? तुम्हें रक्त-चाप हो सकता है; उससे हार्टफेल हो सकता है, या मस्तिष्ककी शिराएँ फट सकती हैं या उन्माद हो सकता है। तुम जीवन्मृत हो सकते हो।

सिंहजीने कहा—जीवन्मृत और जीवन्मुक्त तो एक ही वस्तु है; मेरा भाग्य उतना प्रबल नहीं। पर यह रक्त-चाप क्या है? राम-चाप और कृष्ण-चाप तथा भृकुटी-चाप तक तो मेरी गति है।

वैद्यजीने कहा—यह उन तीनोंसे भयंकर है। यह मनुष्यको ही चाप बना देता है—धनुर्टंकारका नाम सुना है? वह इसी रक्त-चापका परिणाम है।

सिंहजीने कहा—हो सकता है। दंत वीणा और शरीर-वीणाका होना पढ़ा-सुना है। और केवल भृकुटी ही चाप हो सकती है तो पूरा शरीर तो और भी आसानीसे हो सकता है। पर यह है क्या?

वैद्यजीने फरमाया—तुम्हारे जैसे लोगोंका शरीर चाप होनेके गुणोंसे युक्त होता है। खाली बैठे रहनेसे, गरिष्ठ पदार्थ खानेसे, रक्त बढ़ता है और चर्बीके रूपमें परिणत होता है; वह चर्बी रक्तको चाँप देती है और कुछ दिनोंमें शरीरको चाप बना देती है।

बाबू साहब—यह बात तर्कसंगत ज्ञात होती है। पर, उपाय?

वैद्यजी बोले—चापसे ही 'चापना' बना है। इस शब्दपर मैंने बहुत गवेषणा करके एक लेख लिखा है।

बाबू साहब—उसे 'हिन्दुस्तानी' में भेज देना। पर मुझे क्या उपाय बतलाते हो?

उन्होंने कहा—यदि प्राकृतिक चिकित्सा चाहते हो तो पत्थरका कोयला १० मन इकट्ठा करो। तुम्हें लोहेकी जालीपर बैठा कर नीचे पानी उबाला जायगा, उसकी भाप लगनेसे चर्बी पिघलेगी। यह सहन हो जानेके बाद

—तवेपर भूनोगे ?

उन्होंने कहा—नहीं, ईंटके भट्ठेके पास, एक कुर्सीपर बैठाये जाओगे। तुम्हारे हाथ-पैर बँधे रहेंगे।

सिंहजी—प्राकृतिक चिकित्सा मेरे बसकी नहीं है। और कोई उपाय हो तो बताओ।

उन्होंने पूछा—जेल जाने लायक कोई काम कर सकते हो ?

जवाब मिला—अपने आप हो जाय तो नहीं कह सकता।

उन्होंने कहा—तो सिर्फ चार आने खर्च करो, कांग्रेसके सदस्य बन जाओ।

सिंहजी—कांग्रेसने सबको यों ही अपना सदस्य मान लिया है।

वे बोले—तो चवन्नी भी बची। अब तुम कहीं पिकेटिंग करो या कोई गरम लेख लिख डालो।

—पिकेटिंग इस समय बन्द है। लेख लिखे गये हैं, पर कोई सम्पादक छापता नहीं। पत्रकी जमानत जब्त हो जायगी।

उन्होंने कहा—शास्त्रियोंने कहा है, शतं वद, एकं मा लिख। अर्थात् कहो सौ, लिखो मत एक भी। तो देशभक्तिके भाषण कर डालो, जेल चले जाओगे।

आजकल प्रान्तोंमें कांग्रेसी सरकार है, देशभक्तिके भाषणपर पकड़ेगी ही नहीं।

वैद्यजी बोले—मुसलमानोंकी निन्दा करो, और जाओ !

इससे होगा क्या ?

जेलमें चक्की चलानी पड़ेगी, राम-बाँस कूटना पड़ेगा; चर्बी गल जायगी, बनेगी नहीं ।

सिंहजीने उत्तर दिया—लेकिन डाका, खून वगैरह किये बिना आज ये दण्ड न मिलेंगे ।

तो वही करो ।

सिंहजीने कहा—यह तो तुम्हारे परामर्शके बिना भी कर सकता हूँ । तुम वैद्यकके हिसाबसे कोई उपाय नहीं जानते ?

वैद्यजी बोले—क्यों नहीं ! संगीतका कुछ अभ्यास है ?

संगीतसे और वैद्यकसे क्या संबंध ?

वैद्यजी बोले—अरे बाप रे ! संबंध ! संगीतमें ७२ 'ठाट' होते हैं, वैद्यकमें ७२ प्रमेह । दोनोंका गहरा सम्बन्ध है ।

सिंहजी बोले—तब तो सब संगीतज्ञोंको प्रमेह होता होगा !

वैद्यजीने कहा—क्या बातें करते हो ! अरे, प्रमेह हो जाय तो संगीतसे अच्छा किया जा सकता है ।

सिंहजी बोले—संगीतसे तो मुझे बहुत प्रेम है । सब फिल्मोंके रेकार्ड मेरे पास हैं ।

वैद्यजी बोले—वह संगीत है ! संगीत है ध्रुपद धमार और ख्याल । हमारा अन्नप्राशन ध्रुपदसे हुआ था ।

सिंहजीने कहा—आपका मतलब उस गानेसे है, जो शुरूसे अन्ततक 'आ आ' 'हाउ हाउ' और कै करने जैसा लगता है ?

वैद्यजीने क्रुद्ध होकर कहा—जरा भी संगीत तुम्हें सुनवा दूँ तो तुम्हारे प्राण निकल जायँ । खैर, तुम फिलहाल मालिश कराओ ।

इससे क्या होगा ।

वैद्यजी——शरीरमें कुछ गरमी पहुँचेगी, चर्बी पिघलेगी, साथ ही हम जुलाब देंगे।

लाभ होगा ?

वैद्यजी——मालिश और हमारी दवाके योगसे हाथीको गधा बनाया जा सकता है। तुम किस फेरमें हो! पर मालिश विधिपूर्वक होनी चाहिये।

कैसे।

सर्वोत्तम बात तो यह है कि उस समय तुम नग्न हो जाओ, जैसे स्वामी लोग हो जाते हैं।

माफ कीजिये। मैं अभी महात्मा नहीं हुआ हूँ।

तो लाभ भी कम होगा। तो फिर, कौपीन पहन लो, और किसी कड़ी चीजपर बैठो या लेटो। उदाहरणार्थ, चबूतरेपर या चौकीपर। मालिश दिलसे नीचेकी ओर होनी चाहिये और इतने हलके हाथों कि जोर जरा भी न पड़े।

सिंहजीने पूछा——अर्थात् कोई स्त्री मालिश करे ?

वैद्यजीने कहा——बात तो यही है। इसीलिए अस्पतालोंमें नर्सें रखी जाती हैं। तुम भी कोई नर्स ठीक कर लो।

सिंहजी बोले——हमारे शहरकी नर्सें तैयार नहीं होतीं। मैंने एक बार कोशिश की थी, अपनी स्त्रीके लिए।

वैद्यजी——पर यह तो आवश्यक है। कोई एँग्लो-इण्डियन ठीक करो।

हमारे शहरमें नहीं हैं। कलकत्ते जाना होगा।

तो जाओ।

अपनी स्त्रीसे काम नहीं चल सकता ?

वैद्यजीने कहा——नहीं। मालिशका अर्थ है——रक्तको चंचल करना। वह पर-स्त्रीके मालिश करनेसे ही पूरी मात्रामें हो सकता है।

सिंहजी बोले—तो मैं आज ही चला जाऊँगा ।

वैद्यजीने कहा—साधु ! जा सको तो अच्छा हो ।

तीसरे दिन सिंहजी वैद्यजीके यहाँ आये ।

वैद्यजीने पूछा—गये नहीं ?

सिंहजीने कहा—अपनी पत्नीसे सब बातें कहीं । सुनकर उन्होंने आपके विषयमें जो कुछ कहा, वह मैं आपके सामने नहीं कह सकता । इसके बाद वे मेरे ससुरजीके यहाँ जाने लगीं । मैंने कहा—'तुम जाओगी तो मैं भी कलकत्ते जाऊँगा ।' तब वे नहीं गयीं । अब वे ही मालिश करती हैं, कुछ लाभ भी है ।

वैद्यजीने कहा—मैंने बहुतोंको मालिश बतायी, पर कोई जा न सका । खैर, कुछ लाभ है, यह अच्छी बात है । और सुनो, भावना ही प्रधान है । अपनी पत्नीको मालिशके समय परकीया समझनेकी चेष्टा किया करो । दो ही हफ्तोंमें अच्छे हो जाओगे ।

अमृतवल्ली

श्रीमान् पण्डित सदाशिव पाण्डेयजीके पूज्य पितृदेव जब कैलासधाम गये तो अपने पुत्रको संसारके लिए, और संसारको अपने पुत्रके लिए छोड़ गये। वे महान् आत्मा थे।

श्रीमान् पण्डित सदाशिव पाण्डेयजी अपने पितापर एक बातके कारण बहुत ही प्रसन्न थे। वह यह कि उन्होंने ईश्वरको धोखा देकर उसके यहाँसे कुछ बुद्धि चुरा ली थी और उसे अपने काममें न लाकर अपने पुत्रको दे गये थे।

सदाशिवजीने अपनी बुद्धिका पूरा उपयोग किया। ईंट, चूनेके जिस विशिष्ट प्रकारके ढेरको सदाशिवजीके पिता मकान समझते थे, उसे उन्होंने अपनी ज्ञानदृष्टिसे ईंट-चूना ही देखा और उसके प्रति वे निःसंग, मोहमुक्त हो गये और शीघ्र ही उन्होंने बुद्धिके साथ न्यायका योग कर, ईंट-चूनेके भाव ही उसे बेच डाला।

ईंट-चूना बेचकर, उसे बिकवानेवालोंका कमीशन बाद कर जो कुछ बचा; उसका सदुपयोग करनेमें सदाशिवजीने जिस बुद्धिका परिचय दिया, उससे उनके परिचित चकित हो उठे; और सच बात तो यह है कि कभी-कभी सदाशिवजी भी अपनी बुद्धिकी दौड़पर चकित होते थे। इस प्रकारकी बुद्धि सदाशिवजीके ठीक पहलेके तीन पूर्वजोंमें न थी। यहाँ इतना कह देना उचित होगा कि सदाशिवजीके पिताजीके शालग्राम पत्थर-के होनेके कारण यद्यपि ईंट या चूनेमें शामिल न थे, पर उदारताके कारण सदाशिवजीने इसपर ध्यान देना भी तुच्छता समझकर, उन्हें भी

ईंट-चूनेके साथ ही दे दिया था; बेचा न था—बेची तो थीं ईंटें और चूना।

ऋषि-मुनियोंने संसारको असार, स्नेहशून्य, श्मशान आदि कहा है। बहुत शीघ्र ही सदाशिवजीने इस तत्त्वको हृदयंगम कर लिया। बस यह बात ही उसकी समझमें न आती थी कि उक्त तत्त्वकी शिक्षा तो उतनी साधारण स्त्रियाँ भी दे देती हैं, जिन्हें साधारणी कहा जाता है, फिर ऋषि-मुनियोंकी आवश्यकता क्या थी।

उक्त तत्त्व हृदयंगम करनेकी दशामें ही सदाशिवजीकी दुर्दशा प्रारंभ हुई। संसारने तो क्या, उनके नगरने भी उन्हें अपना न समझा, अपने लिए उत्कृष्ट न समझा। हाँ, तीन-चार व्यक्ति उन्हें बाँह देने आगे आये जो उनके पिताके पैर खींचा करते थे। उन्होंने सदाशिवको चिंता न करनेको कहा और यह बतलाया कि मारवाड़ियोंका अन्न खानेका ब्राह्मणको अधिकार है, उसी तरह जैसे कुत्तेको उच्छिष्ट खानेका या अपरिचितको काट लेनेका; अतः सदाशिवको इस अधिकारका उपयोग और उपभोग करना ही चाहिये।

पर, सदाशिवको बहुत ऊँची कोटिका ज्ञान हो गया था—सविकल्पक भी, निर्विकल्पक भी। अतः एक दिन रातको उसने नगरका त्याग ही कर दिया। अपनी जन्मभूमिका चिह्न तो वह स्वयं था ही, जन्मभूमिके लोगोंका चिह्न भी उसने साथ लिया। जिन लोगोंसे जो कुछ ऋण मिल सका था, उसने ले लिया था।

कुछ आचार्योंका कथन है कि किसी नगरकी विभूति, कला, शिष्टता आदिका ज्ञान उस नगरकी सर्वोत्कृष्ट वारांगनाका घर देखकर और उससे वार्तालाप कर, जाना जा सकता है। अपने नगरकी समृद्धि आदिकी चर्चा चलनेपर, प्रत्यक्ष प्रमाण देनेके ही अभिप्रायसे ही कदाचित् सदाशिवने उन-

में 'चंद तस्वीरे-बुतों' को स्थान दे दिया था। सदाशिवकी जेब उसके दिलपर थी।

स्टेशनपर, सदाशिवको एक परिचित मिले थे। सदाशिवने देखते ही, उन्हें अलग ले जाकर कहा ——

किसीसे कहना नहीं आसाम जा रहा हूँ। मेरे एक रिश्तेदार वहाँ जानसे मर गये हैं। वे हाथियोंके सौदागर थे। उनका सब धन मुझे ही मिलनेवाला है। वे दस हजार तीन सौ तेरह हाथीके दाँत छोड़ गये हैं।

परिचितने पूछा——दाँत तो बहुत बड़े होंगे?

सदाशिवने उनके शरीरको देखा, उसे दृष्टिसे नापा और कहा——इतने बड़े कि तुम्हारी तोंदपर रखकर दबाये जायँ तो पीठ पार कर जायँ।

परिचितने यह बात पसन्द न की, न यह बात पसन्द की कि उन्हें हाथीके पैरोंके नीचेसे निकाला जाय।

इसके बाद उन्होंने सदाशिवको पान खिलाया, दो रुपयेकी मिठाई खरीद कर दी और कई बार मलकर दस-दस रुपयोंके पाँच नोट भी दिये। सदाशिव सदासे संकोची थे, नहीं तो वे नोट न ले सकते।

गाड़ी आ गयी। सदाशिव पहले दर्जेमें घुसा, परिचितने मना करनेपर भी अपने कर-कमलोंसे बिस्तर बिछाया और गाड़ी कोस भर चली गयी तब भी वे आतुर नेत्रोंसे उसी ओर देखते रहे।

धीरे-धीरे नगरमें सबको यह बात ज्ञात हो गयी। जिन्होंने सदाशिवको ऋण न दिया था, उनकी धर्मपत्नियोंने उन्हें पड़ोसियोंके कानोंके लिए बहुत मधुर शब्दोंमें फटकारा और उन्हें यह भी स्मरण दिलाया कि उनके पिता (अर्थात् धर्मपत्नियोंके और ऋण न देनेवालोंके) उनकी तुलना किन-किन जीव–जन्तुओंसे किया करते थे। और यह

पहला अवसर था जब उन लोगोंने भी उन उपमाओंकी सार्थकताको हृदयसे स्वीकार किया।

× × ×

सदाशिवजी और उनके ज्ञानका भार न सह सकनेके कारण ही मानों गाड़ी एक स्टेशनपर अर्धरात्रिको खड़ी हो गयी। उसी समय एक अंग्रेज भीतर घुसा। कुलीने बिस्तर बिछाया, बाकी सामान ऊपरी बर्थ पर रखा और चला गया। साहबने एक बेंतकी डोलचीमेंसे एक शीशेका गिलास और दो बोतलें निकालीं। उन दोनोंमेंसे थोड़ा-थोड़ा तरल पदार्थ गिलासमें डाला और पी लिया। इसके बाद उन्होंने अपने तकियेके साथ खेलवाड़ प्रारम्भ किया। अंतमें उसके भीतर कुहनीतक हाथ घुसा दिया और उसे सिरहाने पटक कर चारों ओर देखा। केवल एक ही बर्थपर एक आदमी सोया था। साहबने डैम, ब्लडी, पिग आदि श्रुतिसुखद शब्दोंका पुष्ट उच्चारण किया और तब पैखानेमें चले गये।

इसी समय सदाशिव गहरी नींदसे उछलकर खड़े हो गये। उन्होंने भीत और सशंक नेत्रोंसे चारों ओर देखा और तब केवल एक तकिया बगलमें दबाकर ट्रेनसे उतर पड़े। जल्दीमें तकिया साहबका ले लिया था। उतरे भी पीछेकी ओरसे थे।

बहुत-सी लाइनोंको पारकर, तथा कँटीले तार लाँघकर सदाशिव एक अंधकार-पूर्ण मैदानमें पहुँच गये। पर वे रुके नहीं, बढ़ते ही गये। इसी समय उन्हें अपनी ट्रेन खिसकती मालूम हुई। कुछ देरमें वह स्टेशनसे बाहर हो गयी।

सदाशिव खड़े हो गये। वे ट्रेनको ऐसे देखने लगे जैसे अपने कवच-कुंडल लेकर जाते हुए इंद्रको कर्णने देखा था। ट्रेन जब आँखों-से ओझल हो गयी तो उन्होंने एक लम्बी साँस ली और तकियेके भीतर

हाथ घुसेड़ दिया। उनका हाथ किसी चीज से लगा, उन्होंने उसे निकाल कर जेबमें रखा और तब उनका हाथ तकियेके भीतर ऐसे घूमने लगा जैसे गोकुलकी ग्वालिनोंका मंथन-दंड दही-भरे घड़ेमें घूमता था।

जब और कुछ न मिला तो सदाशिव क्रुद्ध हो उठे और उन्होंने डारविन साहबका यह सिद्धान्त सत्य सिद्ध कर दिया कि आदमी बन्दरकी औलाद है। सदाशिवने हाथों, पैरों और दाँतोंकी सहायतासे तकियेको ऐसा रूप दे दिया कि उसे उसका बाप भी (यदि हो) न पहचान सकता।

इसके बाद वे आगे बढ़े, पर बन्दरपन सिरपर सवार था। वे चलते-चलते सूखी घास उठा-उठाकर जेबमें भरने लगे। बहुत दूर जाकर उन्हें एक गढ़ा मिला। उसे देखकर उन्हें अति हर्ष और सन्तोष हुआ। वे उसी में उतर पड़े। उकड़ूँ बैठकर उन्होंने जेबसे घास निकाली और 'चन्द तस्वीरें बुताँ'वाली जेबसे दियासलाई निकालकर घास में आग लगा दी। इसके बाद तकियेमेंसे निकली चीजको निकालकर देख डाला। २०७२) रुपयोंके नोट थे।

सदाशिव ने जूतेसे जलती घास को बुझा दिया और गढ़ेसे बाहर निकलकर आगे बढ़े। उन्हें अत्यन्त पश्चात्ताप हो रहा था। जीवनमें आज, पहली बार उन्होंने देशभक्तिका काम किया और उसमें इतनी असफलता! जिन अंग्रेजोंने भारतको लूट डाला, सदाशिव उनमेंसे एकका सिर्फ तकिया चुरा पाये और उसमेंसे निकले केवल २०७२) रुपये!

लेकिन सदाशिवको कुछ सन्तोष हुआ। यह सोचकर कि अँगरेजों-की टेंट तो टटोली ही नहीं जा सकती, क्योंकि वे न धोती पहनते हैं, न लुंगी; जेब टटोलना खतरनाक ठहरा; अतः तकियेपर हाथ साफ करना ही संभव था।

सदाशिवने निश्चय किया कि अँगरेजोंके तकियोंपर ही हाथ साफ

करना ही सम्भव और श्रेष्ठ कर्म है। उसने इसीको देशको स्वतन्त्र करने-का सर्वोत्तम उपाय समझा। सदाशिवको सुभाष बाबूपर बहुत क्रोध आया कि इतनी सहज-सी बात उनकी समझमें न आयी! उन्हें 'आजाद हिन्द फौज' की जगह 'तकिया साफ फौज' बनानी चाहिये थी।

सदाशिव इस समय योगी हो रहा था। उसे न गरमी लग रही थी न सरदी, न भूख न प्यास, एवं चित्त एकदम निर्मल और प्रसन्न था, उसमें विश्वबन्धुता हिलोरें ले रही थी। अनायास किसी के गले लगानेकी इच्छा हो रही थी।

सदाशिव चलता ही रहा। वह योगकी उस उच्च भूमिपर पहुँच गया था, जहाँ पहुँचकर श्रम होता ही नहीं, आत्माका प्रवेश दूसरोंकी आत्मामें होने लगता है और पैर जमीनपर नहीं पड़ते।

पौ फटने लगी। उल्लू अपने बसेरोंकी ओर लौटने लगे, काक-कुलने मङ्गल-गान आरम्भ किया; ताम्रचूड़ कौं-कौं-कौं-कौं करके पञ्जोंसे भूमि खोदकर फेंक देनेका उपक्रम करने लगे, गधोंपर धोबी लादी लादने लगे। दिशाएँ स्पष्ट दिखायी पड़ने लगीं, दुर्गन्धपूर्ण वायुके तेज झोंके बीच-बीच में आने लगे। सदाशिवजीने देखा, कुछ दूरपर एक नदी है। 'सकल सौच करि जाइ नहाये' इस चौपाईकी प्रथम किया उन्होंने समाप्त की और पीछे मुड़ चले। वे इस भाव से लौटे जैसे प्रातर्भ्रमण कर लौट रहे हों।

वे स्टेशनके बगलके रास्तेसे नगरमें प्रविष्ट हुए, एक दुकानपर जलपान किया। उन्हें यह सोचकर बहुत कष्ट हुआ कि मेरे परिचितकी दो रुपयोंकी मिठाई वह अंग्रेज खा रहा होगा।

इसके बाद वे एक पुस्तकालयमें प्रविष्ट हुए और 'दयानन्द मत मूलोच्छेद' निकलवाकर पढ़ने लगे।

११ बजे उनका ध्यान भग्न हुआ। वे वहाँ से बाहर निकले और शहरमें घूम फिरकर दरी, कम्मल खोजने लगे।

× × ×

तीन चार दिनोंके बादकी बात है।

सदाशिव दोपहरके समय एक गलीमें चहलकदमी कर रहे थे। सहसा उनकी दृष्टि एक मकानकी तीसरी मंजिलपर पड़ी। वे ऊँची नजरके आदमी थे।

उन्होंने इधर-उधर देखा। बगल हीमें पानकी एक दुकान थी। उन्होंने उसका (और बिहारीके 'दीठि बरत बाँधी अटनु' इस दोहेका) सहारा लिया। सामनेके मकानकी तीसरी मंजिलकी एक खिड़कीतक उनके नेत्रोंने एक रस्सी फेंक दी और उसपर उनका मन-नट लंगोट बाँध कर दौड़ पड़ा।

उस खिड़कीपर एक स्त्री—स्त्री कहनेसे संतोष न होगा, सदाशिव को—खड़ी थी। सदाशिवको काली टिकुलीसे युक्त माथेवाला उसका मुँह नये तबले जैसा लगा। इसी समय वह 'आयी' कहकर खिड़कीसे हट गयी। अब सदाशिवका मन तबला हो गया और उसमें समस्वर तबलेसे निकला स्वर गूँजने लगा।

वेदांत शास्त्रमें संसारको गंधर्व-नगर कहा है। सदाशिवने यह सुना था। आज उसने इस एक मकानकी एक खिड़कीके कारण ही संसारका गंधर्व-नगर होना स्वीकृत कर लिया।

किसी भी तमोलीसे उसके आस-पासके लोगों, विशेषतः स्त्रियोंका परिचय प्राप्त करनेकी कलामें सदाशिवने पूर्ण दक्षता प्राप्त कर ली थी। इस कलाका उपयोग कर सदाशिवने जान लिया कि वह मकान एक नेपाली वैद्यका है और वे वैद्यजी अपनी एक कन्याके साथ रहते हैं तथा

वह अविवाहिता है। मकान वैद्यजीका ही है और रहेगा——जबतक वे भाड़ा देते रहें।

काम-शास्त्रके एक आचार्यका मत है कि नायक-नायिकाने एक दूसरेको देख लिया हो तो दूत या दूती का प्रेषण हो सकता है। दूसरे का मत है कि प्रत्यक्ष-दर्शन न हुआ हो पर गुण-श्रवण हो गया हो तो दूत-प्रेषण अनुचित नहीं। तीसरेका कथन है कि एक ही ने दूसरेको देखा या उसके गुणोंका श्रवण किया हो तो भी दूत-प्रेषण हो सकता है। सदा-शिव सदासे इन तीसरे आचार्यको ही आचार्य मानते आये थे। अतः उन्होंने स्वयंदूत होनेका निश्चय किया।

सदाशिवने 'शुभस्य शीघ्रं' स्मरण कर, तमोलीको सोनेके वर्कके आठ पान लगानेकी आज्ञा दी। पानका दोना हाथमें लेकर वे उस मकानके दरवाजेपर रुके, जेबसे सौ रुपयेका एक नोट निकालकर उस पर रखा और भीतर घुसे।

सहन पारकर एक कमरा था। उसमें पूरबकी ओरकी दीवारके सहारे एक सज्जन बैठे थे। उनकी खोपड़ीपर जापानी मशीन (केशकर्तिनी) फिरी हुई थी, माथेपर चन्दन पुता हुआ था, गलेमें रुद्राक्षकी माला थी, मुँहपर सिकुड़नें थीं। वे सुरवाल (चुस्त पैजामा) और लबेदा (बगलबन्दी) पहने थे।

सदाशिव उनके पास जाकर खड़ा हुआ। उन्होंने मिनटभर देखकर पूछा——

ब्लडप्रेशर है?

सदाशिव ने झुककर उनके सामने दोना और नोट रखा, उनके चरणोंपर माथा रखा और उसी मुद्रामें रहकर कहा——

हो सकता है, जरूर है । मुझे अब जो न हो जाय सब थोड़ा है । मेरा उद्धार करो प्रभु !

वैद्यजीने सदाशिवको बैठाया । पूछा—कहाँसे आते हो ?

सदाशिवने आँखें बन्दकर कहा—कुछ न पूछिये ! अब तो गन्धर्व-नगरमें हूँ । मृगमरीचिकामें पड़ा हूँ । निमल जलका स्वच्छ सरोवर दिखला दो प्रभु !

वैद्यजीने पूछा—यह कबसे है ?

उत्तर मिला—अकस्मात् हो गया ।

प्रश्न हुआ—तुम्हारे कौन हैं ?

सदाशिवने वैद्यजीके पैरोंपर सिर रखकर कहा—

अबतक कोई नहीं था । अब आगे आप हैं, पीछे आपका कोई सम्बन्धी ही रहे तो उत्तम हो । पिता मर चुके । अब आप ही को एक तरहका पिता मान लिया ; शास्त्रकी आज्ञा भी है । आप भी स्वीकार कीजिये ।

वैद्यजीने फिर सदाशिवको बैठाया, कहा—घबराओ नहीं ।

सदाशिवने आँसू पोंछते हुए कहा—तो आश्वस्त हो जाऊँ ? वचन देते हैं न ?

वैद्यजीने कहा—चिन्ता क्या ! सब ठीक हो जायगा ।

सदाशिवने कहा—आप मेरे प्राणदाता बनिये ।

वैद्यजी बोले—चिकित्सासे सब ठीक होगा ।

सदाशिवने कहा—आपकी कृपा हो तो आपकी दवा खाये बिना भी अच्छा हो सकता हूँ । बाबा तारकेश्वरने स्वप्न दिया, बस मैं सीधा आपके यहाँ चला आया । अब छोड़ूँगा नहीं ।

वैद्यजीने कहा—तारकेश्वरके साथ बात भी है ।

सदाशिवने कहा—और भी बहुत कुछ है। दिल धड़कता है, रोयें खड़े हो गये हैं, नसें ऊपरकी ओर खिंच रहीं हैं, दिल ऐंठ रहा है, मुँह सूख रहा है ; प्यास वैद्यजी प्यास !

सदाशिवजीने जीभ बाहर निकाली।

वैद्यजीने आवाज लगायी—मुरली मैओं ! इता आउ ! (मुरली बेटी ! इधर आना !)

तभी सदाशिवकी पीठकी ओर एक दरवाजा खुला और एक स्त्री—केवल स्त्री कहने से सदाशिव नाराज होगा—आकर खड़ी हुई।

सदाशिवने घूमकर देखा। बिजलीकी करेंट जैसे उसे मार गयी। वह धक्का खाकर मुरली मैओंके पैरोंपर जा पड़ा, फिर खड़ा होकर बोला—

प्यास ! कलेजा चक्कर खा रहा है, आँखें भीतर धँस रही हैं, शरीरमें भूकम्प,

तभी वैद्यजी उठे, सदाशिवको सम्हालकर बैठाया और मुरली मैओं-से एक गिलास जल लानेको कहा। वह जल लेकर आयी। वह कुछ घबरा गयी थी।

वैद्यजीने एक शीशीसे एक पात्रमें थोड़ा कनकासव निकाला, कहा—इसे गलेसे नीचे उतार लो, ऊपरसे जल पी जाओ।

सदाशिवने घट-घट करके दोनों चीजें गलेके नीचे उतार दीं और फिर जीभ बाहर निकाली।

वैद्यजीने कहा—अब जल नहीं मिलेगा। नुकसान करेगा।

सदाशिवने कातर दृष्टिसे वैद्यजीको देखा, अनुनय-भरी दृष्टिसे मुरली मैओंको देखा ; तब उसके नेत्र बन्द हो गये, उसका शरीर काँपने लगा, हाथ पैर ऐंठने लगे, वह गों-गों करके लम्बा हो गया और दाँती लग गयी। साँस रुक-रुक कर चलने लगी।

वैद्यजी घबराकर पास आये, नाड़ी देखी, मुरली भैयाँसे कहा—मरीच्यादि तैल मुँहमें डालो, मैं सिर पकड़ता हूँ।

मुरलीके हाथ काँप रहे थे, तेल मुँहमें अधिक गिर गया और ओठोंके दोनों ओरसे बहने लगा। वैद्यजीने सदाशिवकी नाक कसकर बन्द कर दी। १०-१५ सेकेंड बाद सदाशिवने मुँह खोल दिया और हाँफता हुआ उठ बैठा। तब उसने शीशी सहित मुरली का हाथ पकड़कर कहा—सब मेरे मुँहमें डाल दो, और भी सब तरहके तेल डाल दो। मेरे मरनेकी कोई चिन्ता नहीं। वैद्यजी! आप इस बार मेरे सीनेपर चढ़ बैठियेगा।

वैद्यजीने कहा—घबराओ नहीं, तुम्हें फिट हो गया था। पर हमारी दवा बड़ी तेज है। मुरदोंको जिन्दा कर सकती है।

सदाशिवने कहा—जी हाँ, और 'वाइस वरसा'। (अर्थात् तद्विपरीत)।

वैद्यजीने मुरलीसे कहा—२½ सन्तरोंका रस निकाल लाओ। गोल मिर्च २१ दाना, नमक अन्दाजसे।

सदाशिवने कहा—मीठा अच्छा नहीं लगता। बल्कि नीबूका या कटहलका रस अच्छा रहेगा। दो तोले हींग मिलाकर,

वैद्यजीने कहा—नहीं, नहीं, बचपनकी बात मत करो। वैद्यके घरमें हो, वैद्यकी बात माननी होगी।

सन्तरोंका रस पीकर सदाशिवने पूछा—पान खा सकता हूँ?

वैद्यजीने कहा—हाँ।

और उन्होंने सदाशिवका पानका दोना खोला, फिर बोले—सोनेका वर्क ताकत करेगा, जरूर खाओ; रुको, यह लो एक गोली, चन्द्रोदय रस है। पानमें रख लो।

कुछ देर बाद वैद्यजीने पूछा——अब कैसा है ?

सदाशिवने कहा——बहुत अच्छा हूँ, पर दिल घबराता है ।

वैद्यजीने कहा——शामको आना, तब दवा देंगे । दिनभर सोचना पड़ेगा । गम्भीर रोग है ।

× × ×

शामको सदाशिव वैद्यजीके यहाँ पहुँच गये । ८—१० मरीज बैठे थे । सदाशिवको देखते ही वैद्यजीने पूछा——कैसा है ?

सदाशिवने १००) का एक नोट वैद्यजीके चरणोंके पास रखकर कहा——आपकी कृपासे बच गया । पर, शाम कैसे हुई, यह आप क्या जानें ! हृदयमें कोल्हू चलता था, घड़ीकी सुई पर सालेसाली आकर बैठ गया, दिमागके भीतर——

वैद्यजीने कहा——अच्छा, जरा बैठो । इस समय मोहल्लेपर उतना ब्लडप्रेशर नहीं है ।

वैद्यजीने एक मरीजकी नाड़ी पकड़ी । ऐसे पकड़ी जैसे वह उन्हींकी रही हो, खो गयी हो और इस समय अकस्मात् मिल गयी हो ।

सदाशिव चारों ओर देखने लगा । दो तीन आलमारियोंमें छोटी-बड़ी शीशियां भरी थीं । सब पर लेबुल लगे थे । ५-६ बड़े-बड़े बर्तन भी रखे थे । एक पर लिखा था——हस्तिमूत्र । एक पर लिखा था——अश्व-मूत्र । सदाशिव पढ़ने लगा——गर्दभ-मूत्र, काक-विष्ठा, उल्लूक-मल... ।

वैद्यजीने मरीजसे पूछा——क्या तकलीफ है ?

रोगीने कहा——कमरमें दर्द है ।

वैद्यजीने पूछा——जांघोंमें फुर-फुर होता है ? सारे बदनमें [illegible] है ? गलेमें चींटी सी रेंगती है ?

रोगीने कहा——इन सब बातोंका अनुभव तो नहीं होता ।

वैद्यजीने कहा—इतना ध्यान रोगी रखे तो हमें दवा करनेमें अड़चन क्यों हो ? कम्पाउण्डर ! कटिभञ्जिनी गुटिका ३, चतुर्मुख ४, वातगज-केशरी २, वात-विधूनन १, योग ७ मात्रा ।

फिर रोगी से बोले—७ मात्रा है । सुबह, दोपहर, शाम । बैतरा सोंठ का चूर्ण, गर्दभी-दुग्धके साथ । दाम ? दवाका दाम १४ आना और गर्दभी-दुग्ध २ तोले का चार रुपये । २० मिनटके भीतर दवा पेटमें न पड़नेसे लकवा मार जायगा ।

अब दूसरा रोगी सामने आया । वैद्यजीने नाड़ी पकड़ी । रोगी हाल कहने लगा—कब्ज बना रहता है, त्रिफलासे काम नहीं चलता ।

वैद्यजीने कम्पाउण्डरसे कहा—४ तोला मैदान पापड़ा । हाँ, एक साथ सब खा जाइयेगा । ४ तोला देशी रेंडीके तेलसे । आठ आना ।

रोगीने पूछा—पेट साफ हो जायगा न ?

वैद्यजीने कम्पाउण्डरसे कहा—खन्दक योग २ तोला । मैदान पापड़ा खानेके एक घण्टा बाद जरूरत समझें तो इसे गरम जलसे खा जाइयेगा । चार आना ।

रोगियोंको बिदाकर वैद्यजी सदाशिव की ओर घूमे । पूछा—कहाँ टिके हो ?

सदाशिवने कहा—असारे खलु संसारे सारं श्रीधर्मश्यालिका । सो, धर्मशालामें ठहरा हूँ ।

वैद्यजीने पूछा—क्या करते हो ?

उत्तर मिला—अबतक जो कुछ करता था, वह तो कुछ कहने योग्य नहीं । अब जो करूँगा, वह आपको पसन्द होगा कि नहीं पता नहीं ।

—क्या करना चाहते हो ?

—मैं ? मैं ? आपकी चिकित्सा करूँगा और आपसे चरक पढ़ूँगा।

—बहुत उत्तम विचार है। पर निर्वाहकी क्या व्यवस्था है ?

—अभी मेरे पास ३४४२) हैं। पर चिंता नहीं, 'तकिया साफ फौज' बनाने वाला हूँ; पर नहीं, अब सब काम अकेला करूँगा।

—फौज कैसी ?

—देश-भक्तिका काम है।

वैद्यजी यह सुनकर उठ खड़े हुए। कहा—हमारे घरमें देश-भक्तिका नाम न लेना। नेपाल सरकार हमें कैदखानेमें डाल देगी। तुम जासूस तो नहीं हो !

सदाशिवने वैद्यजीके पैर पकड़ कर कहा—नहीं प्रभु। मैं आजसे देशका नाम भी न लूँगा। भक्ति भाड़में जाय। प्रेम तो चल सकता है ?

वैद्यजीने सोचकर कहा—हाँ, चल सकता है। भक्ति भी चल सकती है, पर देशके साथ उसका संबंध अति अनुचित है।

सदाशिवने कहा—मेरे लिये आपका कमरा ही देश है, आपका आँगन ही विदेश है।

वैद्यजीने कहा—ठीक है, तुम कुछ दिन चिकित्सा करो, फिर पढ़ना भी प्रारम्भ करना। तुम्हारा नाम क्या है ?

—मुरली मनोहर।

—मैं तुम्हें मनोहर कहा करूँ ?

—आप मुझे चमार, भंगी, डोम जो चाहे कहिये। आपको सब अधिकार है।

वैद्यजीने कहा—देखो मनोहर, एक कमरा कहीं ले लो और उठ कर दवा करो। बातकी मात्रा अभी अधिक है, पहले उसे कम करना होगा।

सदाशिवने कहा—कफ भी कम करना होगा। जिन्होंने मुझे संतरे-का रस पिलाया, उनके सामने मेरे गलेमें कफ भर गया था, मैं कुछ बोल ही न सका।

वैद्यजीने कहा—वह मेरी छोरी (लड़की) है। उस समय भी वात-की ही प्रधानता थी। तुम चिंता मत करो।

× × ×

दो महीने बाद—

मनोहर वैद्यजीके घरमें ही रहने लगा है। सब रुपये वैद्यजीके पास जमा कर दिये हैं। कम्पाउंडर विदा हो गया है, उसका स्थान मनोहर-ने ले लिया है। वैद्यजी उससे बहुत प्रसन्न हैं।

एक दिन पढ़ाते समय वैद्यजीने कहा—मनोहर!

—जी!

—देखो, एक रहस्य बताते हैं। यह हमारे यहाँ सात पुश्तसे चला आता है। जहाँ काँटोंके ही पेड़ हों पर उनके बीचमें एक पेड़ बिना काँटोंका हो या बिना काँटोंके पेड़ोंके बीच एक पेड़ काँटोंका हो तो समझ लेना कि उसके नीचे खजाना है। उस पेड़ पर यदि कोई लता हो तो समझ लेना कि खजाने पर एक घोर कृष्ण सर्प है। ऐसी लताको अमृतवल्ली कहते हैं। उस अमृतवल्लीको सोमवारके पुष्य नक्षत्रमें जड़ समेत खोद लेना और उसे कूटकर उसका रस सर्वांगमें पोत लेना। तब अर्द्ध रात्रिको खजाना खोदना। उस रसके प्रभावसे वह सर्प भाग जायगा। और सुनो—अमृतवल्ली उखाड़नेका और खजाना खोदनेके समय पहले पढ़ना पड़नेवाला एक-एक मंत्र है। उन्हें मुखस्थ कर लो। अपने सिवाय और कुछ जानो तो कोई हर्ज नहीं, पर मंत्र न भूलना।

इसके बाद वैद्यजीने मंत्र बताये और सदाशिव उनको दुहराने लगा।

वैद्यजीने कहा—इस समय जहाँ-जहाँ अमृतवल्लियाँ हैं, सब काँप रही होंगी और सर्प व्याकुल हो रहे होंगे। खबरदार, भूलना नहीं। २०-३० वर्षोंमें सोमवारको जितने पुष्य नक्षत्र पड़ेंगे, सबको पञ्चांग देखकर रट डालो; चरक पढ़कर क्या करोगे! यदि कहीं अमृतवल्ली दिखायी पड़े तो वहीं रह जाना, जबतक सोमवारका पुष्य न आवे।

× × ×

दो महीने बाद—

सायंकालका समय था। अन्धकार फैल चला था। वैद्यजी किसी रोगीको देखने गये थे।

वैद्यजीके घरके भीतरी कमरेमें मुरली खड़ी थी, उसके पास मनोहर खड़ा था।

मुरलीने मनोहरका हाथ अपने हाथोंमें लेकर कहा—तुमने इतना प्रयत्न मेरे लिये किया?

—हाँ।

—तुम बड़े दुष्ट हो।

मनोहरने कदाचित् अपनी भलमंसीका परिचय देनेके लिए, मुरलीके कन्धे पर एक हाथ रखा और दूसरा उठाया।......................

तभी वज्रपात हुआ। उस भीषण कड़कसे मुरली काँपकर जमीनपर गिर पड़ी। मनोहर चौंककर पीछे घूमा। वैद्यजी खड़े थे...

चमार कहींका! हमारा आसव, अरिष्ट खाकर, हमारा रस पीकर, हमारे साथ विश्वासघात!

मनोहरने कहा—आपका सब आसव, अरिष्ट, रस, सुरक्षित है। मैंने कुछ नहीं खाया।

वैद्यजीने कहा—चमार।

मनोहरने कहा—आप जो कहें, आपको अधिकार है।

वैद्यजी बोले—तुझपर हमारा कितना विश्वास था ।

मनोहर—उसे बनाये रहिये । मैं इनसे विवाह करूँगा ।

वैद्यजी—मैं तेरा अरिष्ट बना डालूँगा, तेरा क्वाथ बना डालूँगा । दूसरी जातिमें विवाह ! असंभव !!

मनोहर—आप रससिन्दूरको सिद्ध मकरध्वज बनाकर बेच देते हैं । यह असंभव काम आप करते ही हैं । एक और सही ।

वैद्यजी—मैं तुझे गुरुचकी तरह काट डालूंगा । मैं तुझे...

वैद्यजीने आगे बढ़कर एक कोनेसे खुखड़ी उठायी और मनोहरपर झपटे । मुरलीने आर्त्तनाद किया ।

खुखड़ीका वार सटीक बैठा, वह धँस गयी, धक्केसे वैद्यजीका हाथ उसकी मूठपरसे छटक गया ।

वैद्यजीने कहा—ले, समाप्त । अच्छा, अब थानेपर चलूँ ।

वैद्यजी आगे बढ़े । सोचा—एक बार विश्वासघातीका मुँह देखता चलूँ ।

उन्होंने लालटेन जलायी । देखा—कुल्हाड़ी दरवाजेमें एक पल्लेमें धँसी हुई है, रक्तका एक बिंदु भी कहीं नहीं है, मनोहर गायब है । वे काँपने लगे । वे बाहर गये, एक लोटा जल लाये और मूर्च्छित मुरलीके मुँहपर छींटे देने लगे ।

× × ×

नगरकी एक एकान्त सड़कपर चलते-चलते मनोहरने कहा—बाप रे बाप ! बच गया ! उसको वैद्य किसने बनाया ! वह तो शुद्ध '[illegible]-कटिक' का बालक है । ऐसे बालककी ऐसी कन्या ! पर इसी कारण वह क्षम्य है । जाइये ! क्षमा किया । पर मैं तो अब नही सदाशिव रह गया !

महाशय सदाशिवने चलते-चलते वैद्यजीके यहाँ दो दिनों न जानेका निश्चय किया। सोचा—इस बीचमें पारा बहुत कुछ उतर जायगा।

दो दिनों बाद सदाशिव ठिठकते-ठमकते पानवालेके यहाँ गया। पानवालेने देखते ही पूछा—कहाँ थे छोटे वैद्यजी ? बड़े वैद्यजी तो कहीं गये, घरकी ताली और यह चिट्ठी दे गये हैं।

सदाशिवने चिट्ठी खोली। उसमें एक संक्षिप्त पत्र था—"हम आज ऐसी जगह जा रहे हैं जहाँ तू न आ सके। तुझे क्षमा कर दिया। तेरे रुपयोंका चेक साथ है। हमारा शाप है कि अमृतवल्ली तुझे न मिलेगी।"

सदाशिवने मुँह विचकाकर कहा—हुँह ! क्षमा कर दिया ! मुरलीको लेते गये, क्षमा कर दिया !!

सदाशिवने आकर मकानका ताला खोला और सारा घर छान डाला। एक जगह अपना बिस्तर और कपड़े पड़े देखे। अपने कपड़ोंकी सब जेब देखीं। एक कागज का टुकड़ा तक नहीं ! घरमें बहुतसे कागज मिले पर मुरलीके हाथका एक अक्षर भी नहीं। तब वह शिलालेख (किसी दीवालपर किसी चीजसे मुरलीके हाथका लेख) ढूँढ़ने लगा। वह भी न मिला। एक कोनेमें कुछ फूटी चूड़ियाँ मिलीं।

काली बिंदीसे रात और लालसे दिनका संकेत किसी प्रेमीने किया था, यह सदाशिवने पढ़ा था। वह फूटी चूड़ियोंका संकेत समझने बैठा। पर बुद्धि काम न देती थी। वह मुरलीको इतनी [illegible] था कि वह चूड़ियोंसे कोई संकेत कर गयी हो। उसे वैद्यजीपर इतना क्रोध आया कि किसीका सिर फोड़ देनेका मन करने लगा।

तब उसे वैद्यजीके शापका ध्यान आया। उसने दाँत-पर-दाँत रखकर कहा—अब अमृतवल्ली भी खोजूँगा।

× × ×

श्रीमान् सदाशिव पाण्डेयजी शामको दिल बहलानेके लिए एक व्याख्यान सुनने गये । विषय था—"संगीतका तंत्रसे सम्बन्ध ।"

वक्ता महोदयने बतलाया कि मारण, मोहन, उच्चाटन आदिकी सिद्धि जैसे तंत्रसे होती है, वैसे ही संगीतसे भी । संगीतके स्वर भी मंत्र हैं । कृष्णजी उन्हींकी सहायतासे गोपियोंको बुला लेते थे, यमुनाको स्थिर कर देते थे । इत्यादि ।

इसके बाद वक्ता महोदयने संगीतका वह सब प्रभाव दिखलानेके लिए गाना प्रारम्भ किया ।

गायक महोदय गाते-गाते नमाज पढ़नेवाली मुद्रामें बैठ गये और दोनों हाथोंको चारों दिशाओंमें जब चाहे फेंकने लगे । उनके आसपास-के लोग दूर खिसक गये । सहसा गायकने बायें हाथकी मुट्ठी बाँधी, जैसे किसीका गला उसमें पकड़ा हो और दाहिने हाथसे उसे हलाल करनेका भाव दिखाने लगे ।

उस समय सदाशिवजी यह याद रहे कर थे कि शास्त्रमें जैसे बाघे और घोड़ेसे कुछ-कुछ हाथ दूर रहनेकी आज्ञा है, वैसे गायकसे भी हाथ दूर रहने की आज्ञा है ।

उच्चाटन, मोहन एवं वशीकरणकी क्रिया दिखलाकर गायक विश्राम करने लगे ।

सदाशिवको निश्चय हो गया कि कालके प्रभावसे अब संगीतमें केवल उच्चाटन करनेकी शक्ति रह गयी है । वह बहुत अधिक है, इसमें सन्देह नहीं ।

उच्चाटनकी समाप्तिपर सदाशिवजी गायककी यह घोषणा सुनकर सभा-द्वार पर अपनी चप्पल छोड़कर भाग आये कि अब मैं राष्ट्र-सेवक गान सुनाता हूँ । बहुत दूर आकर सदाशिवने देखा कि पैरोंमें किसीका जूता

चला आया है। सदाशिवजीको अब संगीतके उच्चाटनमें अणुमात्र भी सन्देह न रह गया और उन्हें वहाँसे भाग आ सकनेका बहुत संतोष हुआ।

संगीतज्ञजीके गानेका पद उन्हें बार-बार याद आता रहा और उनका उच्चाटन बढ़ता रहा। अंतमें वे एकदम विकल हो उठे जैसे पिता या चाचाके मरनेपर, रोज दाढ़ी बनानेवाले विकल हो उठते हैं। उन्हें भय होने लगा कि नगरमें रहनेसे कोई कुकार्य कर बैठूँगा। उससे बचनेके लिए उन्होंने उसी दिन वहाँसे प्रस्थान करना उचित समझा।

वे विचार करने लगे कि कहाँ जाना उचित होगा। सुंदरवन पसंद नहीं आया क्योंकि वहाँ केले ही केले उत्पन्न होते हैं। हिमालय-पर जंगल कहाँ, वहाँ तो केवल बरफ है जैसे किसी जरठ अग्निहोत्रीकी ताजी मुड़ी खोपड़ी। उन्हें उन लोगोंपर बहुत क्रोध आया जिन्होंने भारतके जंगल काटकर जला दिये हाय! कितनी अमृतवल्लियाँ जल गईं, कौन कहे! उन्हें निश्चय हो गया कि भारतके जिन प्राचीन लोगोंको कूढ़मग्ज और सड़ियल कहा जाता है वे परम बुद्धिमान् थे क्योंकि अवश्य ही अमृतवल्लियों हीके लिए उन्होंने कभी जंगल न काटे थे और उन्हींमें वे रहते भी थे।

अन्तमें उनका ध्यान नेपाल पर गया। 'नेपाल' शब्द मात्रके स्मरण-से उनका हृदय कौन कहे, पैरतक ठंढे हो गये---(इस समय वे नदीमें घुटनोंतक पाँव डाले बैठे थे।)---कारण वहाँकी भूमिसे वह मुरली बनी थी जो चीरफाड़ सीखनेवालोंकी दृष्टिमें मांस और रक्त मात्र होते हुए भी विशिष्ट प्रकारकी मानवी थी, जिसका निर्माणतत्व किसी अन्य [illegible] भिन्न था, जिसका प्रभाव उनके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लोगोंके उस कौशलका श्रेय दिया जाता था।

नेपालमें जंगलोंकी भी कमी नहीं और कँटीले वृक्षोंकी भी कमी नहीं । रुद्राक्ष वहींकी उपज तो है !

नेपाल सरकारने वहाँ जानेके लिए पासपोर्टका झगड़ा क्यों रखा है ! बस, वही अमृतवल्ली ! वहाँ जानेके लिए सदाशिवके रोम-रोमसे अधीरता टपकने लगी जैसे कई पीढ़ियोंसे कोरी संस्कृत पढ़नेवालोंके रोम-रोमसे विच्छिन्नता टपकती है । वे तुरत स्टेशनपर जा पहुँचे । गाड़ी आनेमें कुछ देर थी । वे बार-बार घड़ी देखने लगे जैसे पढ़ाते समय प्राइवेट ट्यूटर देखा करते हैं ।

ट्रेन आ जानेपर सदाशिवजीको बहुत दूरपर एक डब्बेमें प्रवेश करती हुई कई महिलाएँ दिखलायी पड़ीं । वे सोलहवें वर्षमें पदार्पण करते-करते दूरदर्शी हो गये थे । साड़ीका रङ्ग और पीठ देखकर उम्रका अंदाज करनेकी सदाशिवजीमें अद्भुत क्षमता थी । उनके पाँव उन्हें बलात् उधर ही खींच [illegible] चले [illegible] रावण द्वारा अपहृत जानकीजीको देखकर जटायुके पैरोंने उसे उनकी ओर खींचा था । ऐसे अवसरोंपर कालेजोंके छोकरोंका उद्देश्य जितना ही असत् होता है, सदाशिवजीका उद्देश्य उतना ही सत् था । [illegible] हुए, किसीके अनुपम सौं[illegible]च जाना चाहते थे ।

पर, हाय रे मन ! तेज हवाके झोंकेसे माथेपर बिखरी कुटिल अलक-से भी वह अधिक चंचल होता है । कम-से-कम यहाँ तो सदाशिवजीको यही अनुभव हुआ । सदाशिवजीने मन-ही-मन कहा—उर्दूके कवि कितने झूठे होते हैं ! काकुलके पेंचमें दिलको गिरह देते ! वह भला स्थायी हो सकती है ! हाँ थोड़ी देरके लिए दिल उसमें उलझ सकता है, लटक सकता है, झोंके खा सकता है, पेंग मार सकता है, डाँग पसार कर बैठ सकता है; छटपटा सकता है ।...

पर, इसी समय सदाशिवका मन डब्बेमें बैठे लोगोंकी भाषापर आकर अटक गया। 'ने' के प्रयोगकी वैसी ही उपस्थिति थी जैसे वहाँ मुरली-की। प्रान्तीय प्रयोगोंका वैसा ही बाहुल्य था जैसा भैरवजीके मन्दिरमें कुत्तोंका होता है। शब्दोंका प्रयोग आँख मूँदकर वैसे ही हो रहा था जैसे जर्मनोंपर अँगरेजोंके बमोंका हुआ था। वाक्य-रचना वैसी ही शिथिल थी जैसी मारवाड़ियोंकी तोंद होती है। वाक्यका एक अंश दूसरेसे वैसे ही असम्बद्ध था जैसे जिना गाँधीजीसे। तात्पर्य यह कि सब मिलाकर वहाँ वैसी ही भाषा बोली जा रही थी जैसी आजकल हिन्दीके समाचार-पत्रोंके, छोटेसे लेकर प्रधान संपादकतक प्रायः लिखा करते हैं।

आखिर सदाशिवजी नेपालकी तराईमें पहुँच गये। पासपोर्ट देनेवाले विभागके मुंशीने उन्हें उतनी ही दिलचस्पीसे देखा, जितनी दिलचस्पीसे प्राणितत्त्वविशारद किसी नये जीव या जंतुको देखते हैं। उसने उस श्री जैसी उपेक्षा प्रकट की जिससे यह कह दिया जाय कि हम तुमसे प्रेम करते हैं। पर जब सदाशिव प्रेमीके समान उसकी झुल्कियाँ खाकर भी पीछे ही पड़ा रहा तो उसने नेपालको सदाशिवके लिए उसी प्रकार स्वतंत्र कर देनेका आश्वासन दिया जैसे इंगलैंडका प्रत्येक प्रधान मंत्री भारतवासियोंके लिये भारतको स्वतंत्र कर देनेका आश्वासन देता है।

अंतमें तराईके ही एक गाँवमें सदाशिवने एक झोंपड़ीमें आश्रय लिया। वहाँ सदाशिवने अपनेको वैसे ही एकाकी पाया, जैसे महाराज युधिष्ठिरने अपनेको हिमालयपर पाया था। कदाचित् महाराज युधिष्ठिरकी यथासाध्य पूर्ण समता प्राप्त करनेके लिए ही उसने एक कुत्ता भी पाल लिया। कदाचित् उसने [illegible] नहीं [illegible] प्रकार ही [illegible] था जिस प्रकार [illegible] युधिष्ठिर [illegible] आगे पीछे [illegible] थे।

सदाशिवका [illegible] आगे-पीछे रहता था, उसके

जूते चाटता था, उसका रूमाल उठाकर दे देता था, गालियों और बेंतसे जैसे प्रसन्न होता था—उन्हें खाकर भी दुम हिलाता था, भूखा रहकर भी भक्तिहीन न होता था, उसके आसरे मैदानमें या दुकानोंके बाहर घंटों खड़ा रहता था, प्यारसे थपथपाया जाने या देखे जानेपर विविध मुद्राओं-से अपनी प्रसन्नता प्रकट करता था और किसी भी बातकी शिकायत न करता था। सदाशिव विस्मित था। वह रातको दो बजे उठ कर ब्राह्म-मुहूर्त तक गंभीर चिंतन करता था कि किसी कालेज-कुमारीपर आसक्त कोई कुल-दीपक इन बातोंमें ग्रामसिंहका गुरु है अथवा ग्रामसिंह ही गुरु है। शोककी बात है कि सदाशिवने इस विषयके विचारोंको लिख कर नहीं रखा, नहीं तो कोई विश्वविद्यालय उसे 'डाक्टर' उपाधि दे देता। सदाशिवके ध्यानमें यह बात न आयी हो, ऐसा नहीं; पर उसने सोचा कि अमृतवल्लीका संधान मिलने पर जो निधान मिलेगा, उसके व्ययका विधान करते समय, उसका बहुत थोड़ा अंश किसी विश्वविद्यालयको कन्या-ओंका वैज्ञानिक स्नानागार बनवानेके लिये दे देनेपर मुझे वहाँसे आन-रेरी डाक्टरेट की पदवी मिल ही जायगी।

सदाशिव कँटीले पेड़ोंके जंगलोंकी पूछताछ उसी तत्परतासे करने लगा जिस तत्परतासे कहीं नया आया हुआ डाक्टर वहाँके रोगोंकी करता है। वह ऐसे स्थानोंके नाम बड़ी सावधानीसे 'नोट' करने लगा जैसे डाक्टर नयी पेटेंट दवाओंके नाम 'नोट' करते हैं।

सदाशिवने एक झुरमुटी खोज की : वह कुत्तीकी भौंह जैसी वक्र और पत्तीदार भी। संस्कृत पंडितोंने गुल्मोंका नाम बहुत पहले [illegible] [illegible] [illegible] अर्थात् [illegible] प्रयोग [illegible] किया था जैसे हिन्दीके कवि कबीर, सूर, तुलसी, आदिके नामोंका प्रयोग उन्हें बिना ऐसे ही [illegible] [illegible] करते रहते हैं। पहली बार झुरमुटी [illegible] [illegible] सदाशिवके

रोयें खड़े हो गये जैसे बिल्ली देखकर चूहे के रोयें खड़े हो जाते हैं। महाभारत युद्धको रोमहर्षण कहा गया है—आज सदाशिवने उसका तत्त्व समझ लिया।

सदाशिव प्रातःकाल उस समय घरसे निकलते, जिस समय दीवाली की रातको लोग अपने घरोंसे दारिद्र्य निकालते हैं। कुत्ता उनके आगे-आगे रहता, उसकी दुम पीछे रहती; जैसे हिंदीके लेखकोंके नामके पीछे उपनाम रहता है। सदाशिवको उसपर—दुमपर नहीं, संपूर्ण कुत्तेपर श्रद्धा होगई थी। उन्हें याद आ गया था कि धर्मने दो ही रूप धरे हैं, एक बैलका, एक कुत्तेका। पर बैल लगड़ा था, अतः वह रूप उन्हें पसन्द न आया। दूसरे, युधिष्ठिर कुत्तेको सशरीर स्वर्ग ले जाना चाहते थे, बैलका इतना भाग्योदय अभी नहीं हुआ है।

सदाशिव दिन भर निःशंक होकर अमृतवल्ली खोजता। उसे हिंस्र पशुओंसे भय न था—कुल्हाड़ीके बल पर नहीं, काटोंके कारण। काँटोंके अर्थात् कठालके जंगलमें, रुद्राक्षोंसे आकृष्ट होकर बैल ही रह सकता है। सदाशिव चाहता था कि कोई बैल मिले। वह देखना चाहता था कि धर्मके दो रूप—बैल और श्वानसिंह—आमना-सामना होने पर एक दूसरेका अभिनन्दन किस रूपमें करते हैं। अभिनन्दनमें श्वानसिंहको उकसानेके लिये सदाशिवमें उत्साहकी कमी न थी।

[illegible] मेघदूतके यक्षसे अधिक भाग्यवान् मानता था। उस बेचारेके पास तो कुत्ता भी न था, न वह रामगिरिसे कहीं जा सकता था। उक्त यक्षकी तरह वह भी जंगलकी अनेक वस्तुओंमें सुरलीका [illegible] देखा करता था, पर अमृतवल्लीका भ्रम करानेवाली भी कोई वस्तु उसे न दिखाई पड़ती। सदाशिव दिन भर घूम-फिर कर उस समय घर-

की ओर लौटता, जब उलूक-शिशुतक उसके सिरपरसे उड़-उड़कर आहा-रान्वेषणमें निकल पड़ते।

वियोगमें—मुरलीके और अमृतवल्लीकी प्राप्तिके—सदाशिव शिशिरकालिक मण्डूककी भाँति पचक गया था। एक दिन रातको उसने गुरुपाक भोजन कर लिया। उससे उसे वैसी ही गाढ़ निद्रा आई जैसी आजकलके प्रेमियोंको प्रेमीका पत्र प्राप्त कर आती है या परीक्षा समाप्त होनेपर छात्रोंको आती है या हैंडनोट तमादी हो जाने पर उसे लिखनेवालोंको आती है।

सदाशिवकी नींद टूटी, उसे उठते ही धर्म-राजका दर्शन हुआ। वे उस समय अपने मुख-मंडल पर बार-बार बैठती एक मक्षिकाको मारनेका गंभीर प्रयत्न कर रहे थे। उनका अग्रहस्त मक्षिकाको उड़ाता था और मुख उसे उदरसात् करनेकी चेष्टा कर रहा था। सदाशिव उठकर खड़े हो गये। उन्होंने कहा—हाँ, इसीको कहते हैं धैर्य, इसीका नाम है लगन—धर्ममें धैर्य और लगन होनी ही चाहिये।

उन्होंने झटपट कपड़े पहने, खुरपी ली और बाहर निकल पड़े।

सूर्य भगवान् ४०० वाटके बल्बकी तरह पूर्व दिशामें दिखायी दे रहे थे। रात भरमें जैसे प्रकृति बदल चुकी थी। वसंत-पवन लताओंपर अँगड़ाइयाँ ले रहा था। काक-कुल आज विशेष प्रसन्न था। कोकिलका बहुत दिनोंसे मौन कण्ठ खुल गया था। गिलहरियाँ पेड़ोंपर दौड़ मार रही थीं, वानर 'लांग जंप' कर रहे थे। भ्रमर भ्रमरियोंको भूलकर मालति-कुंजोंकी ओर भागे जा रहे थे।

खुरपीने भी आज नया रास्ता पकड़ा। बहुत दूर जाकर उसे एक [illegible] दिखायी पड़ा। खुरपी उसपर दौड़कर चढ़ चली। सदाशिवने भी अनुसरण किया। १५-२० मिनट चढ़नेके बाद चढ़ाई समाप्त हुई।

सदाशिव मुस्काने लगा। कुत्ता आगे दौड़ गया। थोड़ी देर बाद उसके भूँकनेकी आवाज सुनायी पड़ी। सदाशिवको कुत्तेकी आवाजसे ज्ञात हो गया कि उसने ही किसीपर आक्रमण किया है। वह आश्वस्त हो कर धीरे-धीरे उस ओर चला। मोड़से बाँयें हाथ मैदान था। सदाशिवको वहाँ कुछ दूरपर एक झोपड़ी दिखायी पड़ी। उसके बाहर, थोड़ी दूरपर, एक पेड़के सहारे एक स्त्री खड़ी थी; उससे कुछ हट कर कुत्ता खड़ा भूँक रहा था। महिलापर आक्रमण न करनेकी कुत्तेकी शिष्टतासे सदाशिव पुलकित हुआ, पर दूसरे ही क्षण उसे क्रोध हुआ। आखिर, भूँकनेकी ही अशिष्टता क्यों? वह कुल्हाड़ी निकाल कर कुत्तेकी ओर दौड़ा।

पर, पास आकर वह एकाएक खड़ा हो गया। उसके हाथसे कुल्हाड़ी गिर पड़ी। उसके शरीरका सारा खून उसके पैरोंमें उतर आया।

महिला उसकी ओर बढ़ी। उसने कहा—मैं जानती थी, तुम आओगे।

मनोहरने रुआंसा होकर कहा——मुरली! तुम्हारे कपोल आध इंच पिचक गये हैं, उनकी लाली रूमालोंने चुरा ली है; तुम्हारा पहलेसे ही पतला मध्यदेश अब अस्ति-नास्तिके बीचमें हो गया है—तुम्हारे पैरकी उँगलियाँ ठीक चंपाकी कली हो गयी हैं, तुम्हारा......

मुरली चुप रही।

मनोहर आगे बढ़ा। मुरलीने त्रस्त हो कर चारों ओर देखा।

मनोहर ठिठक गया। उसने कातर होकर कहा——क्या तुम्हारा विवाह...............

मुरलीने सिर नीचा कर लिया।

मनोहर वहीं जमीनपर बैठ गया। कुछ क्षणों बाद उसने कहा——अब अमृतवल्लीका क्या करूँगा! अब धतूरा खोजूँगा। क्या तुमने सम्मति दी थी?

मुरलीने सिर हिलाया ।

मनोहरने उछलकर कहा—तो क्या चिन्ता है ! तुम मेरे साथ भाग चलो, नहीं तो मैं तुम्हारे साथ भाग चलूँ । कोई स्थान तुम्हारे ध्यानमें है?

मुरली मुस्कुरायी ।

मनोहरने आहत होकर कहा—तुम मुस्कुराती हो ! मेरी लाश...

मुरलीने कहा—मेरा विवाह

मनोहरने अधीरतासे कहा—उसकी चर्चा बार-बार क्यों करती हो !

मुरलीने कहा—नहीं हुआ है ।

मनोहरने कहा—ऐं ! नहीं हुआ है ! तुमको सबसे पहले यही न कहना था ! मान लो, मेरा हार्ट फेल हो जाता तो तुम अब बिधवा न हो जातीं !

मुरलीने कहा—पिताजी चाहते तो बहुत थे ।

मनोहरने कहा—गिनकर सौ बार कहो—मेरा विवाह नहीं हुआ है । अरे, बिना गिने ही कहो ! कहो, कहो, कहो । बार-बार इसीकी चर्चा करो ।

पर, मुरलीने न कहा ।

मनोहरने कहा—अभीसे बात नहीं मानतीं हो तो विवाहके बाद क्या हाल होगा ! खैर, तुम एक चिट्ठी तो छोड़ आतीं !

मुरलीने कहा—मौका नहीं मिला । मैं चूड़ियाँ तो छोड़ आयी थी ।

मनोहरने मुरलीका मुँह ध्यानसे देखा, फिर कुत्तेकी ओर देखा । वह मुरलीका पैर चाट रहा था ।

मनोहरने कुत्तेको गोदमें उठा लिया । कहा—मेरा मुँह चाट मुँह !! आज सुबह तेरा ही मुँह देखा था । अब जीवन भर देखूँगा । मुरली ! तुम्हारी कोई सखी है ?

मुरलीने पूछा—क्यों ?

मनोहरने कुत्तेको गोदमें लिये, नाचते हुए कहा---इस कुत्तेके उपकारका भी तो कुछ बदला देना होगा ।

सहसा मनोहरने कुत्तेको जमीन पर पटक दिया । जेबसे एक कागज और पेन्सिल निकाली । कागज पर कुछ लिखकर मुरलीको दिया, कहा, ---यह मेरा पता है । रख लो । फिर कोई विघ्न हो तो चिट्ठी लिखना ।

मुरलीने कागज ले लिया । वह कुछ कहना चाहती थी । तभी एक कोनेसे वैद्यजी आते दिखाई पड़े । मुरली जमीनमें गड़ गई ।

मनोहरने कुत्तेको पकड़ कर कहा---गुरुजी ! प्रणाम । उधर ही रहियेगा, कुत्ता जरा खतरनाक है ।

वैद्यजी चट पट जहाँके तहाँ खड़े हो गये । । तब बोले---तू आ गया ? मुरली तू जा ।

मुरलीके जानेपर मनोहरने कहा---जी हाँ । सोचा, कदाचित् अरिष्ट--आसवकी कमी हो गयी हो ! यह शरीर हाजिर है ।

गुरुजीने ध्यानसे मनोहरको देखा, तब पूछा---मनोहर ! मुरलीसे विवाह करेगा ?

अब मनोहरने ध्यानसे गुरुजीको देखा ।

गुरुजी बोले---पर, यह बता कि इसमें कोई भी दोष हो, तू तैयार है ?

मनोहरने कहा---आप किसीके भी पुत्र हों, कहीं के भी हों, बिना माता-पिताके उत्पन्न हो गये हों, कुछ भी हो, मैं विवाह करूँगा । आप अनुमति न दें तो भी करूँगा ।

वैद्यजी कुत्तेको भूलकर मनोहरके पास आ गये । उसके कंधेपर हाथ रखकर कहा---तो आज अर्ध रात्रिको मुहूर्त है ।

मनोहरने अत्यन्त विनयसे पूछा---आप शव---साधन तो नहीं कर रहे हैं ?

वैद्यजीने विस्मित हो कर पूछा—शव-साधन क्या ?

मनोहरने जरा रुककर कहा—वह वैद्यकसे मिलती-जुलती एक क्रिया है। उसमें भी शवको जीवित किया जाता है।

वैद्यजीने उत्सुकतासे पूछा—तू जानता है ? हमें भी सिखा देना।

मनोहरने कहा—मैं आज ही विवाह करूँगा।

× × ×

विरहियोंको अदक्षिण, दक्षिण समीरण, कह्लार–काननका मकरंदा–सव पिये, स्खलित–पद मद्यपकी भाँति चल रहा था। बीच-बीचमें पुष्पों-के प्याले मुखसे लगाता चलता था। कोकिलका पञ्चम स्वर अविच्छिन्न था। षट्पद मृगमदके अनुसंधानमें व्यग्र थे। पूर्व—क्षितिजपर काल–ऐन्द्र जालिकने कंडोल (बाँसकी पिटारी) खोल कर उसमेंसे एक रक्तवर्ण गोलक बाहर निकाल लिया था।

उसी समय झोपड़ीसे वर और बधू निकली। रक्तवर्ण गोलककी आभा बधूके कपोलोंपर पड़ने लगी।

वरने पूछा—मुरली ! वैद्यजीने विवाह कैसे कर दिया ?

मुरलीके कपोलोंका रंग और गहरा हो गया। उसने नीचे देखते हुए कहा—कई दिन पहले मेरी एक —रिश्तेकी बहन किसीके साथ...

मुरली मनोहरने बीच ही में कहा—उसका जीवन नन्दन–कानन बनाने चली गयी ? यही न ? तो ?

बधूने कहा—अब हम जातिसे बहिष्कृत हैं।

वरने सोल्लास कहा—उसे बहुत पहले ही जाना चाहिये था। वैद्य-जीमें यह सद्बुद्धि उत्पन्न करनेके लिये तुम्हारे रिश्तेदारोंके यहाँ एक भी मौत न हो जाती, तब भी कोई हर्ज न था।

बधूने अपने हाथोंके गुलदस्तों स्वामीका मुँह बन्द कर दिया।

कुछ देर बाद वधूने पूछा —

अमृतवल्ली तो तुम्हें नहीं मिली ?

वरने गंभीरतासे कहा—कल मिल गयी ।

वधूने उत्कण्ठासे पूछा—सच ?

—हाँ । दो कँटीले पेड़ोंके बीचमें एक निष्कण्टक पेड़के सहारे अमृतवल्ली मिली । एक ओर मैं, एक ओर वैधजी; बीचमें तुम ।

तभी बसन्त—समीर का एक झोंका आया । अमृतवल्ली मानों उसके स्पर्शसे क्षणभरमें पुष्पित हो गयी । उससे चमेलीके फूल टपकने लगे ।

प्रोफेशनल

कहा जाता है कि बारह बरसमें घूरेके भी दिन फिरते हैं। इस महा-युद्धमें यह बात सत्य सिद्ध हुई।

पंजाबके एक गाँवमें हवाई अड्डा बना। उस गाँवमें स्टेशन भी बना और कालका मेल भी वहाँ सात मिनट खड़ी होने लगी। स्टेशनके बाहर सिगरेटकी महकसे भी घबरानेवाले, तम्बाकूका किसी भी रूपमें स्पर्श न करनेवाले किन्हीं सरदारजीने एक होटल खोला। वह कुछ स्टेशनोंके बुकिंग आफिसोंकी तरह [illegible] था और उसमें 'बकरे' के मांससे बने पदार्थ और शराब बिकता था। शराब दो तरहकी थी—विलायती और देशी। देशीके दो प्रकार थे—एक देशी डिस्टलरियोंमें बनी, दूसरी सरदारजीके तत्त्वावधानमें बनी। पर, सरदारजी यह बात किसीसे कहते न थे—अपने [illegible] में थे। हाँ, सिगरेट भी वहाँ बिकते थे। उन्हें [illegible] लड़का बेचता था, वही उन्हें छूता था।

पौषके महीनेकी एक रातको १२ बजकर ९ मिनटपर उक्त होटलके दरवाजेपर एक युवक आकर खड़ा हुआ। उसने भीतर झाँका।

भीतर एक मेजपर कोई ३८-४० [illegible] एक सज्जन बैठे थे। वे सिविलियन पोशाकमें थे। कुरसीके पीछे उनकी [illegible] टँगी हुई थी। वे दोहरे बदनके थे, पेट कुछ निकला हुआ था। उनके सामने मेजपर [illegible] एक गिलास, सोडावाटरकी [illegible], एक प्लेटमें चार पोटैटो ([illegible] भुने, नमक [illegible]), एक प्लेटमें कटे प्याज और ककड़ीके टुकड़े रखे थे (सिगरेटका

राखदान) था। उनके दाहिने हाथमें शीशेका गिलास और बाँयेंमें सिगरेट था।

दूसरे टेबुलपर भी कई बोतलें और खानेका सामान था तथा उसे घेरे तीन आदमी थे।

दरवाजेके पास एक टेबुलके सहारे स्वयं सरदारजी थे। टेबुलपर रसीदबुक, पेन्सिल और ड्रिंकर्स नाइफ (एक तरहका चाकू जिसमें शराब-की बोतल खोलनेका साधन खास तौरसे होता है) था।

भीतरवालोंने भी एक बार बाहर खड़े युवककी ओर देखा और तब अपने काममें संलग्न हो गये। सरदारजीने युवकका स्वागत किया—आओजी पाही (भाई !)

युवक भीतर घुसा। वह २५-२६ वर्षका था—लिंबा, सुडौल शरीर, चेहरेपर लाली और परिश्रम तथा निराशाका आभास। वह भी मिलिटरी पोशाकमें था।

उसने भीतर आकर सरदारजीसे पूछा—सोनेको जगह मिल सकती है?

सरदारजीने कहा—जुरूर, जुरूर! सनाब (असबाब) कहाँ है?

—स्टेशन मास्टरके यहाँ।

—जुरूर! सब कुच्छ मिल सकदा पे (सब कुछ मिल सकता है)। खाणा खाओगे?

—हाँ

सरदारजीने हाँक लगाई—ओ रामसींगई (रामसिंह) इथों आ (यहां आ)।

पहले टेबुलपर जो सज्जन थे उन्होंने शायद आधा सिगरेट जोरसे फर्शपर दे मारा, गिलाससे एक आधा घूँट लेकर उसे टेबुलपर रखा। दो-तीन टुकड़े प्याजके मुँहमें भरे और उन्हें कच-कच चबाते उठ खड़े

हुए। वे सरदारजीके टेबुलके पास आये, जरा लड़खड़ाते। उन्होंने युवकको नीचेसे ऊपरतक देखा, [illegible]रा और आँखोंको आधा बन्द कर, गर्दन जरा टेढ़ीकर, दाहिने हाथसे अपना सीना ठोंककर, युवकसे बोले—मुझे पिछा-नता है ? हम है कप्तान साब। तू केया (क्या) है ?

युवकने उन्हें देखा और मुसकराहट रोककर गम्भीरतासे कहा—हव-लदार।

—हौलदार ! एं ! हमको सलाम कर।

युवकने फौजी सलाम किया।

कप्तान साबने खुश होकर कहा—तुम भोत अच्छा खोते (गधे) दा (का) बच्चा है। आ, हमारे टेब्बलपर आ, शराब पी, खाणा खा, जित्तना चाहे पी, पीत्ते पीते बेहोश हो जा, अप्पणे आपको भूल जा, आ !

कप्तान साहब हवलदारको खींचकर अपने टेबुलपर ले आये और चिल्लाये— एक गलास !

सरदारजीके 'रामसींग'ने तुरत उस टेबुलपर एक गिलास रखा और पूछा—होर (और) ?

कप्तान साबने रामसिंहके लाये हुये गिलासमें ड्राइ जिन ढालते हुए दूसरे हाथसे रामसिंहको जानेका इशारा किया। उसके चले जानेपर मुँहसे कहा—अभी (अभी) ज्जाओ।

हवलदारने कप्तानका हाथ पकड़कर कहा—बस।

कप्तान साब बोले—च.च.च.च. ! बस ? बसके क्या मानी ?

और उन्होंने अपना गिलास एक बारमें खाली कर उसे फर्शपर दे मारा। दूसरे टेबुलके लोगोंने चौंककर एक बार इधर देखा और फिर पीने लगे।

सरदारजीने कप्तान साबके सामने दूसरा गिलास लाकर रखा और

अपने टेबुलपर जाकर उनके बिलमें लिखा—एक कंच (काँच) का गलास, बारह आने।

हवलदारने कप्तान साबके गिलासमें ढालना शुरू किया। कप्तान साब बोले—बोतल मुँहसे लगा दे साकी ! बोतल !! सुनो—

फिक्रे-मीना क्यों है साकी,
क्यों तलाशे-जाम है।
तू लगा दे मुँहसे खुम
पीना हमारा काम है॥

हवलदारने कहा—फिरसे !

कप्तान साबने शेर फिर पढ़ा और तब दोनोंने गिलास उठाकर मिलाये। हवलदारने कहा—टु योर हेल्थ !

कप्तान साबने कहा—नो ब्लडी ! हमारी मेम साबका हेल्थ।

दोनोंने कई घूँट पीकर गिलास रखे।

कप्तान साबने पूछा—छुट्टीपर ?

—ना।

—भाग आये ? फ्रेंच लीव ?

—ना।

—तो ?

—बरखास्त।

—क्यों ? पासमें कोई किताब या अखबार पकड़ा गया ?

—नहीं।

—किसी अफसरकी मशूक (माशूक) मार दी (उड़ा दी) ?

—नहीं।

—नानसेंस ! आखिर !

—हवलदारीके बाद हवाई जहाजकी तालीम ली। फिर मन नहीं लगा।

—तब ?

—कानका मैल आँखोंमें लगाया। आँखें लाल हो गयीं। मैंने कहा—मुझे दिखायी कम पड़ता है।

—तब ?

—डाक्टरी हुई। दवा मिली। उसे फेंक दिया। कानका मैल लगाता रहा। अन्तमें बरखास्त।

—तब मिलिटरी ड्रेस कैसे पहने हो ?

—दो महीनेकी मोहलत मिली है। अगर आँखें अच्छी हो गयीं,

—अच्छी हो जायँगी ?

—घरपर मन न लगा तो।

कप्तानने हवलदारकी पीठ ठोंकी। कहा—बड़ा होशियार है तू ! बीबी बहुत खूबसूरत है ?

—शादी नहीं हुई।

—एं ! तो घर क्यों जाता है खोतेदा बच्चा ! पलटनमें मशूक कम हैं !

हवलदारने म्लान मुसकुराहटसे कहा—एक लड़कीसे प्यार था।

कप्तानने उसकी पीठ ठोंककर कहा—शाबाश मेरे शेर ! फिर ?

—उसे मुझसे प्यार था।

—तब शादी क्यों नहीं हुई ?

—वह कहती थी कि तुम मेरी माँसे कहो। मैं कहता था कि तुम कहो।

कप्तानने नाराज होकर कहा—गधा कहींका ! मुझसे कहा होता, मैं कह देता।

—इसी बीच एक दूसरा आदमी आ पहुँचा। लड़कीकी माँने मुझसे कहा कि उसकी शादी तय कर रहे हैं। मैं चुप रहा, वह भी चुप रही।

कप्तानने कहा—नतीजा यह हुआ कि उसकी शादी हो गयी।

—नहीं, शादी नहीं हुई, सिर्फ मँगनी हो गई।

—तो अब भी मौका है। तू पूरा गधा है। इसी लिये पल्टनमें आया था?

—हाँ

—और वहाँसे भी भागा। अगर घर भी मन न लगा?

—देखा जायगा।

—तो तुम अमेच्योर (शौकसे करनेवाला) आशिक हो, प्रोफेशनल (पेशेवर) नहीं!

—मतलब?

—आशिक दो तरहके होते हैं—अमेच्योर और प्रोफेशनल, यह तो जान गया न!

—हाँ।

—एक बातमें अमेच्योर और प्रोफेशनल बराबर होते हैं। दोनोंके दिलपर 'टु लेट' (किरायेपर देना है) की तख्ती लगी होती है। दोनों अपनी पसन्दके किरायेदार उसमें ठहराते हैं। पर, अमेच्योर एक ही बार और एक हीको ठहराता है, प्रोफेशनल एकबारमें बहुतोंको भी ठहरा लेता है। अमेच्योरमें यह ताकत नहीं होती। वहाँ किरायेदार ही जब तबीयत होती है चला जाता है।

हवलदार बोला—शुरूमें तो सभी अमेच्योर होते हैं।

—नहीं! मौसमका फर्क होता है। एक आदमी हमेशा [illegible]

सीखता है कि खुदको मजा मिले, दूसरा इसलिए सीखता है कि दूसरेको मजा देकर उसकी कीमत ली जाय।

हवलदार सोचने लगा।

कप्तान साब बोले—देख बेटे! प्यारके पन्थमें अमेच्योर बहुत कम होते हैं, शायद नहीं होते। क्योंकि दिलसे केरायेदारके जाते ही अमेच्योर मरने लगता है—उसका दिल जीरो—शून्य—हो जाता है। अकसर उसे दूसरेसे भरना पड़ता है। जीरोपर एक और आनेसे क्या होता है, जानता है! दस। जहाँ एकसे दो हुए कि दिल घर नहीं सराय हो जाता है। फिर उस दिलवाला प्रोफेशनल हो जाता है।

—लेकिन

—हाँ, इतनी बड़ी दुनिया है। कहीं-न-कहीं अमेच्योर होगा ही। लेकिन कितना मुश्किल है अमेच्योर रहना, यह समझमें आ गया?

—हाँ।

—अब तू बता, अभी तो तू अमेच्योर है। अब क्या करेगा? बना रह सकेगा अमेच्योर?

हवलदार चुप रहा।

कप्तानने कहा—प्रोफेशनलोंको यह झंझट नहीं। पर प्रोफेशनल होना बड़ा कठिन है।

हवलदार हँस पड़ा।

कप्तानने कहा—दाँत क्या निकालता है। अच्छा मैं कुछ सवाल पूछता हूँ, जवाब दे।

हवलदारने मौन सम्मति दी।

कप्तानने पूछा—हर एक माशूकके पीछे तेरा दिल दौड़ सकता है?

—नहीं।

—उसका घर देखने उसके पीछे जा सकता है ?

—नहीं ।

—उसकी गलीमें दिनभरमें सौ-पचास चक्कर लगा सकता है ?

—ना ।

—उस गलीके लोगोंको कुछ शक हो, वे कुछ पूछें तो कुछ बहाना बना सकता है या उन्हें अपने कामसे लगनेकी सलाह दे सकता है ?

—ना ।

—दिनमें कई बार कपड़े बदल सकता है, जेबमें छोटी कंघी और शीशा रख सकता है ? किसी दोस्तसे अपनी मुहब्बतके इज़हारका खत लिखाकर माशूकके सामने फेंक सकता है ?

—नहीं ।

—उसे सुनाकर फ़ुरकतके गाने गा सकता है ?

—नहीं ।

—माशूकके बाप या भाई या किसी औरके जूते खा सकता है ?

—राम कहो ।

—माशूकके ?

—इसरार और किया जा सकता है ।

—बीस [illegible] ।

—नहीं ।

—इसके बाद भी खत लिख सकता है, आँख मार सकता है, टकटकी लगाकर देख सकता है ?

—नहीं ।

—और [illegible] है, यह भी [illegible] है ? [illegible] का । और एक बात तो अभी बाकी ही है ।

—क्या ?

—अपने बापके जूते खाना और घरसे निकाला जाना।

हवलदारने उठकर, हाथ जोड़कर कहा—दुहाई है कप्तान साब ! मैं प्रोफेशनल होनेसे बाज आया।

कप्तान साबने अपना सीना ठोककर कहा—इधर देख बेटा। प्रोफे-शनलों का भी बाप हूँ।

—तो आप ?

—हाँ, हाँ; लात-जूता सब। अपने बापका भी, दूसरोंके बापोंका भी। अब उस्ताद हो गया हूँ। एक बार तो सभी कामोंमें दिक्कत होती है।

—लाइये आपके पैर छू लूँ। आप तो पहुँचे हुए हैं।

—दिक्कतें जितनी ज्यादा होती हैं बादमें मजा उतना ही ज्यादा मिलता है। तुम प्रोफेशनल होते तो क्या वह लड़की हाथसे निकल जाती ! [illegible] इतना [illegible] जवान ! अरे, तू तो बस महीने भरमें प्रोफेशनल हो सकता है। थोड़े दिन मेरी शागिर्दी कर।

—माफ कीजियेगा; दिलमें हिम्मत नामकी चीज ही नहीं है।

—सुन, तेरे ही जैसा कोई बच्चा था। वह एक लड़कीसे प्यार करता था। उसी बीच मैं पहुँच गया। मैं ठहरा प्रोफेशनल। मिनटोंमें बाजी मारी। वह उल्लूका पट्ठा देखता ही रह गया।

—शादी कर ली ?

—वहीं [illegible] आया हूँ। लड़की क्या है, चाँदका टुकड़ा है। [illegible] तुझे दिखाऊँगा। मेरी शादीमें शरीक होना। तेरे दो-तीन दिन मजेमें कट जायेंगे।

—कहाँ चलना होगा ?

—बस यहाँसे तीन कोसपर, पहले ही गाँवमें। लड़की यहीं आ गयी है। वैसे वे रहनेवाले तो करूर गाँवके हैं। लड़कीका नाम चञ्चल, उसके बापका नाम अमरसिंह, उसके बापका नाम कीरतसिंह, उसके बापका—

हवलदारने अपनी दोनों कुहनियाँ टेबुलपर रख लीं और सिर हथेलियोंमें। कप्तान साबने उसका कन्धा झकझोरकर कहा—क्या जरा-सीमें ही बोल गये। लो और पियो।

हवलदारने सीधे बैठकर पूछा—तो शादी कब है?

—परसों। चल यार, मजा रहेगा।

हवलदार उठ खड़ा हुआ। बोला—कप्तानजी! अब मैं अपना सबाब ले आऊँ, फिर पिऊँगा।

—नींद आ रही है?

—हाँ।

—तो जा मेरे शेर, ले आ। फिर पियेंगे डटके। परसोंकी पक्की, क्यों?

हवलदार लड़खड़ाता हुआ बाहर निकला। पर स्टेशनकी ओर न जाकर एक ओर अँधेरेमें चला।

सरदारजीने कप्तान साबसे कुछ कहा, वे उठकर दरवाजेपर आये और चिल्लाये—ओ टोडी बच्चा! अबे आज ही मेरी ससुरालमें चला जायगा? अच्छा सलाम कह देना।

हवलदारने एक बार पीछेकी ओर देखा, पर आगे बढ़ना न रोका।

* * *

पौ फटते-फटते हवलदार एक गाँवमें दाखिल हुआ। गाँवकी सीमा-

पर ही उसे एक किसान मिला जो जुएके नीचे, दो ऊँचे, हृष्ट-पुष्ट बैलोंको हाँकता खेतोंकी ओर जा रहा था ।

हवलदारने रुककर उससे कुछ पूछा । किसानने उसे ध्यानसे देखा । उसे कुछ सन्देह हुआ । उसने पूछा—तुम मोहनसिंह ?

हवलदारने कहा—हाँ ।

किसानने उसे कुछ बताया और उसे देखता हुआ आगे बढ़ा ।

मोहनसिंह गाँवके एक गलियारेमें घुसा । आगे जाकर एक नीमके पेड़के नीचे वह ठिठका । कुछ देर बाद उसने जरा गला साफ किया और पेड़से सटे मकानके दरवाजेपर थाप दी । फिर, भीतरसे कुछ आहट सुन पड़ी । कोई चलकर दरवाजेतक आया । पूछा—कौन है ?

हवलदारने फिर गला साफ किया और कम्पित स्वरमें बोला—मोहन ।

दो मिनट बीते । मोहनने फिर थाप दी । भीतरसे किसीके बोलनेकी क्षीण शब्द-तरंग मोहनके कानोंसे टकरायी । कोई फिर आया, उसने दरवाजेका हुड़का हटाया और दरवाजा खुला ।

दरवाजा खोलनेवाली वृद्धाने आँखें गड़ाकर देखा और कहा—मोहन तू ! मैं तो समझी थी,

मोहन वृद्धाको प्रणाम किया, और पूछा—माँ, भीतर आऊँ ।

वृद्धाने मोहनका हाथ पकड़कर भीतर खींच लिया, उसकी पीठपर हाथ फेरते हुए कहा—तू तो अचानक चला गया, कहाँ था ?

—पलटनमें ।

—छुट्टीपर आया है ?

—नहीं, लौट आया ।

—कितना दुबला हो गया है ! बहुत तकलीफ थी ना !

—हाँ ।

—मैंने तो तुझसे शादीको कहा था।

—अब फिर कहो माँ!

....

—कहो माँ! मैं सुनकर ही हटूँगा, कहो।

—उसने तो दरवाजा भी नहीं खोला!

—आवाज पहचान ली थी।

—अच्छा तू उधर जा। मैं आती हूँ।

:o: :o: :o:

दूसरे दिन सबेरे कोई नो बजे उस गाँवसे एक बैलगाड़ी निकली। मोहनसिंह उसमें था। उसके पास ही एक युवती बैठी थी।

गाड़ी चली। एकान्तमें आनेपर मोहनसिंहने बहुत धीरेसे युवतीसे कहा—इतनी नाराज थीं कि दरवाजा भी नहीं खोला!

युवतीने सिर झुका लिया।

मोहनने कुछ और कहा। सिर और झुक गया।

थोड़ी दूर जानेके बाद कई बैलगाड़ियाँ आती दिखायी दीं। मोहनसिंहने सावधानीसे देखा और युवतीसे कुछ कहा। उसने भारी चादर अच्छी तरह ओढ़कर घूँघट कर लिया।

बैलगाड़ियाँ पास आ गयीं - मोहन खड़ा हो गया और पुकारा—सलाम कप्तान साहब!

अगली गाड़ीपर बैठे कप्तान साहब चौंके, इधर देखा और उठकर बोले—कहो बेटे। खूब आये! कहाँ चले गये थे?

मोहनने हँसकर कहा—इधर ही आ गया। संयोगसे कल मेरी शादी हो गयी।

कप्टन साहब आश्चर्यमें पड़े; फिर बोले—तो अब अमेन्धोर नहीं रहे?

मोहनने कहा—आपके कुछ घण्टोंके सत्संगमें ही प्रोफेशनल हो गया !

—तो अब बेटे, सुख भोगोगे । लो लौटो न ! मेरी भी बारात कर दो ।

—बहू साथ है ।

—अच्छा यह बात !

—जी हाँ, मिलिटरी आदमी ठहरा । सब काम चटपट !

—तो बहूको दिखा दो !

—जरूर । लेकिन एक शर्तपर ।

—क्या ?

—आप शादी करके मेरे गाँव आइये, मेरे मेहमान होइये । तब आप भी देख लीजिये, मैं भी देख लूँगा । आपने वादा किया था ।

कप्तान साहब खिलखिलाकर हँसे । साथ ही बैलगाड़ियोंकी ओर संकेत कर बोले—बराती भी साथ आवेंगे !

—जरूर, आप सब भाइयोंसे बिनती है; जरूर आवें ।

—पता ?

मोहनने अपना नाम और पता बताया । गाड़ियाँ दो दिशाओंमें आगे बढ़ीं । मोहनने चिल्लाकर कहा—आना जरूर कप्तान साहब ! मेरा नाम हवलदार मोहनसिंह प्रोफेशनल !

कप्तान साहबका अट्टहास सुन पड़ा ।

मोहनसिंहने अपनी पत्नीसे कहा—कप्तान साब शादी करने जा रहे हैं ! लौटकर हमारे मेहमान होंगे ! बहूकी खातिरदारी तुम्हारे जिम्मे है ।

बहूने मुस्कराकर पतिकी ओर देखा और फिर नीचा कर लिया ।

:०: :०: :०:

कप्तान साहबकी बरात गाँवमें प्रविष्ट हुई। बैलगाड़ियाँ रुकीं।

कुछ देर कप्तान साहब रुके रहे। तब किसी जाते किसानसे पूछा—करूरके अमरसिंहका कौन मकान है?

—वो रहा नीमके नीचे। क्यों?

—आज उनके यहाँ शादी है न?

—कल हो गयी। लड़की अपनी ससुराल गयी, उसकी माँ करूर गयी। यहाँ घरमें ताला बन्द है।

मिनट भर बाद एक बरातीने पूछा—भला कहाँ हुई?

—हो गयी जी! मोहनके साथ, हवलदार मोहनसिंहके साथ।

'मड़ा-फेला'

लेखककी सूचना—

समासके चक्करमें पड़कर 'मड़ा-फेला' विशेषण हो जाता है और उसका अर्थ होता है—शवको फेकनेवाला। वैसे 'मड़ा' का अर्थ 'शव' और 'फेला'का 'फेकना' होता है। बंग-भाषाके इस शब्दके दोनों अर्थोंपर ध्यान रखते हुए, इस कहानीका यह नामकरण किया गया है।

काशीमें १००-१५० 'मड़ा-फेला बामुन' [शवका वहन और दहन करनेवाले ब्राह्मण] हैं। ये केवल काशीमें ही हैं और बंगाली ही इनका उपयोग करते हैं।

ये समाज-बहिष्कृत हैं। इनका पानी नहीं चलता।

धनी व्यक्तियोंकी शवयात्रामें ये अलङ्कार मात्र होते हैं, अर्थात् आगे-आगे खोल-मजीरा बजाते और अवसरके उपयुक्त वैराग्यपूर्ण पद गाते हुए चलते हैं। अपना असली काम ये वहाँ करते हैं, जहाँ शव-वाहक कोई न हो या किसी लावारिसकी सद्गति करनी हो।

अन्तिम स्थितिमें अब अ-बंगीय भी इनका उपयोग करने लगे हैं।

अब कहानी पढ़िये।

सेठ मटरूमल भैरूँदासकी पाठशाला और क्षेत्र काशीमें तो प्रसिद्ध है ही, बाहर भी है। न-जाने किस प्रकार, ये लोग गूँथते हुए उसमें ही आकर घुस जाते हैं, जिन्हें उनके घरवाले अपने लिए बिलकुल निकम्मा

समझकर एक लोटा और एक धोती थमाकर, पढ़नेके लिए काशी विदा कर देते हैं। जिस प्रकार उक्त लोग बिना टिकट रेलकी यात्रा समाप्त कर, काशी स्टेशनपर उतरकर, सीधे उस 'क्षेत्र व पाठशाला' के दरवाजेपर आकर खड़े हो जाते हैं उससे ज्ञात होता है कि सेठ मटरूमल भैरूँबगसने भारतके सब स्टेशनोंपर अपने एजेंट रख छोड़े हैं।

भाषा-तत्त्वके गोताखोरोंके लिए 'मटरूमल भैरूँबगस' नाम बहुत आकर्षक और मननीय है। एक भाषा-तत्त्व-विद्ने 'भैरूँबगस' की व्याख्या इन शब्दोंमें की है—

"इस नामके स्वामी मारवाड़के हैं, यह तो 'क्षेत्र व पाठशाला' की बाहरी दीवाल पर लगे ५ फुटके पत्थरसे ज्ञात हो जाता है। यह वंश बहुत प्राचीन भी ज्ञात होता है क्योंकि इसके नामोंपर अब भी मुसल्मानी प्रभाव स्पष्ट है। 'बगस' और कुछ नहीं 'बख्श' है, जैसे मौलाबख्श। अकबरकी कृपासे मारवाड़के लोगोंका मुसल्मानोंसे और स्वयं अकबरसे भी यत्परो नास्ति घनिष्ठ संबंध स्थापित हो गया था। अकबरकी कृपाके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने लिए वहाँके लोगोंने अपने नाम भी मुसल्मानी नामों से मिश्रित करने शुरू कर दिये थे। सेठ मटरूमल भैरूँबगसके वंशजोंका मुसल्मानोंसे किस प्रकारका संबंध था, इसकी छान-बीन हमारा उद्देश्य नहीं। किसीको कौतूहल हो तो उनके वंशजोंसे मिले।...

भैरूँका शुद्ध रूप भैरव है। अनुमान होता है कि पहले मारवाड़में भैरव-पूजा बहुत प्रचलित थी। अतः पूरे नामका शुद्ध रूप है—भैरवबख्श।

'मटरूमल'की व्याख्या कहीं देखनेमें नहीं आयी। आशा है, कोई भाषा-तत्त्व [illegible] इसपर भी 'अपने [illegible]' [illegible]।"

मटरूमल भैरवबख्शने यह 'क्षेत्र व पाठशाला' किस [illegible] [illegible]

बनवायी थी, यह हमें ज्ञात नहीं। अर्थात् प्रामाणिक कारण ज्ञात नहीं। कुछ लोगोंका कथन है कि सेठजीको उनकी जातिके लोगोंने ईर्ष्याके कारण कुछ अर्थ-दण्ड दिया था; कुछका कहना है कि चंदा करके यह पुण्य कार्य किया है और चंदेमेंसे आधा बचा लिया और 'क्षेत्र व पाठशाला'पर अपने नामका पत्थर लगवा लिया।

'क्षेत्र व पाठशाला' दोनोंका काम एक ही मकानमें सम्पन्न हो जाता है, इसके अतिरिक्त सम्पन्न होनेवाले कार्योंकी फेहरिश्त हम पेश न करेंगे; प्रसंगतः जो कुछ ज्ञात हो जाय, उससे ही पाठक संतोष करें।

वह मकान गङ्गाजीके पास और विश्वनाथजीका दूरका पड़ोसी है। उसके ये गुण जाँचकर ही उसका संग्रह किया गया था। उस मकानके गुण और अवगुणोंकी जाँच मटरूमल भैरूँबगसने उसी तत्परतासे करायी थी, जिस तत्परतासे अपने भावी जामाताकी करायी थी।

यह मकान पूरबको कुछ झुका हुआ, पासमें संगीन और भीतर जानेको सुरंग जैसा मार्ग होता है। सुरंग पार करनेपर छोटा-सा चौक मिलता है, जिसके तीन ओर कोठरियाँ हैं और एक ओर सीढ़ी और पैखाना तथा कल। वह मकान पँचतल्ला है।

वह मकान किसी महाराजाधिराजने, किसी विशिष्ट इञ्जीनियरसे अपनी असूर्यंपश्या पत्नियोंके लिए बनवाया होगा। वह मकान सूर्यदेवकी आँखोंमें धूल झोंककर उनकी दृष्टि अपनी महिमासे बचा जाता है। लक्षणा और व्यञ्जनासे अपरिचित लोग निश्चित कर लेंगे कि उस मकानमें कवि पहुँच जाते होंगे, क्योंकि 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि' यह प्रसिद्ध है; पर हम कवियोंकी ओरसे इसका प्रतिवाद कर देते हैं।

उस मकानकी नीचेकी कोठरियोंमें विद्याके अर्थात् संस्कृत विद्याके अर्थी रहते हैं और प्रति वर्ष दो-एक अर्थियोंकी अरथी वहाँसे निकल:

करती है। यह उन अर्थियोंका दोष है, मकान या उसके मुनीमजीका नहीं, जो पाँचवें तल्लेमें निवास करते हैं।

मटरूमल भैरूँवगसने जिस व्यक्तिको अपनी दारिकाका दान किया था, उसके लघुभ्राता श्रीमान् चिथरूमल चूड़ीवाला जब अपनी समस्त संपत्ति और हृत्-पद्मकी प्रत्येक पँखुरी लुटाकर भी सामान्य स्त्रियोंतकका प्रेम और सहानुभूति प्राप्त न कर सके और इसी शोकमें फाटकेके बाजारमें भी जाना बंद कर चुके यहाँ तक कि दूकानदार मालका मुँह देखनेसे बचने लगे; तब भैरूँवगसजीने अपने जामाताको और कृतकृत्य करनेके लिए उन्हें (चिथरूमलजीको) अपनी 'पाठशाला व क्षेत्र' का मुनीम बनाकर भेज दिया।

चिथरूमलजी ऊँची दृष्टिके आदमी हैं। यह बात उनकी गलीके मकानोंकी स्त्रियाँतक शपथपूर्वक कह सकती हैं। रास्तेमें, चलते समय, वे इधर-उधर तभी देखते हैं, जब किसी स्त्रीसे टक्कर हो जानेकी आशंका होती है। और मानों उसे सावधान करनेके लिए ही वे अपनी जेबमें पड़े रुपये खनखनाने लगते हैं। वे शायद डायरी भी लिखते हैं क्योंकि उस समय अपनी घड़ी भी बार-बार देखा करते हैं।

ऐसे गुणी चिथरूमलजीके लिए एक क्षेत्र और पाठशालाको सम्हाल लेना क्या कठिन था! उन्होंने देखा कि हमारे विद्यार्थी आँखें बंद करके धातुएँ रटते हैं। उन्हें संदेह हुआ कि रटते समय ये अपने शरीरके आस-पास-के शिवालयों या शहरके खेतोंका ध्यान करते होंगे। इसे रोकनेके लिए उन्होंने २३) को एक कामधेनु खरीदी और उसे तथा उसके बछड़ेको अलग-अलग दो कोठरियोंमें बाँधने लगे! पर, कहा उन्होंने यही कि गौ परम पवित्र होती है, उसका मूत्र उससे भी अधिक पवित्र होता है और गोबर कितना पवित्र होता है, यह तो कहा ही नहीं जा सकता। मूत्र और

गोबरकी गंधसे दमा नहीं होता, दाद नहीं होता और बिवाई नहीं फटती। उससे स्मरणशक्ति तीव्र होती है क्योंकि ज्ञान-तंतु सदा सचेत रहते हैं। विद्यार्थीको और चाहिए ही क्या !

यह कहना तो व्यर्थ ही है कि उक्त दो कोठरियोंमें भी विद्यार्थी तो पहले हीसे रहते थे। चिथरूमलजी कई दिनों विद्यार्थियोंको डाँटते रहे कि तुम लोग ऐसे हो कि यह पशुतक तुमसे भड़कता है।

उधर, गौ-माता गंध-मात्र देकर संतुष्ट न रही। वह विद्यार्थियों-पर मूत्र और गोबर का छिड़काव कर उन्हें अधिकाधिक पवित्र बनाने लगी और बार-बार रँभाकर बछड़ेका कुशल-मङ्गल पूछने लगी। बछड़ा उछलकर कुछ उत्तर देता था और उसकी हर उछालपर, चिथरूमलजीके डरके मारे विद्यार्थियोंका कलेजा बैठा जाता था।

चिथरूमलजीने विद्यार्थियोंके हितके लिए बहुतसे नियम बनाये। उनमेंसे कुछ नियम और उनके उद्देश्य दिये जाते हैं—

१—विद्यार्थियोंके लिए सबसे सस्ता अन्न लाना [उद्देश्य—विद्यार्थी अधिक खाते हैं। महँगा अन्न खाकर उनका पेट न भर सकेगा।]

२—आठ सेर आटेके पराठे आध पाव घीसे बनवाना [उद्देश्य—घीसे चर्बी बढ़ती है, अधिक घी खानेसे कहीं विद्यार्थियोंके मस्तिष्कमें चर्बी न बढ़ जाय। तब उनकी बुद्धि स्थूल हो जायगी।]

३—यदि विद्यार्थी कहीं निमंत्रण खाने जायँ तो वहाँ प्राप्त उनकी दक्षिणा आदि अपने पास जमा कर लेना [उद्देश्य—विद्यार्थी क्षुद्र होते हैं। कुछ पैसों हीसे, चूहोंकी तरह उछलना शुरू कर देते हैं। १)-१) इकट्ठा होनेपर कोई कुकर्म न कर बैठें।]

४—रातको आठ बजेके पहले ही सब विद्यार्थी अपनी कोठरीमें बन्द हो जायँ [उद्देश्य—विद्यार्थी रास्तेमें बहुत शोर-गुल और आपसमें

मार-पीट करते चलते हैं। इससे नागरिकोंकी शांति नष्ट न हो।]

५—पुलिस किस तरह लोगोंको फँसाती है और तब किस तरह उनपर शारीरिक अत्याचार करती है, इसके अतिरंजित विवरण बीच-बीचमें विद्यार्थियोंको सुनाना [उद्देश्य—विद्यार्थियोंका स्वभाव ही चुगली खानेका और शिकायत करनेका होता है। उन्हें पुलिसतक जानेका साहस कभी न हो।]

इत्यादि।

इसी क्षेत्र व पाठशालामें एक दिन रातको दस बजे साधारण नियमोंका भंग देखनेमें आया—अर्थात् चौकमें मिट्टीके तेलकी एक ढिबरी जल रही थी, विद्यार्थी दालानमें सटे-सटे बैठे थे, एक विद्यार्थी चौकके नीचे पत्थरपर लेटा था। उसका नाम रामसुंदर था।

दालानमें बैठे विद्यार्थियोंमें बहुत धीमे स्वरमें बात-चीत हो रही थी, जैसे वे कोई षड्यन्त्र कर रहे हों।

एकने कहा—रामसुन्दर अब नहीं बचेगा।

दूसरा—मर जाना ही अच्छा है। उसका मल धोते-धोते चित्त व्यग्र हो गया।

तीसरा—उसे दवा पिला दो।

चौथा—बेल-पत्ती और मट्ठा पिलानेसे लाभ क्या होगा? उसे गङ्गाजल पिलाओ।

पाँचवाँ—१५ दिनसे मर रहा है। कुछ दवा भी तो नहीं हुई।

दूसरा—सेठजी (अर्थात् चिथरूमलजी) ने होमोपैथिक दवा पिलानी दी। उनकी कई शीशी खाली हो गयीं।

चौथा—सेठजी साले कहाँके डाक्टर हैं?

पहला—साला-वाला बहुत धीरेसे कहो। कहीं सुनता न हो।

तीसरा——श्मशान चलना पड़ेगा।

पहला——मैं उठाऊँगा नहीं। इसके भयानक रोग है।

कई एक साथ——हम भी नहीं उठायेंगे।

पाँचवाँ——सेठ कहेगा तब!

पहला——सेठ ही उठावेगा।

चौथा——सेठने अपने बापको तो उठाया ही नहीं होगा।

तीसरा——सेठ निकाल देगा तब!

दूसरा——गङ्गा-तट तो है।

छठा——आज जाड़ा कितना है!

दूसरा——यहाँ कौन आग तापते हैं?

पाँचवाँ——अस्सी गये हो कभी? सङ्कटमोचनके सामने सण्डासियों (संन्यासी)के लिए लोगोंने कैसे महल बनवा रखे हैं?

पहला——संन्यासियोंने सब-कुछ त्याग दिया है।

तीसरा——हमको वह मकान मिल जाय तो हम भी त्याग दें।

दूसरा——क्या त्यागा है? मालपुवे खाते हैं, कपड़े-रुपये इकट्ठे करते हैं, बिजली जलाके सोते हैं।

पाँचवाँ——अरे, चोटी कटायी है, जनेऊ तोड़कर फेंका है!

दूसरा——दण्ड कमण्डल लादे घूमते हैं। जनेऊ और चोटीका बोझ उससे अधिक है?

तीसरा——तुम दण्ड-कमण्डल ले लो, मौज करो; मना कौन करता है।

दूसरा——मेरे तो स्त्री है।

पहला——उसे भी लाके किसी मकानमें रख लेना। भिक्षा वहीं जाके करना।

तीसरा—मुझे दान कर दे !

इसी समय रामसुन्दरने हिचकी ली। तीसरेने कहा—उसे कोई याद कर रहा है।

पहला—हाँ।

दूसरा—यमराज।

चौथा—अब तो यमदूत यहाँ आकर खड़े हो गये होंगे।

पाँचवाँ—एक ऊपर बैठा है (श्रीमान् चिरञ्जमलकी ओर संकेत था।)

तीसरा विद्यार्थी उठा। उसने गङ्गाजलका लोटा उठाया और रामसुन्दरके मुँहमें पानी डालनेके लिए झुका।

रामसुन्दरका चेहरा काला पड़ गया था, पुतलियाँ स्थिर थीं, आँखोंके किनारेसे पानी बह रहा था। शरीर कभी-कभी काँपकर सिकुड़नेकी चेष्टा करता था। मुँहसे बेलपत्ती और मट्ठा बह रहा था, उससे उसकी गर्दनके आस-पासका सब स्थान भीग गया था।

विद्यार्थीने देखकर लोटा रख दिया और दालानमें आकर कहा—सेठजीको बुलाओ।

—क्यों ?

—मर रहा है।

—यह तो तीन दिनोंसे ऐसे पड़ा है।

—अब देर नहीं।

—न मरा तो सेठ बिगड़ेगा कि हमें क्यों बुलाया।

तीसरे विद्यार्थीने कुछ सोचा और तब मुनीमजीको बुलाने ऊपर चला।

मुनीमजी छतपर अँधेरेमें एक मुँडेरेसे लगे हुए, सामनेके मकानकी

और एकटक देख रहे थे। मोहल्लेमें कौन क्या करता है, यह जाननेकी उनमें अदम्य जिज्ञासा थी—सदा से। इसके लिए वे कई बार तिरस्कृत, लांछित और 'जूतकृत' (जुतियानासे बना हुआ देशी भाषाका रूप) भी हो चुके थे। पर, 'लागी नाहीं छूटे राम चाहे जिया जाय।'

विद्यार्थीने एकाएक 'सेठजी' कहा तो वे चौंके, काँपे और घूम पड़े। पर सामने विद्यार्थी मात्रको देखकर आश्वस्त भी हुए और क्रुद्ध भी।

उन्होंने शीर्ण-वंश-विनिंदित स्वरमें कहा—वाह महाराज! तुमने तो ऐसा डरा दिया कि हाथसे चिलम गिर पड़ी। छः आनेका माल (अर्थात् गाँजा) मिट्टीमें मिल गया।

विद्यार्थी—रामसुन्दर मर रहा है।

मुनीमजी—अभी मरा नहीं?

—कदाचित् अब मर चुका हो।

—विद्यार्थी मरते भी कितने प्रपञ्चसे हैं। १२) की दवा खा गया और मरता भी नहीं।

—जरा चलकर देख लीजिए।

—मैं उसकी घरवाली हूँ, मैं क्या देखूँ?

—तो हमलोग क्या हैं? हमीं क्यों देखें?

मुनीमजीने तार सप्तकके गान्धारके आस-पास स्वर कायम करके कहा—तुम साले और किसलिए हो? हरामीका खाना, पड़े रहना। चमार कहींके। तुमसे चमार भी अच्छे।

आन्दित कन्था-गलीयकी स्थिति उस समय कदाचित् इस प्रकार ही थी क्योंकि—

उस विद्यार्थीने निःशंक खड़े मुनीमजीके चेहरेपर लगाकर तमाचा

मारा। उसका शब्द वैसा ही हुआ जैसा मिट्टीके लोंदेपर तमाचा मारनेसे होता है।

मुनीमजीका हाथ गालपर जाकर स्थिर हो गया—वे तो स्थिर थे ही।

मुनीमजीको पूरा चैतन्य-लाभ उस क्षण हुआ, जब उन्होंने मुँडेरेपरसे अपना शरीर गलीकी ओर, नीचे खसकाया जाता देखा। वे न-जाने क्या चिल्लाये और दूसरे क्षण वे छतपर पटक दिये गये।

मुनीमजी काँपते हुए उठ खड़े हुए। विद्यार्थी सामने खड़ा था।

उन्होंने हँसनेकी चेष्टा करते हुए कहा—आप, आप तो दिल्लगीमें नाराज हो गये।

विद्यार्थीने कहा—मैं भी दिल्लगी कर रहा था—तुम्हारे चिल्लानेसे अधूरी रह गयी।

मुनीमजीने जेबसे दो रुपये निकाले, विद्यार्थीके हाथमें रखे और कहा—किसीसे कहना मत महाराज!

विद्यार्थीने कहा—रामसुन्दर मर रहा है।

मुनीमजीने उत्साहसे कहा—हाँ, हाँ, चलिए। हे हे! काशीमें गुरुगलाम! धन्य भाग! चलिए, मरतेको देखना, उसे चट-पट फूँक डालना, यह सब बड़े पुण्यका काम है। चलिए।

तभी किसी पड़ोसीने जोरसे पूछा—मुनीमजी! चिल्लाया कौन था?

मुनीमजीने तत्परतासे कहा—कोई नहीं। मैंने सपना देखा था, डर गया था।

फिर मुनीमजीने विद्यार्थीसे कहा—यार, तुम इतनी जल्दी सीढ़ी मत उतरो। मैं भी [illegible] हूँ। यह न समझना कि मैं डरता हूँ। मैं एक बार परेतसे कुश्ती लड़ चुका हूँ।

सेठजीको देखकर नीचेके सब विद्यार्थी खड़े हो गये ।

सेठजी गंभीरतासे रामसुन्दरके पास जा बैठे ।

पहले विद्यार्थीने कहा—डाक्टर देख लेता तो अच्छा होता ।

सेठजी बोले—डाक्टर जान बचा सकते तो वे खुद ही क्यों मरते ? 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' गीतामें भगवान्‌ने कहा है । कर्म हमलोग कर ही रहे हैं । रात-दिन जागते हैं, पानी, गोबर, गोमूत्र, बेलपत्ती सभी कुछ खिला-पिला रहे हैं । इसपर भी मर जाय तो इसके बापकी तकदीर ।

चौथेने कहा—अब तो देर नहीं मालूम होती ।

दूसरा बोला—तैंने कितने आदमी मरते देखे ! सेठजी आप देखिये, आपने बहुत देखे होंगे । बड़े आदमी ठहरे ।

मुनीमजी रामसुंदरपर झुके, तभी उसने जोरकी हिचकी ली, साँस कुछ रुका, घरघराहट शुरू हुई ।

मुनीमजी चौंककर पीछे हटे, बोले—काटेगा क्या ? ऐं !

फिर देखकर फरमाया—बस, अब मरता ही है ।

यह कहकर वे रामसुंदरके कानमें चिल्लाने लगे—राम ! राम ! फिकर मत करो, चैनसे मरो ! तुम्हारे घर खबरें भेज दी जायगी, समझे !

पाँचवेंने कहा—यह भी कह दीजिये कि तुम्हारा सामान तुम्हारे घर-वालोंको दे दिया जायगा ।

मुनीमजीने कहा—सामान ! सामान क्या है !

—क्यों ! बीसों धोती, लोटे, आचमनी, गिलास, माला, रुपये-पैसे!

मुनीमजी—दूसरेका माल और अपनी अक्ल सदा ज्यादा दिखाई देती है । ४ धोती [illegible] हो गयीं । लोटेमें आगे [illegible] हो गये ।

उन्होंने पूछा—तेरा आपके पास क्या-क्या है ?

मुनीमजीने हँसकर कहा—आपका तो सब रखा ही है। मैं तो राम-सुंदरकी बात कहता हूँ।

तीसरे विद्यार्थीने कहा—बतला ही क्यों नहीं देते !

मुनीमजीने कहा—इसमें बात ही क्या है। जो कुछ आपलोग कहिएगा, मैं दे दूँगा।

छठेने कहा—साफ-साफ कहिए।

तीसरेने कहा—चलो हुआ। सब ठीक हो जायगा।

तभी रामसुंदरने हिचकी ली, उसकी आँखें फैलीं, घरघराहट बंद हो गई, प्राण निकल गये, मुंहसे बेलपत्ती और मटेका बोल बहने लगा।

मुनीमजीने कहा—श्री हरी ! श्री हरी ! भव-सागरके पार गया ! आपलोग गीताका पाठ करो। हाँ, धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

किसीने पाठ शुरू न किया।

मुनीमजी बोले—अब आप लोग सो जाइये। सुबह

तीसरे विद्यार्थीने कहा—नहीं। शव अभी उठना चाहिए।

मुनीमजीने कहा—जैसी आप लोगोंकी इच्छा। आपलोगोंको ही तकलीफ होगा।

तीसरे विद्यार्थीने कहा—हम लोग नहीं उठावेंगे।

—क्यों ?

—हमारी इच्छा।

—तब कौन उठावेगा ?

—बनारसमें बहुत से सेठ आपके परिचित हैं, [illegible]।

मुनीमजीने [illegible] कहा—[illegible]

और वे मुनीमजी बाहर चले। [illegible] विद्यार्थी [illegible] पीछे [illegible]। अब

वे दरवाजा खोलकर बाहर हो गये तो उसने उसे भीतरसे बन्द कर लिया।

× × ×

दरवाजा बन्द होनेपर मुनीमजी चार-छः कदम चले और तब दरवाजे पर नजर गाड़कर खड़े हो गये, मानों वे उस 'क्षेत्र व पाठशाला' से सदा के लिए निकाल दिये गये हों। वे ऐसे खड़े थे जैसे गङ्गा नहाकर आता हुआ कोई विप्र चमारसे छू जानेपर खड़ा हो या, बीसों बरस बाद लौटा हुआ पथिक अपना घर पहचान कर भी संदेहमें पड़ा हो।

कुछ देर बाद मुनीमजी आगे बढ़े। चौड़ी गलीमें आनेपर तीन-चार कुत्ते उनके पीछे इस तरह चले, मानों ऐसे समय उन्हें गलीमें देखकर उन्हें (कुत्तोंको) यह सन्देह हुआ हो कि वे (मुनीमजी) किसीका खून करने जा रहे हों और वे (कुत्ते) इस बातकी सूचना देते चल रहे हों।

उस समय मुनीमजी जिस तरह चल रहे थे उससे यह ज्ञात होता था कि वे ठोकर खाना पसन्द करते हैं, धीमे चलना नहीं। उन्हें कोई पहलवान उस समय देखता तो बहुत-से पैतरे सीख लेता।

५-७ मिनट बाद मुनीमजी एक ऐसे स्थानपर आये, जहाँ दो नम्बरी ईंटे रखी थीं। उन्होंने यह विचार न किया कि किसी परोपकारी ने ये ईंटे, वहाँ, क्यों रखी हैं। उन्होंने झुककर एक ईंट उठाई और भरपूर ताकत लगाकर कुत्तोंकी ओर फेंकी कुत्ते पीछे भाग गये, तब मुनीमजीने दूसरी ईंट उठाई और उसे लिए कुत्तोंकी ओर दौड़े। कुत्ते जैसे उन्हें चिढ़ाते हुए भाग चले। कुछ दूर दौड़कर मुनीमजी हाँफते हुए खड़े हो गए और लौटे। चलते-चलते वे सड़क पर पहुँच गये। तब उन्होंने पटरीपर की दूकानोंकी [illegible] ईंट रख दी और आगे बढ़े।

चलते वे सीधे गंगा-तट पर गये, हाथ-मुँह धोया और ऊपर चले।

अंतिम सीढ़ियोंके पास वे उस स्थानपर आये, जहाँ एक साधुजी और तीन-चार व्यक्ति आग ताप रहे थे। एक व्यक्ति प्रेम-पूर्वक, दत्त-चित्त हो कर हथेलीमें गाँजा मल रहा था। मुनीमजी भूल गये कि इन व्यक्तियोंने उन्हें नीचे उतरते वक्त इस तरह देखा था जैसे वे गंगाजीमें डूबने जा रहे थे। वे उनके पास गये और साधुजीको 'नमो नारायण' करके बैठ गये। साधुजीने 'आओ बचा' कहकर उनका स्वागत किया और पूछा—किधरसे भगतजी?

मुनीमजी—नींद नहीं आती थी, सोचा कि सतसंग हो जाय।

साधुजीने प्रसन्न होकर कहा—अच्छा, अच्छा। दे बेटा, भगतको दे।

गाँजा मलनेवालेने चिलम भरी और 'भगत' के हाथमें दे दी।

भगतने उसे साधुजीकी ओर बढ़ाकर कहा—परसादी हो जाय बाबा।

बाबाने दम लगाना शुरू कर दिया। चिलम हाथोंहाथ घूमने लगी। मुनीमजीका जाड़ा भाग गया, चित्त प्रसन्न हो गया।

एक लम्बा दम मारकर बाबाने देरतक नाक और मुँहसे धुँआ निकाला, उसे विलीन होते देखा और तब पूछा—सुराजमें झंझट क्यों होती है?

मुनीमजी इस तरह बैठे जैसे घास खोदनेकी तैयारी कर रहे हों और बोले—कुत्ते! जब तक हिंदुस्तानमें कुत्ते हैं, और भले आदमीको रास्ता चलना बंद करनेपर लगे हैं, तबतक सुराज कैसा?

बाबाजी कदाचित कबीरके चेलोंके वंशमें थे; उन्होंने मुनीमजीकी बातका कुछ अर्थ समझा और कहा—लाख रुपयेकी बात कही है।

मुनीमजी उत्साहित होकर बोले—सबको मार डालना चाहिये।

अबकी बाबाजी चुप रहे।

मुनीमजी कहते चले—और ये विद्यारथी! चमार साले। हरामका

खाना, पड़े रहना ! मुर्दा तक नहीं उठावेंगे । बस, बोरेमें बाँधके मिरिचके टापूमें छोड़ दें ।

बाबाजी ध्यानसे मुनीमजीको देख रहे थे । उन्होंने पूछा—इस लाइनमें कबसे हो ?

मुनिमजी कुछ समझे नहीं ।

बाबाजीने अपना आशय स्पष्ट किया—गोयंदागिरी (जासूसपन) कबसे कर रहे हो ?

मुनीमजीने कहा—गोयंदा कैसा ? मैं तो अपने छेतरके बिदारथियों-की बात कह रहा हूँ ! अच्छा, अब चलूँ ।

मुनीमजीने खड़े होकर एक अठन्नी बाबाजीके पास रखी, हाथ जोड़े और आगे बढ़े ।

मुनीमजीके दूर जानेपर बाबाजीने गाँजा मलनेवालेसे बहुत धीरेसे कहा—गोयंदा यहाँतक लगा आ गया । अभी यहाँसे भाग चलो । पुलिस बुलाने गया है ।

वे लोग तुरत उठे, नीचे उतरे और एक नावपर चढ़कर उसे खोल दिया । बगलकी नावोंके सहारे उन्होंने अपनी नाव बाहर निकाली । धीरे-से डाँड़े लगाये और तब रामनगरकी ओर बढ़ने लगे ।

× × ×

मुनीमजी बंगाली टोलेसे केदारघाटकी ओर बढ़े । सब दूकानें बन्द थीं । कहीं-कहीं हलवाइयोंकी भट्ठियोंके पास दो-एक कुत्ते सोये थे । वहाँ मुनीमजीने चाल तेज कर दी, पर वे कुत्ते सोये ही रहे । मुनीमजीने मनमें कहा—ये शायद उस जातिके कुत्ते हैं जो बीच सड़कपर लेटकर, लात खाकर, [illegible] और [illegible] पहचानेका पेशा करते हैं ।

बहुत दूर जाकर मुनीमजी एक मकानके द्वारपर खड़े हुए और

उसकी कुंडी खटखटाने लगे। कुछ देर बाद दूसरे तल्लेकी खिड़कीसे झाँककर किसीने पूछा—के ? (कौन ?)

मुनीमजीने कहा—हम हैं। हमारे घरमें मुर्दा मर गया है। आपके घरमें कोई मर जाता है, तब 'हरिबोल' करनेवालोंको कहाँसे बुलाते हैं ?

उसने कहा—'खड़ा रहो' और वह पीछे हटा। मुनीमजी सोचने लगे कि वह नीचे आकर बतायेगा। दो मिनट बाद उनके ऊपर एक बाल्टी पानी एक साथ गिरा। वे बेतहाशा सामने भागे और कुछ दूर आकर अपना अलवान शरीरपरसे उतारकर उसे झटकारा और तब उससे सिर पोंछने लगे। यह क्रिया करनेके बाद वे उस ओर मुँह करके खड़े हुए जिस ओरसे भागे आये थे और चिल्लाकर बोले—हमारे भाईके ससुरके यहाँ बहुतसे बङ्गाली काम करते हैं। कल सबको निकलवा दूँगा। समझा !

तब वे आगे बढ़े। थोड़ी दूरपर उन्हें एक बड़ा मकान मिला जिसके बाहर चौड़ा चबूतरा था और वह बड़े-बड़े खंभोंपर पटा हुआ था। उसपर ६-७ आदमी सोये थे। मुनीमजीने ध्यानसे उन्हें देखा और जब उन्हें निश्चय हो गया कि उनके पास बाल्टी, लोटा और लाठी नहीं है, तब उन्होंने एक आदमीका कंबल खींचा। वह बंगभाषामें—'आ गया रे, मार डाला रे' कह कर उछला। साथ ही और लोग भी—'एँ, क्या, कौन, चोर' कहते हुए उठ बैठे। इसके बाद उन लोगोंने आपसमें लड़ना शुरू कर दिया। विषय यह था कि कंबलवालेको वहाँ सोना चाहिए था कि नहीं, जहाँसे सहजमें कंबल खींचा जा सके; विशेषतः जब उससे कह दिया गया था कि वहाँ न सोये, क्योंकि सब 'हिन्दुस्तानी' (यू० पी० के निवासी) बदमाश, डकैत और गिरहकट होते हैं।

मुनीमजीने बीच हीमें जोरसे चिल्लाकर कहा---हमको मुर्दा ढोनेवाले और 'हरिबोल' करनेवाले बंगालियोंकी जरूरत है।

यह सुनते ही उन लोगोंकी लड़ाई एकदम बन्द हो गयी और वही कम्बलवाला बोला---आपको मड़ाफेला बामुन दरकार है?

मुनीमजी---हमको मड़ा-फेला दरकार है, वह चमार हो तो क्या।

---हम चमार भी दे सकता है। बनारसमें बहुत लोग मरने लगा है। खाली बामुन कहाँतक सकेगा?

---तुम मड़ा-फेला हो?

---सोई तो बोला। आपको चमार दरकार है? आप कौन जात है?

---कोई जात है, तुमसे मतलब!

---नहीं, ऐसा ही पूछा। हमको मुर्दासे मतलब है।

---हम सेठ है। हमारा घरमें

---आपका बापजी मर गिया?

---नहीं, हमारा

---लरिका?

---क्या बोलता है साला!

---माप करेगा सेठजी। सब मरनेको वास्ते पैदा होता है।

---हमारा पाठशालामें एक पण्डित मर गया। विद्यारथी।

---विद्यारथी? विद्यारथी बहुत बदमास होता है। हम नवद्वीपका आदमी है। हमारा काका मस्त (बड़ा) पण्डित थे। हमारा काकीको साथ एक विद्यारथी भाग गिया। वही दिनसे हमारा काका हमको संसकिर्त्तं नहीं पढ़ाया। हम बोला---'हम पढ़ेगा'। काका हमको घरसे निकाल दिया। हम काशी चला आया।

सेठजी---तुम बिहारथीको उठावेगा कि नहीं, साफ बोलो ।

---अलबत्त उठावेगा । हम बिहारथी लोगसे सम्पर्क नहीं राखता, किन्तु उसको जला सकता है ।

---तुम क्या लेगा ?

---कितना आदमी चलेगा ?

सेठजी क्रुद्ध होकर बोले---हम क्या बरात निकालेगा कि हजार-दो-हजार आदमी ले चलेगा ?

---बड़ा आदमी सब कुछ करने सकता है ।

---हमारा कोई आदमी होता तो देखता ।

---कोई फिकिर नहीं । हम सदा हाजिर रहेगा । हमको क्या करने होगा ?

---तुमको मुर्दा उठाना होगा और जलाना होगा ।

---पिंडी (पिंड) आप देगा ?

---हम क्यों देगा ? तुम पागल है क्या !

---तब सात आदमी लगेगा ।

---काहे को ?

---चार आदमी उठायेगा, दो आदमी खोल-मँजीरा बजायेगा, एक आदमी पिंडी देगा एवं सत्कार (शव-दाह) करेगा ।

---क्या लेगा ?

---बिहारथी मोटा है ना पतला ?

---तुम्हारा माफिक ।

---ओ, आपसे कुछ मोटा है । कुच्छो हर्ज नहीं । तीस टाका (रुपया) लेगा ।

---तीस टाका !

—बिहारणीका वास्ते बोल दिया। आपका बापजी होनेसे १२५ टाका देगा।

—बहुत बोलता है।

—कुछ नहीं बोलता है। सात आदमी पाँच घंटा खटेगा, मड़ा उठा कर ले जायगा, जलायगा, चार-चार टाका भी नहीं पायगा?

—पिंडीका काम नहीं है, उसका घरवाला करेगा।

—अच्छा बात है। चार टाका कम देगा।

सेठजीने तब कहा—तुम ३० टाका कैसे कहा? ६ आदमीका २४ टाका हुआ।

—२ टाकाका सनई लगेगा।

अगत्या सेठजीने मंजूर किया।

कंबलवाला बोला—हमको १७ टाका दीजिए। १० टाका आगाम (पेशगी) बादमें कटेगा।

—और ७ टाका?

—७ टाका हिसाबमें शामिल नहीं है। उसका हम लोग गाँजा-शराब पियेगा।

—मतलब कि ३३ टाका लगेगा?

—आलबत्त! लोग अपना 'मड़ा' ऐसे ही उठाने सकता है, दूसरा का मड़ा उठानेका वास्ते शराब पीना पड़ता है।

—७ टाकाका शराब गाँजा पीकर चलेगा?

—पीकर चलेगा, मशान (श्मशान) में पियेगा, घर आकर पियेगा।

—इतना पीयेगा?

—नहिं केतना है, देखता है?

—हमको तो नहीं लगता।

—आपको पैसाका गरमी है। आप अपना पगड़ी हमको दे दें तो आपको भी लगेगा।

सेठजीने १७) निकालकर, कई बार गिनकर दे दिये। रुपये लेकर वे लोग आपसमें कुछ परामर्श करने लगे। कुछ देर बाद सेठजीने कहा —जल्दी करो।

एकने उत्तर दिया—अच्छा हमारा नाम गारंटी हो गिया। बाद काहीं भागने तो सकता नाहीं!

सेठजीने क्रुद्ध होकर कहा—हम अपना घरमें पानी नहीं पी सकता है।

कोई उत्तर न मिला। वे लोग सात रुपयोंके विशिष्ट सदुपयोगके चिंतनमें डूबे हुए थे।

मुनीमजीने कहा—देखो, एक घंटाके भीतर आनेसे दो रुपया और देगा।

उन लोगोंने कहा—आप जाइए। पता बोल जाइए।

मुनीमजी—घर न मिला तो?

उत्तर—यमराज इतना दूरसे आपका घर पहचान लिया, हम बतलानेसे भी भूल जायगा!

मुनीमजी पता बतलाकर चल पड़े। उन लोगोंने चिल्लाकर कहा—आप तैयार रहेगा, हम लोग आता है।

× × ×

मुनीमजी उनकी गलीमें पहुँचे तो देखा कि कुत्ते सब पहचाननेकी मुद्रामें पड़े हैं। वे अपने दूकानपर खड़े हुए तो उन्हें ज्ञात हुआ कि भीतरवाले किवाड़ बंद हैं और, बीच-बीचमें एक दूसरेको टकरा रहे हैं।

दरवाजेकी कुंडी बहुत सावधानीसे मोहल्लेवालोंकी खिड़कियों और

झँए खुलने लगे। खिड़कियोंसे मुँह बाहर निकलने लगे और मुँहोंसे ये बातें:—सोना हराम कर दिया। रात-रात भर बाहर घूमना है तो दरबान रखो। क्या कोई मर गया? विद्यारथी क्या बहरे हो गये! चिल्ला तो रहे हैं। कल ही पुलिसमें रिपोर्ट करेंगे।

मुनीमजीने सब बातें शांत रहकर सुनीं जैसे वोट माँगनेवाले सुनते हैं और तब उन्होंने कहा—जब सब विद्यार्थी जीते रहते हैं, तब कभी शोर-गुल होता है? किसीने सुना है? धरमका काम है भाइयो! कफन दो, लकड़ीके लिए रुपये दो और बिदारथीको समसान (श्मशान) ले चलो। तुम लोग अमर नहीं हो, सब मरोगे, तुम्हारे बिदारथी तब काम आवेंगे। एक दिनका शोर-गुल [illegible]! हाँ भाइयो!

मुनीमजीने सिर ऊपर उठाया। सब खिड़कियाँ बन्द थीं, कोई सिर बाहर न था। उन्होंने विजयीकी भाँति कहा—छी-छी! धरमके नामपर सब भाग गये। खिड़की बन्द कर लेनेसे मौत नहीं भागेगी। वह ठीक वक्तपर आ जायगी। धरम ही साथ जायगा।

आकाश-भाषण समाप्त कर वे गलीके मोड़पर आये और एक दुकानके पटरेपर बैठ गये। दो-चार मिनट बाद ही खोल-मजीरेकी आवाज और हरिबोल सुनायी पड़ा। मुनीमजी कहने लगे—ये बङ्गाली सुखसे सोने भी नहीं देते। शाम हुई और गवना शुरू कर दिया।

और दो-चार मिनट बाद हरिबोलवालोंका जुलूस पास आया। मुनीमजीने दौड़कर खोलवालेका हाथ पकड़ा और बहुत ही क्रुद्ध होकर बोले—[illegible] किया, [illegible] ले चले। हम पुलिसमें रपट करेगा।

जुलूस रुक गया। खोलवालेने कहा—कौन सेठजी! हम आपके लिए आया, खाट खाली है, आप चढ़कर बैठ लें!

मुनीमजीने पीछे देखा। चार आदमी एक खाली खाट उठाये हुए थे। उनकी आँखें जैसे बन्द थीं और पैर डगमगा रहे थे।

मुनीमजी सबको लेकर 'क्षेत्र व पाठशाला' के सामने आये और उनसे कहा—थोड़ा देर हरिभजन करो।

खोल और मजीरा बजने लगा। उन्हें बजानेवाले कीर्तन करने लगे। खाटवाले खाट रखकर खड़े हो गये।

मुनीमने उनकी ओर देखकर पूछा—ये लोग कीर्तन नहीं जानते?

खोलवाला बोला—ये लोग सब पण्डित आदमी हैं। (एककी ओर संकेतकर) यह शास्त्री हरि चक्रवर्ती—यह बहुत बड़ा तांत्रिक है। 'मड़ा' जगानेका मन्त्रका सब मंतर जानता है। पहले कीर्तन करता था। अब सिर्फ़—

मुनीमजीने कहा—फिर न-जाने कब सौभाग्य होगा। ऐसा गुणी लोगको कीर्तन करने बोलो।

उन लोगोंने कीर्तन शुरू किया। महल्लेवालोंने फिर खिड़कियां खोलीं पर मुनीमजीको देखते ही बन्द कर लीं। इस बार क्षेत्र व पाठशालाका दरवाजा भी खुला।

मुनीमजीने गरजकर कहा—हम तीन घंटा चिल्लाकर गये किसीने दरवाजा नहीं खोला।

विद्यार्थियोंने कहा—हम लोग मोहमुद्गरका पाठ कर रहे थे।

[illegible]—[illegible] करो। इन लोगोंको देखते हो? ये लोग बड़े-बड़े [illegible] पण्डित हैं। बहुत कुलीन हैं। तुम लोगोंपर कृपा करनेके लिए [illegible] किया है।

[illegible] था कि अवतार नहीं उतारें। उन्होंने विरोध किया।

मुनीमजीने आँखें तरेरकर कहा—तो तुम उठाओ। जानते हो, ऐसे पवित्र आदमी किस कठिनतासे आये हैं। अपनी बुद्धिके साथ पूरे ४५) खर्च किये हैं।

एक विद्यार्थी—आप हमारा सामान दे दीजिए। हम यहाँ एक क्षण न रहेंगे।

मुनीमजी—सबेरे पुलिसके सामने सब सामान देंगे। तबतक ठहरो।

इसके बाद उन्होंने कीर्तन बन्द कराया और खाट उठानेवालोंको भीतर ले गये।

खाटवाले रामसुन्दरको उठा लाये, उसे खाटपर पटककर उसे सीधा किया और तब यह मंतव्य प्रकाशित किया कि 'हिन्दुस्तानी' अशिष्ट होते हैं, उनकी अशिष्टता ही उनके साथ जाती है क्योंकि ये शिष्टता-पूर्वक मरना भी नहीं जानते।

ढोल और मजीरेवाला, दोनों आगे हुए, शेष चारोंने खाट उठायी और 'हरिबोल' के साथ वे आगे बढ़े। [illegible] विद्यार्थियोंको शीघ्र [illegible] छोड़ा और [illegible] आगे ले गये।

रास्ता धीरे-धीरे पार हो रहा था क्योंकि गलीमें अंधकार था—[illegible] यहाँ शायद उस दिन मेहमान आ गये थे। [illegible] फाड़-फाड़कर चल रहे थे कि धर्म-स्वरूप [illegible] पड़ जाय, नहीं तो इस अधर्मका फल तो [illegible]। [illegible] कानोंमें कीर्तनके पद भी पड़ रहे थे। [illegible] —हे प्रभो! [illegible] कि [illegible] है। फिर भी [illegible] के मारे [illegible] है। [illegible] दूर करेंगे!

उन यमदूतोंने तेरे पितामह और प्रपितामहका अभिमान दूर किया है, इत्यादि ।

आधा रास्ता पार कर जुलूस खड़ा हो गया । खाटवालोंने खाट उतार दी । ढोलवालेने कहा—बड़ी मेहनत हुआ, जरा गाँजा-टाँजा निकालो ।

मुनीमजी बीस कदम आगे बढ़ गये थे । कीर्तन न सुनकर उन्होंने पीछे देखा और लौट पड़े । उन्होंने बिगड़कर कहा—अँधेरेमें तो चले आ रहे थे । रोशनी मिलते ही खड़े हो गये ।

भाकोहरि चक्रवर्तीने कहा—यह कंधा दरद होने लगा । जरा सुस्ता-येगा नहीं ।

मुनीमजीका ध्यान खाटकी ओर गया और वे चीखकर बोले—मुर्दा कहाँ गया ?

सबने खाटकी ओर देखा । वह खाली थी ।

मुनीमजी—कहता है कंधा दरद हो गया । मुर्दा कहाँ है ?

सब एक दूसरेका मुँह देखने लगे ।

मुनीमजी—साले मद पीकर चलते हैं । कहीं रास्तेमें गिरा दिया होगा ।

शिबूने कहा—सदा मद खाता है, कभी मुर्दा नहीं गिरा ।

मुनीमजी—तुम्हारा तांत्रिक साधन किया होगा ।

भाकोहरि—हम कई बरससे जान लिया है कि मुर्दासे बेशी काम जीतासे होता है ।

ढोलवालेने अपने साथियोंसे पूछा—मुर्दाको लाकर खाटपर रखे था कि नहीं ?

भाकोहरि चौंक निश्चित जवाब न दे सके । मुनीमजी गरजे—पाजी ! हम मद नरदा उठाया ।

अंतमें यह निश्चित हुआ कि सब लोग क्षेत्रतक वापस चलें, मुर्दा कहीं पड़ा ही होगा। इतनी देरमें कुत्ते भी साफ नहीं कर सकते।

थाकोहरिने कहा—मुर्दा अलबत्त मिलेगा, अगर वह पलायन नहीं किया है।

मुनीमजी—मुर्दा भी कहीं भागता है!

थाकोहरिने नजीर देकर बतलाना शुरू कि मुर्दे पलायन करते हैं और इस तरह कि जीता आदमी उन्हें पकड़ नहीं सकता।

मुनीमजी उन्हें लेकर चले। सब लोग गलीमें फैलकर चले कि रास्तेमें मुर्देकी सूचना पैर तुरत दे दें।

आधा रास्ता आनेपर इन लोगोंने देखा कि गलीके दोनों ओरके चबूतरोंपर २५-३० आदमी बैठे हैं और २-३ लालटेनें जल रही हैं। मुनीमजीने कहा—उद्योगीकी सहायता भगवान् करता है। इन्हींसे एक लालटेन ले लो।

यह कहकर उद्योगकी पराकाष्ठा प्रदर्शित करने और भगवान्के अनुग्रहका उपयोग करनेके लिए मुनीमजी चटपट आगे बढ़े। बाकी लोग वहीं बैठ गये और चिलममें गाँजा भरने लगे। उनका विचार यह था कि लालटेन आ जाय तो फिर सुखसे खोज की जाय।

मुनीमजीने उन लोगोंके पास आते ही कहा—बाबूजी! जरा लालटेन दे दीजिए। हमारा मुर्दा खो गया है।

यह सुनते ही उस दलका एक व्यक्ति चबूतरेसे उतरकर इनके पास आया और पूछा—मुर्दा खो गया है?

मुनीमजी—हाँ, रास्तेमें कहीं गिर गया है। बंगाली लोग मुर्देको बाँधते हैं नहीं। शराब पीकर मुर्दा उठाते हैं। कहीं गिरा दिया।

वह व्यक्ति चबूतरेके कोनेकी ओर मुनीमजीको ले गया और पूछा—यही है ?

मुनीमजीने ध्यानसे देखा। रामसुन्दरने पलायन नहीं किया था। वह सोया था।

मुनीमजीने कहा—हाँ बाबूसाहब। यही है। मिल गया।

—बंगाली कहाँ हैं ?

अब मुनीमजीने पीछे घूमकर देखा और बोले—साले लोग वहाँ गाँजा पी रहे हैं।

—उनको बुला लाओ। उठा ले आओ।

मुनीमजी बहुत कठिनतासे उन्हें उठाकर लाये। शाकाहारिने कहा—आप भाग्यमान हैं। पलायन करके यही मुर्दा मिला है।

सब लोग आकर खड़े हुए। चबूतरेवाले दलने इन्हें घेर लिया।

उनमेंसे एक आदमीने पूछा—यह मुर्दा तुम्हारा बाप है कि भाई ?

—हमारा कोई नहीं। बिदारथी है।

—सभी ऐसे ले जा रहे थे।

दूसरेने कहा—मैं दुकानमें कबुरांबा करके उठा और बाहर निकला तो देखा कि कोई सोया है। कितना जगाया, हिलाया-डुलाया, पर न्यों उठे। लालटेन लाकर देखा तो बाप रे बाप ! जाड़ेमें नहाना पड़ा।

तीसरा—मुझे तो [illegible] और लगा जैसे कोई बच्चा खेल रहा हो।

चौथा—[illegible] ! हाँ भाइयो !

और उन लोगोंने मुनीमजी तथा [illegible] एकाएक आक्रमण किया और थप्पड़, घूँसे तथा पद-प्रहार करने लगे।

१० मिनट बाद प्रहार बन्द हुआ और [illegible] लगे। तब चबूतरेवाले मुखियाने मुर्दा उठानेकी आज्ञा दी।

मुर्दा उठाकर यह दल आगे बढ़ा । खोल और मजीरा कभी-कभी बजता था, कीर्त्तन बन्द था ।

रामसुन्दरकी चिता जल रही थी । रामसुन्दरके शरीरका कुछ ही भाग अवशिष्ट था । एक ओर मुनीमजी और बड़ा बामुन बैठे थे ।

श्यामहरिने कहा—शराब नहीं पिया होता तो आज मर जाता ।

दूसरेने कहा—कैसा तान-तानकर मारता था । गेहूँका रोटी खाता है ।

तीसरा—जब हिन्दुस्तानीको उठाया तब बिपत्ति पड़ा ।

चौथा—मुर्दाका सामने मारपीट करता था ! कितना खराब बात है । बंगालमें ऐसा कभी नहीं होता ।

शिबू—सेठजी, दो-दो टाका और देने होगा । तीन दिन दवा खाने होगा ।

सेठजीने क्रुद्ध होकर कहा—तुम तो लात खानेका काम किया था, लात खाया । हमारा मुफ्तमें इज्जत चला गया । और दो-दो टाका लेगा । शरम नहीं आता है ?

तभी पुलिसके चार सिपाहियोंने वहाँ आकर पूछा—सेठ चिथरूमल कौन है ?

सेठजीने घबराकर खड़े होकर कहा—राम रामसा'ब ! हम हैं ।

—रामसुन्दरकी चिता कौन है ?

—यह है सा'ब !

दो सिपाहियोंने सेठजीको पकड़ा,—बाकी दोने सीटी बजाई । तभी और ५-७ सिपाही और ८-१० मल्लाह गगरे लिये आये ।

मुर्दा जलानेवालोंने कहा—यह क्या है ?

गगरेवाले गगरे गंगाजीसे भर-भरकर चिता बुझाने लगे ।

सेठजीने घबराकर पूछा——क्या, बात क्या है ?

एक सिपाहीने चपत मारकर कहा——हरामी, विद्यार्थियोंको जहर देकर उनका माल हजम करनेका पेशा करता है ?

सेठजीने रोकर कहा——कौन बोला !

सिपाहीने कहा——तुम्हारे विद्यार्थी। वे सब हवालातमें हैं।

बंगाली हिंदी भले ही न जाने, उर्दूके कुछ शब्द अवश्य जानता है; उनमेंसे एक है——जहर।

मड़ा-पेला बामुनोंने सिपाहियोंकी प्रारम्भसे सब क्रिया देखी, 'जहर' सुना और वे धीरे-धीरे पीछे हटकर, अँधेरेमें हो गये और तब नीचे उतर कर घाट-ही-घाट, साँस रोककर, केदार घाटकी ओर भाग चले।

पौ फटनेमें जरा-सी देर थी।
